अगस्त–अक्टूबर 2024

ISSN: 2231-6647
Peer-reviewed
त्रैमासिक पत्रिका

जलवायु

प्रकृति, विज्ञान एवं समसामयिक विमर्श की अभिव्यक्ति

₹50

सम्पादक
डॉ अजय गौतम

जलवायु के सम्मानित आजीवन सदस्य

- श्री अम्बिका दूबे
- श्री जयन्त कुमार
- श्री शिव प्रसाद पाण्डेय
- श्री प्रलाभ चन्द यादव
- श्री रमेश चन्द्र मौर्य
- अहमद नदीम
- श्री अनुभव श्रीवास्तव
- नूर आलम
- श्री चन्द्रशेखर आजाद़
- श्री गौरव श्रीवास्तव
- डॉ रणधीर नायक
- डॉ हरिशंकर राय
- श्री अरुण कुमार मिश्रा
- इमरान अहमद खान
- डॉ मनोज कुमार सिंह
- तुन्नू हुसैन
- श्री सतीश चन्द चौहान
- डॉ अमित कुमार वर्मा
- श्री विनीत सिंह
- डॉ शैलेन्द्र उपाध्याय
- डॉ शीबा
- श्रीमती रूबी सिंह
- रेहान असद खान
- डॉ राजेश कुमार श्रीवास्तव
- डॉ अम्बरीश श्रीवास्तव
- मिर्जा शाने आलम बेग
- श्री सुरेन्द्र लाल श्रीवास्तव
- श्री मान सिंह
- श्री आकाश कुमार साहू
- श्री दयाशंकर तिवारी
- श्री प्रदीप कुमार सिंह
- श्री राजेश कुमार राय
- श्रीमती नीलू राय
- श्री रविन्द्र किशोर यादव
- श्री चन्द्रप्रकाश राय
- डॉ इन्दु कन्नौजिया
- श्री राजेन्द्र मिश्र
- डॉ मो. अरशद
- श्रीमती पूजा राय
- श्री आर.के. मिश्र
- श्री अशोक कुमार चतुर्वेदी
- श्री विजय कुमार सिंह
- श्री दिनेश कुमार
- सायमा अहमद
- डॉ समीर कुमार पाण्डेय
- डॉ अभयदीप गौतम
- श्री प्रवीण कुमार पाण्डेय
- श्री चांदगी यादव

श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह

वेयर हाउस मैनेजर
ग्राम : खानपुर भगत पट्टी, आजमगढ़

श्री अतुल सिंह

सहायक अध्यापक
आजमगढ़

जलवायु

वर्ष : 14, अंक : 1, अगस्त–अक्टूबर, 2024

■

संरक्षक
पंकज गौतम

■

प्रधान संपादक
अरूणकांत पाठक
पवन गौतम

■

संपादक
डॉ अजय गौतम

■

उप संपादक
वन्दना सिंह

■

सलाहकार संपादक
डॉ कृष्ण कुमार मिश्र
डॉ मोहम्मद खालिद
डॉ परमानंद मिश्र
डॉ एस. जेड. अली
प्रवीण कुमार पांडेय
डॉ मो. फैज़ान

■

सह संपादक
बरुण पांडेय
संतोष कुमार सिंह
अंजली सिंह
स्मिता पांडेय

■

प्रबंध संपादक
विशाल तिवारी
विश्वजीत पाठक
उमेश विश्वकर्मा
सुधांशु मोहन पांडेय
चंदन यादव

■

कॉपी संपादक
मो० असदुर्रहमान
सत्यम प्रजापति
धर्मेन्द्र विश्व

■

सेटिंग एवं आवरण सज्जा
कशिश अंगुरिया

■

कम्पोजिंग
आशीष कुमार दूबे

■

संपादकीय संपर्क
मु० हीरापट्टी, आजमगढ़ (यू.पी.) –276001
मो0 9415063341, 7505573555
editor.jalvayu@gmail.com

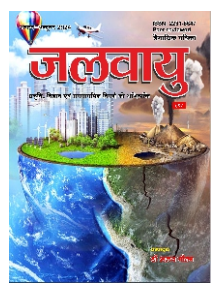

सदस्यता विवरण
व्हाट्सऐप : 9415063341 (Phone Pe, Paytm)
मूल्य : ₹50
वार्षिक : ₹200 (व्यक्तिगत), ₹300 (संस्थाओं के लिए)
रजिस्टर्ड : ₹400
आजीवन सदस्यता : ₹3000
सभी प्रकार के भुगतान मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'जलवायु' के नाम से किये जाएं।

Follow us on : जलवायु पत्रिका

सभी फोटो गूगल इमेज से लिये गए हैं।

सभी प्रकार के विवाद आजमगढ़ न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संपादक जिम्मेदार हैं।

अनुक्रम

संवाद

- रचनात्मक समाज की उम्मीद में /डॉ अजय गौतम 5

प्रकृति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी

- अमरूद के औषधीय गुण/डॉ कृष्णा नंद पाण्डेय 7
- जलवायु परिवर्तन तय करेगा धरती पर सभ्यता का भविष्य/डॉ कृष्ण कुमार मिश्र.....15
- सांप और पर्यावरण : महत्व, भूमिका एवं संरक्षण/हरेन्द्र श्रीवास्तव.....20
- भारत और नेपाल का पर्यावरणीय पर्यवेक्षण/संतोष बंसल.....25
- क्या रहने लायक नहीं रहे महानगर/शिवचरण चौहान.....30
- लंदन की सड़कों में नहीं सुनाई देती गाड़ियों के हॉर्न की आवाज/डॉ संजय सिंह.....33

सृजन

- ललन चतुर्वेदी की कविताएं.....37
- पवन गौतम की कविताएं.....39
- वंदना मिश्रा की कविताएं.....40
- चित्रा पंवार की कविताएं.....44
- लघुकथाः कंक्रीट वन/कनक किशोर.....45

भाषा

- हिन्दी काव्येतर साहित्य में पर्यावरण चिंतन/डॉ जया आनंद.....46
- आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य में पर्यावरण चेतना/डॉ मुहम्मद अरशद.....50

मुद्दा

- भारतीय राजनीति का नया पर्यावरण/अरुणकांत पाठक.....53
- पर्यावरण मुद्दा क्यों नहीं/डॉ मो. खालिद.....57

शिक्षा

- माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियां/संतोष कुमार मिश्र.....60
- सामाजिक शिक्षा के संदर्भ में नई शिक्षा नीति/इन्द्रसेन सिंह.....62

नदी

- विलुप्त होती नदियां : सतत जीवनशैली से ही बचेंगी/प्रज्ञा पाण्डेय.....64
- मैं सिलनी नदी हूं/सत्यम प्रजापति.....66

समीक्षा

- नैतिक जिम्मेदारियों का बोध कराती मार्मिक बाल कविताएं/राजाराम सिंह.....68

युवा स्वर

- धर्मेन्द्र विश्व की कविताएं.....72

आखिरी पन्ना

- प्रतिरोध की धरती बनाम विकास का लॉलीपाप/विशाल तिवारी.....73

संवाद

रचनात्मक समाज की उम्मीद में

⟶ हमारा वर्तमान विसंगतियों से गुजर रहा है। एक तरफ जहां बेरोजगारी, महंगाई, राजनीतिक अस्थिरता, बदहाल शिक्षा, व्यवस्था और स्वास्थ्य संकट मुंह बाये खड़ा है वहीं दूसरी तरफ प्राकृतिक संसाधनों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। इस दौर में साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सुधार के आन्दोलन लगभग खत्म हो चुके हैं, वहीं जाति और धर्म के मुद्दे 21वीं सदी में भी अपने फन फैलाये खड़े हैं। ऐसे समय में मनुष्यता का भाव लाने वाली वैज्ञानिक चेतना उत्पन्न करने की बजाय अन्धविश्वास और रूढ़ियों में जकड़ा समाज मनुष्य को बहुत कमजोर कर रहा है। जब समाज में वैज्ञानिक चेतना पनाह मांग रही हो और अंधविश्वास दिनोदिन फलता–फूलता जा रहा हो, तब यह जरूरी हो जाता है कि एक बेहतर समाज बनाने के लिए निर्माणकारी शक्तियां आगे आयें। इन निर्माणकारी शक्तियों के लिए वर्ष 2024 का आम चुनाव जहां एक तरफ उम्मीदें लेकर आया है कि मजबूत विपक्ष लोकतंत्र में असहमति के स्वर को मजबूत करेगा और यही स्वर बहस की गुंजाइश को जगह देगा। परंतु सिर्फ़ विपक्ष से यह उम्मीद करना कि वह लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने तथा जनहित के मुद्दों को संसद में उठाने के लिए प्रयत्न करेगा, बेमानी सा लगता है। ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि यह कार्य सामाजिक संस्थाओं का है परंतु अफसोस इस बात का है कि अब बेहतर समाज का निर्माण करने वाली संस्थाएं खत्म हो चुकी हैं। जिस समाज में सामाजिक मुद्दों पर विमर्श नहीं हो रहा, जहां मानव ही मानव के लिए खतरा बन चुका हो। उस समाज को बेहतर कैसे बनाया जाए यह सोचनीय मुद्दा है।

जिस देश में लगभग 10 करोड से ऊपर स्नातक बेरोजगार हों और परीक्षा की शुचिता के नाम पर पूरे देश में केवल खेल खेला जा रहा हो, सरकारी नौकरियों के नाम पर केवल चुनावी आश्वासन दिए जा रहे हों, वहां सामाजिक–राजनीतिक जागरण कैसे होगा। जब प्रशासनिक तानाशाही नये रूप में नजर आ रही हो तब देश के तरक्कीपसंद जनमानस के लिए यह सवाल खड़ा होता है कि वह न्याय पाने के लिए किस द्वार पर दस्तक लगाए जब जनता की रक्षा करने वाले ही भक्षक के तौर पर नज़र आ रहे हैं।

एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए समाज के जिन प्रगतिशील लोगों ने बिगुल फूंका था वे भी आज नेपथ्य में हैं। उनके द्वारा शुरु किये गये अभियान आाज लगभग समाप्त हो गये हैं। संस्थाएं आज भ्रष्टाचार की अड्डा बनी हुई हैं। इन संस्थानों में योग्यता को तरजीह न देकर दोयम दर्जे की योग्यता के लोगों का चयन किया जा रहा है और निर्माणकारी शक्तियां इन सभी मसलों पर चुप हैं। तब यह जिम्मेदारी और महत्वपूर्ण हो जाती है कि आखिर ईमानदार एवं पारदर्शी व्यवस्था कौन बनाएगा। यह सच कहने का खतरा कौन मोल लेगा, जब सच को झूठ के तलवार से काटा जा रहा है।

देश की संसद और विधान सभा में जब आपराधिक कृत्य के लोग चुनकर भेजे जा रहे हैं तब एक जागरूक मनुष्य के लिए यह चुनौतीपूर्ण बात है कि आखिर एक बेहतर और स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज कैसे बनेगा। 21वीं सदी में दुनिया के कई देशों में पर्यावरण संकटग्रस्त है और यह संकट भारत जैसी बड़ी जनसंख्या वाले देशों में और भी बड़ा है जब नदियां, पहाड़, जंगल मानवजनित गतिविधियों की वजह से खतरे में आ चुके हैं। हमारी जैवविविधता जो कि दुनिया में सबसे बेहतर स्थिति में थी आज वह भी संकटग्रस्त है। यह हमारी गतिविधियों का ही नतीजा है कि हमने विकास को सही अर्थों में जानने की कोशिश नहीं की।

इन परिस्थितियों में यह कहना कि हम 2047 तक विकसित देशों की श्रेणी में आ जायेगें, असम्भव सा लगता है। जब आंकड़ों में आर्थिक विकास की दर गिनाई जाती है और यह कहा जाता है कि देश में सकल घरेलू उत्पाद यानी जी.डी.पी. में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। तो वहीं वास्तविकता यह है कि देश में 80 करोड़ लोगों को राशन दिया जा रहा है। तब यह आर्थिक विकास की चकाचौंध हमें विचलित कर देती है। यह आर्थिक विकास कागजी आंकड़ों पर ही रहे तो ठीक है क्योंकि जमीन पर यह आंकड़ा मानव के विकास से मेल नहीं खाता है। वर्तमान समय ऐसा है जब लोग पत्र–पत्रिकाओं, किताबों से मुंह मोड़ रहें हैं। जब किसी की कोई विचारधारा ही नहीं है, लोग विचारधारा का चोला पहनकर अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक चले जा रहे हैं ता ऐसे विचारहीन लोगों से उम्मीद रखना ही बेमानी है।

ऐसा क्यों है कि जब हमें सपने दिखाये जाते हैं, नौजवानों से रोजगार देने से वादा किया जाता हो, खाते में पैसे भेजने की बात कहीं जाती है तो वहीं दूसरी तरफ जाति जनगणना के प्रश्न को राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया जाता है। संविधान और आरक्षण की बातें कहकर देश के आम नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसे ज्वलंत मुद्दों से ध्यान हटाने की कोशिश की जाती है। जिस समाज की बुनियाद में कबीर, गुरुनानक, गांधी, अम्बेडकर, लोहिया, भगत सिंह

हों उस समाज के युवा आज नेतृत्वहीन तथा ज्ञानविहीन होने के रास्ते पर चल चुके हैं।

किसी समाज को बनाने में साहित्य, विज्ञान, संस्कृति और तर्क आधारित विचारों की बड़ी भूमिका होती है। इन सभी के सामंजस्य से एक बेहतर समाज बनने की उम्मीद बनी रहती है। परंतु विगत तीन दशकों में भारतीय समाज में जिस तरह के मुद्दे उभरकर सामने आये हैं वह समाज को जोड़ने की बजाय सामाजिक विघटन की जमीन तैयार कर रहा है। जब सभा में मंच से कहे गए अवैज्ञानिक एवं अतार्किक शब्दों पर जनता ताली बजाने लगे, तब यह समझ जाना चाहिए कि समाज को कैसा बनाने की कोशिश की जा रही है। इसलिए सभी चेतना संपन्न लोगों को एक साथ मिलकर कार्य करने की जरुरत है। समाज के सभी पक्षों में एक स्वस्थ बहस की परंपरा का विकास करना होगा। साहित्य, राजनीति और विज्ञान के विशेषज्ञों से एक साथ विमर्श स्थापित करना होगा। यह विमर्श सिर्फ साहित्य ही नहीं बल्कि साहित्येत्तर विषयों जैसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, शिक्षा, राजनीति, स्वास्थ्य, रोजगार पर करना होगा। हमें हिंसात्मक होते जा रहे समाज को अहिंसात्मक बनाए रखने के लिए कुछ अलग प्रयास करना होगा। पिछले कुछ दशकों में जो ज्ञान पर हमला शुरु हुआ है वह हमारी ज्ञान परंपरा को खत्म करने पर तुला हुआ है। इसे समय रहते पहचानना होगा। इसलिए एक बेहतर और रचनात्मक समाज बनाने की पहल सभी तरक्कीपसंद लोगों को मिलकर करनी होगी। हम सभी जीवन में रचनात्मक बनें क्योंकि बिना रचनात्मक हुए बेहतर समाज नहीं बन सकता है।

बेहतर समाज बनने की उम्मीद को साहिर लुधियानवी के शब्दों में कहे तो

वो सुबह कभी तो आएगी
जिस सुबह की ख़ातिर जुग–जुग से हम सब मर–मर के जीते हैं
जिस सुबह के अमृत की धुन में हम ज़हर के प्याले पीते हैं
वो सुबह न आए आज मगर, वो सुबह कभी तो आएगी।

अंत में 'जलवायु' के नये अंक का प्रकाशन कई वर्षों के बाद संभव हो पाया है। एक समय ऐसा भी आया जब पत्रिका के बंद होने की संभावना बढ़ गई थी लेकिन पत्रिका के पाठकों, शुभचिंतकों, आजीवन सदस्यों ने पत्रिका की मांग करके हमें पुनः प्रकाशन के लिए बाध्य किया। आप सभी की आलोचनात्मक टिप्पणियों के इंतजार में.....

□ डॉ. अजय गौतम

◆◆◆

अमरूद के औषधीय गुण

-डॉ० कृष्णा नन्द पाण्डेय

अमरूद, जिसका वानस्पतिक नाम सीडिएम गुवाजावा है, एक उष्णकटिबंधीय और उपउष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाया जाने वाला फल है, जिसका आहार और पारंपरिक चिकित्सा दोनों में भरपूर उपयोग किया जाता है। मायरटेसी कुल के अन्तर्गत अमरूद की विश्वभर में लगभग 150 प्रजातियां है। दिफार्मा इनोवेशन जर्नल के वर्ष 2022 के 11 (6) अंक में प्रकाशित शोध पत्र के अनुसार विश्व में लगभग पांच लाख मीट्रिक टन अमरूद का उत्पादन होता है। भारत के अलावा दक्षिण अमेरिका के ब्राजील, कोलम्बिया और मैक्सिकों जैसे देशों में अमरूद का सर्वाधिक उत्पादन होता है। अमरूद में प्रचुर मात्रा में मौजूद प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट्स, विटामिन्स और खनिजों जैसे पोषक तत्व मानव शरीर के लिए न केवल स्वास्थ्यवर्धक होते हैं, बल्कि रोगों से सुरक्षा भी प्रदान करते हैं। जहां अमरूद के मौसम में सुलभ ताजे फलों का सेवन किया जाता है, वहीं इसे प्रसंस्कृत (प्रोसेस्ड) करके इसे गूदा यानि पल्प, पेय, जूस, मदिरा, और डिहाईड्रेटेड स्लाईस के रूप में उपयोग किया जाता है। बाजार में अमरूद के उत्पादों को अधिक अवधि तक सुरक्षित रखने के लिए इसके प्रसंस्कृत रूप में जैली, जूस, आईसक्रीम, दही और नेक्टर जैसे रूप में सुरक्षित रखा जाता है। अमरूद में एन्टीआक्सीडेंट्स, एन्टीइन्फ्लेमेटरी यानी सूजनरोधी, एंटीवायरल, एंटीपैरासाईटिक (परजीवीरोधी), एंटीबैक्टीरियल (बैक्टीरियारोधी), घाव भरने तथा कैंसररोधी जैसे अनेक गुण भी पाये जाते हैं।

प्रतिवर्ष 45 मीट्रिक टन उत्पादन के साथ विश्व में अमरूद उत्पादन के साथ भारत दूसरा स्थान रखता हैं। सभी फलों में अमरूद की व्यापक कृषि की जाती है। एक औसत अमरूद के पेड़ से प्रतिवर्ष 100 से 300 फल मिलते हैं। एक विशेष जलवायु आधारित फल अमरूद का फल शीघ्र पक जाता है, जिसके कारण इसे कमरे के तापमान पर दो या तीन दिन से अधिक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। अमरूद की किस्मों के आधार पर इसके फल के आकार और स्वाद में भिन्नता होती है। अमरूद का औसत

भार 150 से 250 ग्राम के बीच और आकार 3 से 10 सेंटीमीटर व्यास और 4 से 12 सेंटीमीटर लम्बा, गोल अथवा अण्डाकार रूप में होता है। भारत में अमरूद की खेती 17वीं शताब्दी से की जा रही है। प्रयागराज में इलाहाबादी सफेदा, लखनऊ 49, चित्तीदार, बीजरहित, नागपुर का बीजरहित जैसी प्रमुख किस्मों के साथ–साथ बेंगलूरू धरवाड़, हाशी, अल्का अमूल्य, हरीजा जैसी किस्मों का भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त उत्पादन किया जाता है। अमरूद के मौसम में यह फल पर्याप्त मात्रा में और कम दाम पर उपलब्ध रहता है। भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र–प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, असम, उडीसा, केरल, राजस्थान और कई अन्य राज्यों में अमरूद फल की व्यापक खेती की जाती हैं।

अमरूद के पोषक तत्व

अमरूद प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेटस, विटामिन्स, खनिजों तथा अन्य मेजर एवं माईक्रोन्यूट्रिएंटस का एक उत्कृष्ट स्वास्थ्यवर्धक स्रोत है। अमरूद में प्रचुर मात्रा में मौजूद आहारीय रेशे, विटामिन ए एवं सी, फोलिक एसिड, के साथ–साथ पोटैशियम, कॉपर और मैंगनीज जैसे खनिज इस फल को स्वास्थ्यवर्धक बनाते हैं। प्रति 100 ग्राम अमरूद के पोषक तत्वों की जानकारी निम्नलिखित सारिणी में प्रस्तुत है।

अमरूद के पेड़ की बहुत पतली छाल पर हरे रंग के धब्बे पाये जाते हैं। उसमें पर्याप्त मात्रा में एंटीमाइक्रोबियल और एंटीबैक्टीरियल यौगिकों की उपस्थिति पाई गयी है। अमरूद के तने के एथेनॉल युक्त सत्वों (एक्सट्रैक्ट्स) में उच्च मधुमेहरोधी (एंटीडायबिटिक) क्रियाशीलता देखी गयी है। अमरूद के फल में प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स और फाइटोकेमिकल्स पाये जाते हैं जिनमे वाष्पशील तेल यानी सगंध तेल (एसेंशियल ऑयल्स), पॉलिसैकेराइड्स, खनिज, विटामिन, एंजाइम, ट्राइटीर्पीनाईड एसिड अल्केलॉइड्स, स्टेरॉयड्स, ग्लाइकोसाइड्स, टैनिंस, फ्लैवोनॉइड्स और सैपोनिंस जैसे रासायनिक तत्वों की उपस्थिति होती है। अमरूद में पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी और विटामिन ए पाया जाता है और यह फल पेक्टिन नामक आहारीय रेशे का एक महत्वपूर्ण स्रोत होता है। इसमें उच्च मात्रा में लैवोनॉयड्स, फ्रक्टोज, शर्करा और कैरोटिनॉयड्स भी पाये जाते हैं।

प्रति 100 ग्राम अमरूद में मिलने वाले पोषक तत्व

अमरूद के पोषक संघटक मैक्रोन्यूट्रिएंट्स (बृहत पोषक तत्व)

क्र सं	संघटक	मात्रा
1.	कैलोरी	77-86 किलो कैलोरी
2.	नमी	80 - 86 ग्रा.
3.	कच्चा रेशा	0.9 -1 ग्रा.
4.	प्रोटीन	0.1 - 2.55 ग्रा.
5.	वसा यानी फैट	0.43 - 0.7 ग्रा.
6.	कार्बोहाइड्रेट्स	9.1 - 17.0 ग्रा.
7.	कुल शर्करा	8.92 ग्रा.

माइक्रोन्यूट्रिएंट्स (सूक्ष्म पोषक तत्व)

क्र सं	संघटक	मात्रा
1.	ऑयरन यानी लौह	0.26 मि. ग्रा.
2.	मैग्नीशियम	20 मि. ग्रा.
3.	मैंगनीज़	0.15 मि. ग्रा.
4.	फास्फोरस	40 मि. ग्रा.
5.	पोटैशियम	417 मि. ग्रा.
6.	सोडियम	2 मि. ग्रा.
7.	जिंक	0.23 मि. ग्रा.
8.	लाइकोपीन	5204 माइक्रोग्राम

अमरूद के पोषक संघटक मैक्रोन्यूट्रिएंट्स (बृहत पोषक तत्व)

क्र सं	संघटक	मात्रा
1.	एस्कॉर्बिक एसिड	56-500 मि. ग्रा.
2.	थायामीन	0.067 मि. ग्रा.
3.	राइबोफ्लेविन	0.04 मि. ग्रा.
4.	नियासिन	1.084 मि. ग्रा.
5.	विटामिन B6	0.11 मि. ग्रा.

अमरूद में विटामिन ए, सी, आयरन, फॉस्फोरस और कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसमें संतरे की तुलना में विटामिन सी की मात्रा अधिक होती है। इसके फल में सैपोनिन, ओलिनोलिक एसिड, ग्वाइजावैरिन, क्वेरसेटिंग्स और फ्लैवोनॉयड्स भी पाये जाते है। अमरूद में उपस्थित एस्कार्बिक एसिड और सिट्रिक एसिड उत्परिवर्तनशीलता यानी म्यूटाजेनिक प्रक्रिया को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अमरूद के छिलके में एस्कार्बिक एसिड की पर्याप्त मात्रा होती है। परन्तु गर्मी के प्रभाव में इसके फल नष्ट होने लगते हैं। अमरूद की मोहक सुगन्ध उसमें मौजूद कार्बोनिल यौगिकों के कारण होती है। अमरूद के फल में मौजूद टर्पीस, कैरियोफाइलीन ऑक्साइड की प्रचुर उपस्थिति होती हैं।

अमरूद की पत्तियों में अल्फा–पिनीन, बीटा–पिनीन, लिमोनीन, मेंथॉल, टर्पीनिल एसीटेट, कैरियोफिलिन और ओलीनोलिक एसिड की उपस्थिति होती है। वहीं अमरूद के पेड़ की छाल में टैनिन, पॉलीफिनॉल्स, रेजिन और कैल्शियम ऑक्जलेट के क्रिस्टल पाये जाते है। अमरूद की जड़ों में टैनिन, गैलिकएसिड और स्टीरॉल्स पाये जाते हैं।

अमरूद के औषधीय गुण

मैक्सिको, अफ्रीका, एशिया और मध्य अमेरिका के क्षेत्रों सहित विश्व के अनेक भागों में अमरूद फल का सेवन एक आहार के रूप में ही नहीं बल्कि औषधीय गुणों के लिए भी किया जाता है। हमारे पारंपरिक ग्रंथों में भी इसका वर्णन मिलता है। विश्व के अनेक भागों में इसे डायरिया, बुखार, पेचिश, आंतों में सूजन, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, दांत में कैरीज, दर्द और घाव जैसी स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज के रूप में किया जाता है। मैक्सिको, अफ्रीका, एशिया और मध्य अमेरिका जैसे देशों में औषधीय पादपों के उपयोग का एक लंबा इतिहास रहा है, उसी के अंतर्गत अमरूद के सेवन की भी जानकारी शामिल है। इसके औषधीय गुणों के आधार पर ही अमरूद को आहार के रूप में और कई खाद्य पदार्थो को पकाने में भी प्रयोग किया जाता है। अमरूद में प्रचुर मात्रा में कार्बनिक और अकार्बनिक यौगिक (कंपाउंड्स) पाए जाते हैं जिनमें द्वितीयक मेटाबॉलिट्स जैसे–एंटीऑक्सीडेंट, पॉलीफिनॉल्स, एंटीवायरल कंपाउंड्स और एंटीइन्फ्लैमेटरी (सूजनरोधी) कंपाउंड्स शामिल है। अमरूद में कैंसररोधी गुणों के साथ कई अन्य कंपाउंड्स पाए जाते हैं। इसमें बड़ी संख्या में विटामिन्स और

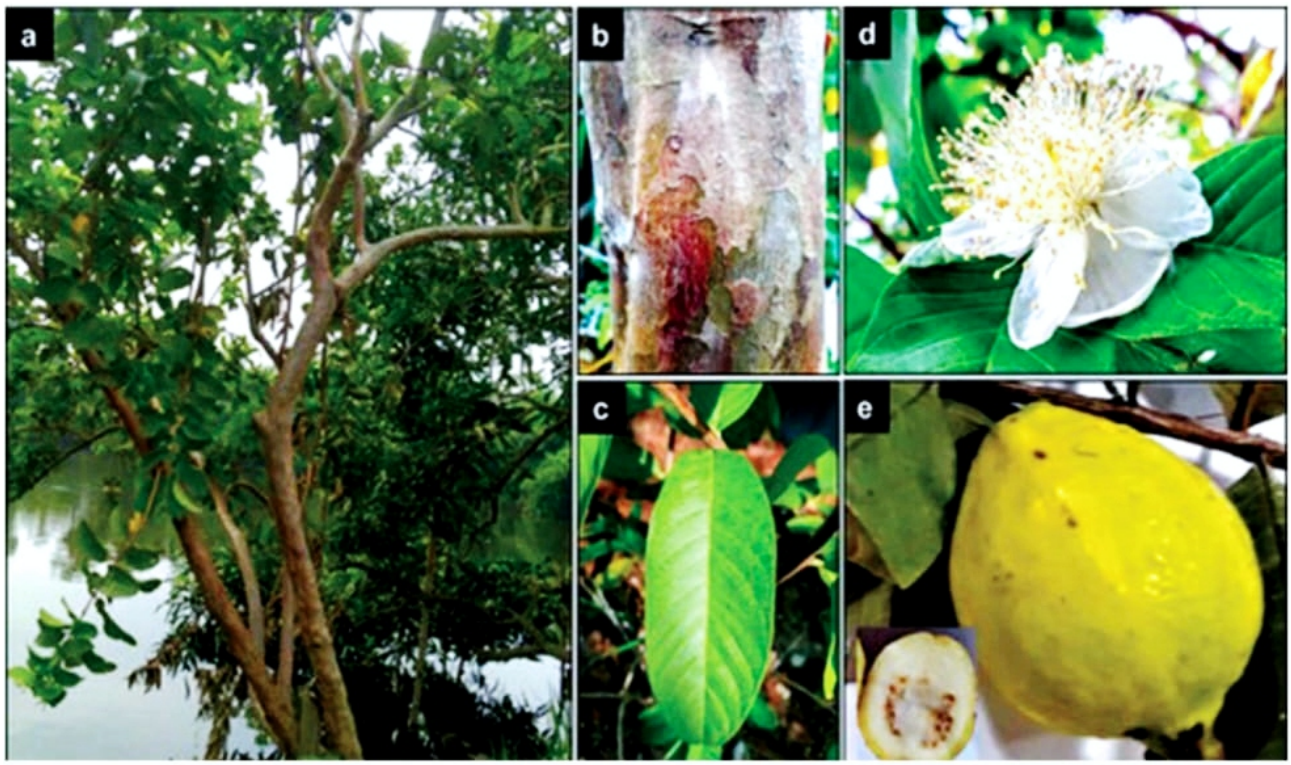

(a) अमरूद का वृक्ष; (b) अमरूद के वृक्ष का मृत्यु तना; (c) अमरूद की एक पत्ती (d और e) अमरूद का फूल और फल

मिनरल्स के अलावा लैवोनॉयड्स जैसे फीनोलिक कंपाउंड्स की भी उपस्थिति होती है। ज्ञात है कि लाइकोपीन और लैवोनॉयड्स महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट का काम करते हैं जो कैंसर पैदा करने वाली कोशिकाओं को नष्ट करने और समय से पहले त्वचा में एजिंग यानी आयु बढ़ने की प्रक्रिया को रोकने में सहायक होते हैं। अमरूद में हृदय की पेशी के संकुचन को प्रभावित करने के गुण भी पाए जाते हैं। कुछ शोध अध्ययनों में अमरूद के छिलके के सत्व यानी एक्सट्रैक्ट में मधुमेय को नियंत्रित करने के भी परिणाम देखे गए हैं।

एंटीमाइक्रोबियल क्रियाशीलता

अमरूद में मौजूद एंटी माइक्रोबियल क्रियाशीलता के चलते इसकी पत्तियों के एक्सट्रैक्ट से खांसी को कम करने में मदद मिलती है। इसकी पत्तियों के जलीय, क्लोरोफार्म और मिथेनॉल युक्त सत्व में तरह–तरह के बैक्टीरिया की वृद्धि रोकी जा सकती है। अमरूद की पत्तियों और छाल के मिथेनॉल युक्त सत्व स्टेफाइलोकोकस आरियस, वैसिलस और साल्मोनेला जैसे जीवाणु (बैक्टीरिया) की वृद्धि को रोकने में सहायक पाए गए है।

अमरूद से फ्लेवोनॉयड कंपाउंड्स और उनके व्युत्पन्न (डेरिवेटिव्स) पृथक किये जा सकते हैं जिनमें

अमरूद की पत्तियों, बीजों, छिलकों और गूदे में पर्याप्त मात्रा में एंटीमाइक्रोवियल क्रियाशीलता पाई जाती है।

विभिन्न प्रकार के बैक्टीरिया की वृद्धि को संदमित करने के गुण पाए जाते हैं। अमरूद की पत्तियों के जलीय सत्व में मौजूद टर्पीनीन और पाइनीन में भी एंटीमाइक्रोबियल क्रियाशीलता पाई जाती है जिन्हें बलगम, डायरिया, मुखीय कैंसर और मसूड़े में सूजन से बने घाव जैसी स्थितियों में उत्पन्न बैक्टीरिया को नष्ट करने के लिए औषधीय रूप में प्रयोग किया जाता है।

अमरूद में ग्राम पॉजिटिव बैक्टीरिया के विरुद्ध उच्च तथा ग्राम निगेटिव बैक्टीरिया स्ट्रेन के विरुद्ध औसत जीवाणुरोधी क्रियाशीलता पाई जाती है। एक अध्ययन के अनुसार अमरूद की पत्तियों में कवकरोधी और बैक्टीरियारोधी गुणों युक्त कई यौगिक पाए जाते हैं। उनमें कई तरह के बैक्टीरिया की वृद्धि को रोकने के साथ–साथ एंटीवायरल कारकों के रूप में कार्य करने के गुण पाए जाते हैं। उनसे इफ्लूएंजा वायरस जैसे वायरल संक्रमणों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। यह एंटीवायरल क्रियाशीलता अमरूद के सत्व में प्रोटीन डिग्रेडेशन क्षमता मौजूद होने के कारण होती है।

अमरूद में मौजूद वाष्पशील तेल यानी सगंध तेल (एसेंशियल ऑयल) में साल्मोनेला और स्टेफाइलोकोकस ऑरियस जैसे बैक्टीरिया के विरुद्ध क्रियाशीलता देखी गई है। अमरूद में कैंसररोधी और एंटीऑक्सीडेंट क्रियाशीलता भी प्रदर्शित की गई है। अमरूद के छिलके, बीजों और गूदे में प्रचुर मात्रा में मौजूद गैलिक एसिड, गैलेंगिन, कीमोफेरॉल, होमोजेंटिसिक एसिड, सायनीडीन 3–ग्लूकोसाइड जैसे कंपाउंड्स अमरूद को एक महत्वपूर्ण फल बनाते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अमरूद की पत्तियों, बीजों, छिलकों और गूदे में पर्याप्त मात्रा में एंटीमाइक्रोबियल क्रियाशीलता पाई जाती है।

अतिसाररोधी क्रियाशीलता

विश्व भर में अतिसार यानी डायरिया एक सामान्य स्वास्थ्य समस्या है। यहां तक कि विकसित देश भी इससे अछूते नहीं हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 22 लाख से अधिक लोग डायरिया के कारण मौत का शिकार बनते हैं जिनमें बच्चों अथवा शिशुओं की संख्या अधिक होती है।

अमरूद की पत्तियों से पृथक किए गए क्वेसेंटिन–3 अराबिनोसाइड और क्वेसेंटिन नामक यौगिक कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ाकार आंत के संकुचन को रोकते हैं। क्वेसेंटिन इलियम यानी आंत के

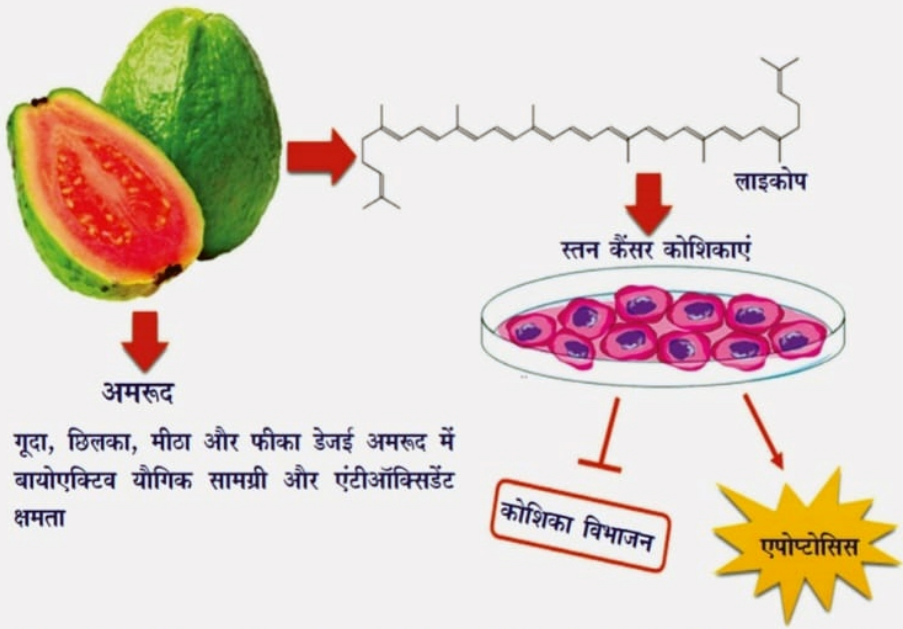

अमरूद में उच्च मात्रा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और पोषक तत्व न केवल जीवन के लिए आवश्यक बल्कि फ्री-रैडिकल की क्रियाशीलताओं पर नियंत्रण रखने में भी मददगार होते हैं।

निचले हिस्से को प्रभावित करता है। अमरूद एन्टअमीबा कोलाई अथवा स्टेफाइलोकोकस ऑरियस नामक बैक्टीरिया के टॉक्सिन से उत्पन्न डायरिया के इलाज में सहायक पाया जाता है। इस प्रकार अमरूद के सत्व में मौजूद डायरियारोधी क्रियाशीलता अतिसार के निवारण और इलाज में सहायक हो सकती है।

वर्ष 2008 में चूहों पर पानी से उत्पन्न अतिसार में अमरूद की पत्तियों के एक्सट्रैक्ट में अतिसाररोधी क्रियाशीलता का अध्ययन किया गया जिसके परिणामस्वरूप चूहे की आंत में हुए बदलाव के साथ अतिसार से महत्वपूर्ण सुरक्षा देखी गई। हालांकि, यह क्रियाशीलता खुराक पर आधारित थी। एट्रोपीन खुराक में कैस्टर तेल से प्रेरित अतिसार के विरूद्ध पर्याप्त सुरक्षा देखी गई, जबकि लोपेरामाइड खुराक के साथ कैस्टर ऑयल प्रेरित अतिसार की शुरुआत काफी हद तक विलंबित देखी गई। अध्ययन के दौरान इन जंतुओं की आंत में तरल के स्राव में काफी हद तक गिरावट देखी गई। अमरूद फल के तत्वों में भी अतिसाररोधी क्रियाशीलता देखी गई है जिससे अतिसार के इलाज और निवारण में इसे सहायक होने का संकेत मिलता है। अमरूद के इथेनॉल युक्त सत्वों में मधुमेहरोधी और अतिसाररोधी महत्वपूर्ण क्रियाशीलता देखी गई है।

शोथरोधी क्रियाशीलता

अमरूद के इथाइल एसीटेट युक्त सत्व में रोगाणु संक्रमण और थाइमस के उत्पादन को रोकने के गुण देखे गए हैं। यह एक एंटीवायरल यानी विषाणुरोधी कारक के रूप में भी कार्य कर सकता है। अमरूद के इस तत्व से मैसेंजर आरएनए की अभिव्यक्ति में वृद्धि देखी गई है। अमरूद में हीम ऑक्सीजिनेज–1 नामक प्रोटीन के कार्य में बदलाव लाने का गुण मौजूद होने के कारण उसके सेवन से त्वचा में होने वाली सूजन यानी शोथ की प्रक्रिया संदमित की जा सकती है। अमरूद के एथेनॉल युक्त सत्व के प्रयोग से नाइट्रिक ऑक्साइड के निर्माण से बनने वाले लाइपो पॉलीसैकेराइड्स का उत्पादन मंद हो जाता है। लाइपो पॉलीसैकराइड्स (एल पी एस) एक लिपिड और एक पॉलीसैकेराइड युक्त बड़े अणु के रूप में जीवाणु विष यानी बैक्टीरियल टॉक्सिंस होते हैं। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप शरीर में प्राकृतिक रूप से बनने वाले तीन एस्ट्रोजन हॉर्मोन्स में एक एस्ट्राडिऑल हॉर्मोन की संदमन प्रक्रिया एक शोथरोधी कारक यानी एंटी इन्फ्लैमेटरी एजेंट के रूप में कार्य करती है। अमरूद के एथिल एसीटेट युक्त तत्व में एंटीजन (प्रतिजन) को न्यून करने की क्षमता होती है। इससे कोशिकाओं में हिस्टामाइन के साथ बीटाहेक्जोसामिनीडेज का स्राव रूक जाता है। इसके परिणामस्वरूप एंटीजन का संदमन होता है। अमरूद में

महत्वपूर्ण यौगिकों के रूप में मौजूद बेंजोफिनोन और लैवोनॉयड्स हिस्टामीन का संदमन और नाइट्रिक एसिड का उत्पादन करते हैं। ज्ञात है कि हिस्टामाइन फूड एलर्जी की स्थिति में वोमिटिंग यानी वमन और डायरिया पैदा करते हैं, और फेफड़ों की कोशिकाओं को संकुचित कर सांस लेने में कठिनाई पैदा करते हैं। नाइट्रिक ऑक्साइड कोशिकाओं से निकलकर रक्त वाहिकाओं को शिथिल बनाती हैं, हालांकि, बढ़ती आयु के साथ नाइट्रिक ऑक्साइड का उत्पादन कम होता जाता है।

अमरूद में मौजूद फीनॉल नामक एक महत्वपूर्ण यौगिक एलर्जी और शोथ यानी सूजन को रोकने की प्रक्रिया में सहायक होता है। अमरूद के सत्वों में यकृत के क्षतिग्रस्त होने से उत्पन्न इफ्लेमेशन यानी शोथ तथा सीरम के उत्पादन में प्रभावी क्षमता पाई गई है।

एंटीऑक्सीडेंट क्रियाशीलता

ऑक्सीडेंट्स ऑक्सीकरण की प्रक्रिया को मंद करने वाले मॉलीक्यूल्स यानी अणु होते हैं। ऑक्सीकरण की प्रतिक्रियाओं में उत्पन्न फ्री रैडिकल्स यानी मुक्त मूलक तरह–तरह की चेन रिएक्शंस यानी श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रियाओं की शुरूआत करके कोशिका को क्षति पहुंचाते हैं। फ्री रैडिकल्स कोशिकाओं को क्षतिग्रस्त करके कैंसर और कई अन्य बीमारियां पैदा करते हैं। एंटीऑक्सीडेंट्स इन मुक्त मूलकों को नष्ट करके चेन रिएक्शंस को समाप्त कर देते हैं। एंटीऑक्सीडेंट्स में बीटा–कैरोटीन, लाइकोपीन, विटामिन सी, ई और ए तथा अन्य पदार्थ सम्मिलित हैं। फ्री रैडिकल्स से कोशिकाओं के क्षतिग्रस्त होने से मानव में तंत्रिका संबंधी विकार, सूजन, डायबिटीज और वायरल संक्रमणों जैसी अनेक बीमारियां पैदा होती है। शरीर में औषधियों के चयापचय होने से फ्री रैडिकल्स पैदा होते हैं। कभी कभी पर्यावरणीय परिवर्तनों और हार्मोन्स के कारण भी फ्री रैडिकल्स उत्पन्न होते हैं। सभी ऑक्सीकरण प्रतिक्रियाओं में इन फ्री रैडिकल्स की भूमिका होती है।

अमरूद में उच्च मात्रा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स और पोषक तत्व न केवल जीवन के लिए आवश्यक बल्कि फ्री–रैडिकल्स की क्रियाशीलताओं पर नियंत्रण रखने में भी मददगार होते हैं। अमरूद में उपस्थित तरह–तरह के फाइटोकेमिकल्स यानी पादप रसायन मानव में डायबिटीज, मोटापा और उच्च रक्तचाप यानी हाई ब्लड प्रेशर जैसी स्वास्थ्य समस्याओं की स्थिति में लाभकारी होते हैं।

पानी और ऑर्गेनिक सॉल्वेंट्स यानी कार्बनिक विलायकों में निर्मित अमरूद के सत्वों में बड़ी मात्रा में उपस्थित एंटीऑक्सीडेंट्स में ऑक्सीकरण प्रतिक्रिया को रोकने की क्षमता होती है। गुलाबी रंग के अमरूद में एंटीऑक्सीडेंट्स की उच्च क्रियाशीलता पाई गई है।

अमरूद में उपस्थित एंटीऑक्सीडेंट्स मस्तिष्क की निष्क्रियता, इन्फ्लैमेशन, हृदय रोग, कैंसर, धमनी स्क्लेरोसिस और आर्थराइटिस यानी संधि शोथ जैसे ह्रास रोगों को कम करने में सहायक होते हैं। अमरूद फल में पॉलीफिनॉल्स और एस्कॉर्बिक एसिड नामक ऑक्सीडेंट्स प्रचुर मात्रा में मौजूद होते हैं। अमरूद फल को 4 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर भंडारित करने की स्थिति में उसमें एस्कॉर्बिक एसिड की मात्रा बढ़ने के संकेत मिले हैं। पॉलिफिनॉल्स मुख्यतया ग्लाइकोसाइड और एस्टर रूपों में पाए जाने वाले फ्लैवोनॉयड्स होते हैं। अमरूद में फ्री इलैजिक एसिड तथा एपीजेनिन और माइरीसेटिन के ग्लाइकोसाइड मौजूद होते हैं।

ऑर्गेनिक सॉल्वेंट में अमरूद के सत्व शुक्राणु उत्पादन को प्रभावित करते हैं। एंटीऑक्सीडेंट्स की उपस्थिति में शुक्राणुओं की मात्रा में बढ़ोत्तरी हो सकती है। अमरूद के एथेनॉल युक्त सत्व में शुक्राणुओं की गुणवत्ता और मात्रा दोनों के बढ़ाने के गुण पाए गए हैं। अमरूद की पत्तियों में भी एस्कॉर्बिक एसिड के रूप में उच्च मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। अमरूद की पत्तियों से क्वेरसेटिन, क्वेरसेटिन–3–O–ग्लूकोपाइरेनोसाइड और मोरीन जैसे अतिक्रियाशील और प्रभावी एंटीऑक्सीडेंट्स पृथक किए जा सकते हैं। अमरूद में उपस्थित अन्य एंटीऑक्सीडेंट्स में क्वेरसेटिन, फेरूलिक एसिड, गैलिक एसिड, कैफीक एसिड, आदि शामिल हैं। कुछ अध्ययनों के अनुसार अमरूद में एंटीऑक्सीडेंट क्रियाशीलता के साथ विकिरण संरक्षी क्षमता होती है। अमरूद के सत्वों में एंटीऑक्सीडेंट्स संबंधी क्षमता को देखते हुए विभिन्न जटिलताओं और रोगों के विरूद्ध एक नया चिकित्सीय मार्ग प्रशस्त हुआ है। हालांकि, अमरूद की एंटीऑक्सीडेंट और अन्य भैशजिक क्रियाशीलता से जुड़ी वास्तविक प्रक्रिया को समझने तथा उसे प्रमाणित करने के लिए और अधिक शोध अध्ययनों की आवश्यकता है।

अमरूद का प्रसंस्करण

अमरूद के पके फलों को तोड़ने के बाद कमरे के तापमान पर उसे 2 से 3 दिनों से अधिक अवधि तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। अमरूद के मौसम में

इसकी व्यापक उपज को देखते हुए विविध परिवहन माध्यमों से बड़ी मात्रा में फलों को उन क्षेत्रों में पहुंचाया जा सकता है, जहां इनकी खेती नहीं होती। इसके मौसम में पर्याप्त आपूर्ति के बावजूद फलों से अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत के अनेक खाद्य औधोगिक प्रतिष्ठानों द्वारा अमरूद को प्रसंस्कृत और संरक्षित करके विभिन्न रूपों में न केवल भारतीय बाजारों में उपलब्ध कराया जाता है बल्कि निर्यात भी किया जाता है। इस तरह अमरूद फल की प्रसंस्करण और विपणन प्रक्रियाओं से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार और राजस्व तो मिलता ही है, निर्यात से देश को विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होती है।

प्रसंस्करण प्रक्रिया द्वारा अमरूद के निम्नलिखित व्यापारिक उत्पाद तैयार किए जाते हैं:

- **अमरूद का गूदा :** अमरूद फल के गूदे यानी पल्प को संरक्षित करना एक आसान तरीका है। इसके पौष्टिक गुणों को नष्ट होने से बचाने के लिए अमरूद के गूदे में बहुत कम मात्रा (0.005-0.2%) में पोटैशियम मेटाबाईसल्फाइट मिलाकर उसे 2 से 5 डिग्री सेल्सियस के बीच निम्न तापमान पर भंडारित किया जाता है। इस गूदे को प्रसंस्कृत करके जूस, रेडी–टू–ड्रिंक पेय, गाढ़ा पेय, आदि जैसे अनेक खाद्य तैयार किए जाते हैं। जिसे 2 से 5 डिग्री सेल्सियस पर 90 दिनों तक संरक्षित रखा जा सकता है। अमरूद से गूदा प्राप्त करने के लिए शीत और गर्म दोनों प्रकार की प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं। गर्म प्रक्रिया में फल को पहले हल्का गर्म करने के बाद गर्म पानी अथवा भाप में गूदे को अलग किया जाता है। जबकि शीत प्रक्रिया में फल को गर्म किए बिना उच्च दर्जे का गूदा प्राप्त किया जाता है। हालांकि, तापीय पद्धति की तुलना में शीत प्रक्रिया में गूदा कम मात्रा में मिलता है।
- **रेडी–टू–सर्व बेवरेजेज़ :** अमरूद के गूदे को पपीता और पाइन ऐप्पल जैसी अन्य फलों के साथ मिलाकर रेडी–टू–ड्रिंक पेय पदार्थ तैयार किया जाता है। इस विधि से अमरूद का स्वरूप, उसके पौष्टिक तत्त्व और स्वाद में बढ़ोत्तरी हो जाती है।
- **अमरूद के गूदे को सुखाकर बनाई गई शीट :** अमरूद के जूस को सुखाकर शीट के रूप में बना ली जाती है। जिसका सेवन मिठाई के रूप में अथवा उसे पीसकर निर्मित सॉस के रूप में खाया जाता है। अमरूद की अधिकतम पैदावार वाले क्षेत्रों में यह खाद्य बहुत लोकप्रिय है।
- **अमरूद श्रीखंड :** गुजरात महाराष्ट्र और कर्नाटक में गर्म दूध में लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया युक्त कल्चर के साथ इसे मिश्रित कर 30 डिग्री सेल्सियस पर खमीरीकरण के बाद ठण्डा करके एक अन्य सूखे और स्वच्छ बर्तन में पलट दिया जाता है। उसमें चीनी और अमरूद के पाउडर को मिलाकर हाथ से अथवा मिक्सर में

अच्छी तरह मिश्रित करके श्रीखंड तैयार किया जाता है। उसे पॉलीस्टेरील कप में पैक कर फ्रिज में स्टोर कर लिया जाता है।

- **अमरूद का जूस :** पके अमरूद को एक हाइड्रॉलिक फिल्टर प्रेस की सहायता से निचोड़कर उसे पानी में मिलाकर गूदे को छानकर, उसमें पेप्टिक एंजाइम्स मिलाकर, छानकर दूधिया जूस तैयार कर भंडारित किया जाता है।
- **अमरूद की वाइन :** अमरूद फल से एक उच्च दर्जे की वाइन तैयार की जाती है। डी ए पी एच के साथ 1:4 के अनुपात में तनुकरण के बाद उपचारित कर वाइन तैयार की जाती है।
- **अमरूद की स्लाइस :** पके और सख्त अमरूद के 1.5 सेमी मोटाई के टुकड़ों (स्लाइस) काटकर डिहाड्रेट यानी शुष्कीकृत कर उनको अलग–अलग मात्रा में चीनी और अलग–अलग तापमान पर 0.10% साइट्रिक एसिड युक्त के घोल में डुबोकर ऑस्मोसिस प्रक्रिया से सुखाकर स्वादिष्ट स्लाइस तैयार कर ली जाती हैं। इस प्रक्रिया में स्लाइस के सूखने पर उसमें रंग, बनावट और स्वाद में बिना किसी परिवर्तन के उनमें चीनी की मात्रा अधिक और एसिडिटी कम हो जाती है।

अमरूद दुनिया भर में अपने खाद्य और पौष्टिक गुणों के कारण विख्यात है। इसमें उच्च मात्रा में फोलिक एसिड, आहारीय रेशा, पोटैशियम और खनिजों की उपस्थिति के कारण इसे उत्तम फलों की सूची में शामिल किया गया है। परिवहन एवं उठाने, धरने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण उपभोक्ता तक पहुंचने से पहले बड़ी मात्रा में अमरूद के फल नष्ट हो जाते हैं। जिनसे बचने के लिए इसे प्रसंस्कृत कर विभिन्न, उत्पाद तैयार किये जाते हैं। अमरूद में विभिन्न पादप रसायनों की उपस्थिति के कारण इनमें एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल, शोथरोधी, घाव भरने तथा एंटीमाइक्रोबियल गुण तरह–तरह की बीमारियों से बचाने में सहायक होते हैं।

आभार : सारणी और चित्र सहित यह आलेख दि फार्मा इनोवेशन जर्नल 2022: 11(6), तथा क्लीनिकल फाइटो साइंस 2018: 4 (32) में प्रकाशित रिव्यू शोध पत्रों पर आधारित है।

यह लेख विज्ञान प्रगति (मार्च–2024) से साभार लिया गया है।

◆◆◆

जलवायु परिवर्तन तय करेगा धरती पर सभ्यता का भविष्य

–डॉ० कृष्ण कुमार मिश्र

⟶ जलवायु परिवर्तन आज दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती है। यह पूरी दुनिया के लिए गहन चिंतन का भी विषय बन गया है। यह वास्तव में समूची मानव सभ्यता के सामने भयानक संकट बनकर खड़ा है। कहा तो यहां तक जा रहा है कि यह धरती रूपी जीवित ग्रह को बचा लेने का प्रश्न बन चुका है। पर्यावरणविदों का कहना है कि यदि इंसान ने अपने तौर–तरीको में बहुत जल्दी और व्यापक तौर पर बदलाव नहीं किया तो फिर धरती पर भयावह संकट का आना लगभग तय है। जलवायु परिवर्तन से धरती का तापमान बढ़ रहा है, मौसम–चक्र में परिवर्तन हो रहा है, भूमंडल का तापमान बढ़ने से समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। इससे दुनिया के अनेक तटीय इलाके धीरे–धीरे सागर में समाते जा रहे हैं। छोटे–छोटे अनेक टापुओं का अस्तित्व मिटने तथा उनके महासागरों में विलीन हो जाने का खतरा मंडरा रहा है। जलवायु परिवर्तन से धरती की अनेक जीवन प्रजातियां समाप्त हो जाएंगी। मौसम–चक्र में अप्रत्याशित परिवर्तन देखने को मिलेंगे, जो कि अब दिखाई देना शुरू हो चुका है। कहीं अतिवृष्टि होगी, तो कहीं अनावृष्टि। धरती के बहुत बड़े भूभाग पर वातावरणयीय परिवर्तनों के चलते खाद्य–संकट पैदा हो जाएगा। जलवायु परिवर्तन के चलते धरती के अनेक इलाकों से जन समुदायों का बड़े पैमाने पर भौगोलिक विस्थापन होगा।

महान सार्वकालिक दिव्यांग वैज्ञानिक की भविष्यवाणी

महान भौतिकीविद् प्रो. स्टीफन हॉकिंग धरती पर जीवन तथा सभ्यता को लेकर सजग तथा चितिंत रहते थे। उन्होंने धरती पर इंसानी सभ्यता के भविष्य को लेकर महत्वपूर्ण बाते कही थीं। वे मोटरन्यूरॉन डिजीस से ग्रस्त एक दिव्यांग थे। यद्यपि उनका जीवन ह्वीलचेयर तक सिमटकर रह गया था, लेकिन उनके शोध और चिंतन का विस्तार विराट ब्रह्मांड तक था। प्रो. स्टीफन हॉकिंग ने 'ब्लैकहोल' तथा 'बिगबैंग थ्योरी' में महत्वपूर्ण योगदान

दिया था। वे अपने जीवनकाल में विज्ञान जगत के साथ–साथ आम लोगों के बीच एक किंवदंती बन गए थे। 14 मार्च 2018 को 74 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। वर्ष 2016 में बी.बी.सी. के लिए तैयार किए जा रहे एक वृत्तचित्र में दिए गए अपने साक्षात्कार में उन्होंने चेताया था कि इंसान के धरती पर रहने की मियाद खत्म हो रही है। अब उसे अपने लिए दूसरी धरती खोज लेनी चाहिए। यह कार्य उसे अगले 100 वर्षो में कर लेना चाहिए। उनका मानना था कि जलवायु परिवर्तन, मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। उनका कहना था कि धरती की सेहत बुरी तरह बिगड़ चुकी है। यदि बहुत जल्दी इसे बचाने के कदम नहीं उठाए गए तो बाद में चलकर वह ऐसी स्थिति में पहुंच जाएगी कि हम चाहकर भी कुछ नहीं कर पाएंगे। लाख उपाय करके भी धरती को नहीं बचाया जा सकेगा। उन्होंने तकनीकी प्रगति, विशेष तौर पर कृत्रिम बुद्धि को लेकर आगाह किया था कि शायद यह मानव सभ्यता की अंतिम उपलब्धि साबित होगी। वैसे राष्ट्रों के बीच शत्रुता तथा द्वेष के कारण परमाणु या जैव युद्ध के जरिये सब–कुछ नष्ट होने का खतरा तो हमेशा रहेगा।

प्रकृति और पर्यावरण–सनातन चिंतन

भारतीय सनातन परम्परा में मान्यता है कि सृष्टि का निर्माण पंचमहाभूतों से हुआ है। ये पांच तत्व हैं–जल, वायु, मिट्टी अग्नि तथा आकाश। सृष्टि में सभी जड़ तथा चेतन इन्हीं पंचमहाभूतों से निर्मित है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में लिखा ही है–

'क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अधम सरीरा।

भारतीय जीवन पद्धति की उपासना प्रक्रिया में यजुर्वेद के इस शांति मंत्र का प्रयोग किया जाता है। इसमें कामना की गई है कि त्रिभुवन में, जल में, थल में, अंतरिक्ष में, अग्नि में, पवन में, औषधि में, वनस्पति में, वन–उपवन में, प्राणिमात्र के तन, और जगत के कण–कण में, शान्ति हो, समरसता हो। यथा–

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शन्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः।
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

–यजुर्वेद

वैज्ञानिक का कहना है कि पृथ्वी पर जीवन है क्योंकि यहां जल है। जहां तक हमें ज्ञात है, समूचे ब्रह्मांड में सिर्फ धरती पर ही जीवन है। मानव जाति का इतिहास जल से जुड़ा है। दुनिया की अधिकांश सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ है। पहले के समय में प्रकृति तथा मानव के मध्य समरसता थी, लेकिन तीव्र भौतिक विकास और कथित आधुनिकता ने इस रिश्ते पर निर्मम प्रहार किया है। परिणाम यह हुआ कि जल, जंगल जमीन, जीवन और जीविका के बीच का समरस सम्बन्ध टूट गया है। भौतिक विकास की अंधी दौड़, प्रचंड उपभोक्तावाद तथा चातुर्दिक फैले घनघोर बाजारवाद ने समुचे पर्यावरण को नष्ट कर दिया है। मनुष्य दिनोंदिन आधुनिकता विकास के असंतुलित ढाँचे ने प्रकृति के तमाम घटकों के मध्य के ताने–बाने को पूरी तरह से तरह–नहस कर दिया है। इससे आज मनुष्यता का दम घुटने लगा है। महात्मा गांधी ने कहा था कि हवा, पानी, मिट्टी कुदरत की नेमतें हैं। वे सिर्फ हमारे ही इस्तेमाल के लिए नहीं हैं। उन्हें भावी पीढ़ी के लिए भी संजोकर रखना हमारा दायित्व है। गांधी जी भौतिक विकास के दुष्परिणामों को अच्छी तरह समझते थे। उनका कहना था, ''धरती पर सभी लोगों की जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन तो है, लेकिन किसी एक की लालच की पूर्ति के लिए कत्तई नहीं है।'' वे धरती के संसाधनों के स्वार्थपूर्ण दोहन के बिल्कुल खिलाफ थे।

जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के मुद्दे

संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वावधान में जलवायु परिवर्तन सम्मेलन सबसे पहले वर्ष 1992 में ब्राजील के शहर 'रियो डि जेनेरियो' में आयोजित हुआ था। वर्ष 1994 में यह संधि लागू हुई और तभी से वैश्विक जलवायु सम्मेलन COP (Conference of the Parties) होता रहा है। मिस्र के नगर शर्म अल–शेख में नवंबर 2022 में आयोजित COP-27

सम्मेलन के विचारणीय बिंदु थे;

1. पहला लक्ष्य है इस सदी के मध्य तक शून्य उत्सर्जन के स्तर को हासिल करना, जिससे सदी के अंत तक 1.5 अंश सेल्सियस की तापवृद्धि के महत उद्देश्य को पाया जा सके। इसके लिए जरूरी होगा कि कोयले के इस्तेमाल को शीघ्रता से घटाया जाए, वनों का कटाव रोका जाय और इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर तेजी से बढ़ा जाये।

2. समुदायों तथा प्राकृतिक आवासों को बचाना, इसके लिए अपेक्षित है कि पारिस्थितिकीय तंत्रों की रक्षा की जाये तथा उन्हें बहाल किया जाए, जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचने के लिए सुरक्षातंत्र बनाया जाए, चेतावनी प्रणाली तैयार की जाए तथा टिकाऊ आधारभूत अवसंरचना तथा कृषि प्रणाली निर्मित की जाए, जिससे जन–धन तथा पर्यावासों को नुकसान से बचाया जा सके।

3. उपरोक्त दोनों महत् उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए विकसित देश अपने वचनानुसार हर साल करीब 100 अरब डॉलर की धनराशि मुहैया कराएं। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान इस कार्य में अपना योगदान दें।

4. इस विकट समस्या से हम सामूहिक प्रयासों से ही पार पा सकते है। इसलिए यह परमावश्वक हो जाता है कि हम पेरिस समझौते का पालन करें, दुनिया भर की सभी सरकारें निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज के मध्य परस्पर सहयोग से इस कार्य में तेजी लाएं।

"भारत का समग्र वैश्विक उत्सर्जन में योगदान कुल ८ प्रतिशत का ही है, जिसमें इस साल ६ प्रतिशत की वृद्धि होगी, चीन का उत्सर्जन भारत का चार गुना, यानी ३२ प्रतिशत है। औद्योगिकीकरण के चलते यूरोप तथा अमेरिका ने अब तक सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन किया है। इसलिए ग्लोबल वार्मिग को रोकने की जिम्मेदारी उन्हीं पर है। एशिया तथा अफ्रीका ने तो हाल के कुछ ही दशकों से विकास करना शुरू किया। इसलिए उन्हें नई प्रौद्योगिक के साथ वित्तीय साधन भी उपलब्ध कराना अमीर देशों की जिम्मेदारी है जिससे ये देश नवीकरणीय तथा दूसरे वैकल्पिक स्रोतों के विकास पर काम कर सकें।"

जैसा कि उल्लेख किया गया है, पहला लक्ष्य है वर्ष 2050 तक शून्य उत्सर्जन स्तर को हासिल करना, जिससे इस सदी के अंत तक 1.5 डिग्री सेल्सियस की तापवृद्धि के लक्ष्य को पाया जा सके। इसके लिए जरूरी होगा कि ग्रीन एनर्जी का प्रयोग किया जाए, कोयले के इस्तेमाल में कमी लाई जाए, वनों का कटाव रोका जाए तथा इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बढ़ा जाए। समय की मांग है कि कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में 1.4 गीगा टन की कटौती प्रतिवर्ष की दर से लागू हो। इस समय दुनिया भर में सालाना कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन 36.6 गीगा टन है। ग्लोबल कार्बन बजट, जो 380 गीगा टन है, वह

आगामी वर्ष 2031 में खत्म हो जाएगा। कोविड–19 के वैश्विक संकट के दौरान जीवाश्म ईंधन की खपत कम हुई थी। लेकिन अब कोरोना के पीछे टूटने से व्यावसायिक गतिविधियां कोरोना पूर्व के स्तर पर पहुंच गई हैं। वक्त की मांग है कि हम ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में व्यापक कटौती करें।

भारत का समग्र वैश्विक उत्सर्जन में योगदान कुल 8 प्रतिशत का ही है, जिसमें इस साल 6 प्रतिशत की वृद्धि होगी। चीन का उत्सर्जन भारत का चार गुना, यानी 32 प्रतिशत है। औद्योगीकरण के चलते यूरोप तथा अमेरिका ने अब तक सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन किया है। इसलिए ग्लोबल वार्मिंग को रोकने की जिम्मेदारी उन्हीं पर है। एशिया तथा अफ्रीका ने तो हाल के कुछ ही दशकों से विकास करना शुरू किया है। इसलिए उन्हें नई प्रौद्योगिकी के साथ वित्तीय साधन भी उपलब्ध कराना अमीर देशों की जिम्मेदारी है जिससे ये देश नवीकरणीय तथा दूसरे वैकल्पिक स्रोतों के विकास पर काम कर सकें। भारत ने तो वास्तव में वर्ष 1990 के बाद आर्थिक उदारीकरण के साथ भौतिक संसाधनों पर तेजी से काम शुरू किया है। उसे अपने 135 करोड़ लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा जैसी बुनियादी चीजें मुहैया करानी हैं। इसलिए पर्यावरणीय चिंता के चलते वह जन कल्याण के मुद्दे पर एकदम से पीछे नहीं हट सकता। फिलहाल भारत ने वर्ष 2070 तक शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने का संकल्प व्यक्त किया है।

बड़ी चुनौती है ग्लोबल वार्मिंग

जीवाश्म ईंधन की खपत से वातावरण का तापमान बढ़ रहा है। दहन से कार्बन डाईऑक्साइड गैस तथा दूसरी ग्रीन हाउस गैसें निकलती हैं। इन गैसों की सघन मौजूदगी के कारण धरती द्वारा निर्मुक्त सूर्य की अवशोषित गरमी वातावरण से बाहर नही जा पाती है। ये गैसें एक आवरण का काम करती हैं तथा ऊष्मा को बाहर नहीं जाने देतीं, जिससे वातावरण का तापमान बढ़ता है। ध्यातव्य है कि बदरी वाली रातें अपेक्षाकृत गर्म होती हैं। उसका कारण यह है कि दिन में धरती द्वारा सोखी गई गरमी रात्रि में बादलों के कारण वातावरण से बाहर नहीं जा पातीं। जलवायु परिवर्तन के कारण लोगों का बड़ी संख्या में विस्थापन हो रहा है। कुदरती आपदाओं, जैसे–बाढ़ सूखा, तूफान के चलते गरीब सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। इनसे होने वाले नुकसान को वे झेल नहीं पाते तथा दूसरी जगह अभिगमन कर जाते हैं। बाढ़ सूखे

या फिर चक्रवातों से प्रभावित होकर देश में बहुत बड़ी आबादी विस्थापन का शिकार होती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि आने वाले समय में कुदरती आपदाएं बढ़ेंगी। भारत में हिमालयी राज्यों तथा समुद्रतटीय इलाकों से अन्य स्थानों की ओर विस्थापन बढ़ रहा है। मौसम में बदलाव के कारण सामान्य लोगों का जीवनयापन कठिन होता जा रहा है, जिससे वे अपने पुराने पारंपरिक पर्यावास को छोड़कर दूसरी जगहों पर जा रहे हैं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि 19वीं सदी की तुलना में धरती का औसत तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। आंकड़े बताते हैं कि धरती के वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा 50 प्रतिशत तक बढ़ी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि हमें तापमान

वृद्धि के कारकों को नियंत्रित करने के बारे में ठोस कदम उठाने चाहिए। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमारी कोशिश होनी चाहिए कि ग्लोबल वार्मिंग के चलते वर्ष 2100 तक धरती के तापमान में बढ़ोत्तरी 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखी जाए। उन्हें अंदेशा है कि यदि दुनिया के तमाम देशों ने मिलकर ठोस कदम नहीं उठाए तो इस सदी के अंत तक धरती का तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ सकता है। उनका आकलन बताता है कि यदि कुछ न किया गया तो फिर ग्लोबल वार्मिंग के चलते धरती का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से अधिक भी बढ़ सकता है। अगर वाकई ऐसा हुआ तो यह सचमुच डरावना होगा। दुनिया को भयानक गर्म थपेड़ों का सामना करना पड़ेगा। समुद्र का जलस्तर बढ़ने से लाखों लोग बेघरबार हो जाएंगें। अनेक जानवरों तथा वनस्पतियों की प्रजातियां विलुप्त हो जायेंगी।

भारत का ऊर्जस्वी अमृत संकल्प

आजादी के अमृत महोत्सव काल में भारत ने अपनी ऊर्जा जरूरतों तथा स्वावलंबन हेतु कुछ अमृत संकल्प लिए हैं। पेट्रोलियम पदार्थो के आयात पर हमारी निर्भरता करीब 83 प्रतिशत है। यह स्थिति बदलनी ही चाहिए। उत्पादक देशों से पेट्रोलियम मंगाने पर विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ती है। इसलिए भारत सरकार ने पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनॉल मिलाने की इजाजत पहले से दी है। इसे वर्ष 2024 तक बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य है। देश में बायोमास से इथेनॉल बनाने पर व्यापक स्तर पर काम चल रहा है तथा क्षमता विस्तार के प्रयास निरंतर जारी हैं। जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए वैश्विक समाज को जीवाश्म ईधन पर निर्भरता कम करनी होगी। उसे ऊर्जा के और नवीकरणीय स्रोत खोजने होंगे। उपलब्ध स्रोत, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा ज्वारीय ऊर्जा विकसित करने होंगे। भारत में तकरीबन 10 महीने खूब धूप खिली रहती है। ऐसे में सौर ऊर्जा हमारे लिए वरदान है। भारत सरकार पहले से ही इस बारे में जागरूक तथा प्रयासरत है। भारत ने 31 दिसम्बर, 2022 को 63.30 गीगावाट सौर विद्युत क्षमता स्थापित कर ली थी जो कि देश की सकल स्थापित सौरविद्युत क्षमता स्थापित कर ली थी जो कि देश की सकल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता 410.34 गीगावाट, का करीब 15.1 प्रतिशत है। यह अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। देश में करीब 57.5 प्रतिशत विद्युत जीवाश्म ईंधन से तथा 42.5 प्रतिशत विद्युत गैर–जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त होती है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए दुनिया को नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोत खोजने होंगे। उन पर अपनी निर्भरता बढ़ानी होगी। जीवाश्म ईंधनों का इस्तेमाल समय के साथ कम करते जाना होगा। गैर–पारंपरिक स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा तथा ज्वारीय ऊर्जा को विकसित करना होगा। दुनिया भर की सरकारों को अपने स्तर पर कुछ बड़े और नीतिगत फैसले लेने होंगे। आम जनमानस को भी अपने स्तर पर इस प्रयास से जुड़ना होगा। कुछ छोटे–छोटे प्रयास जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में उपयोगी सिद्ध होंगे। पहला कदम होना चाहिए कि यातायात के लिए सार्वजनकि साधनों का प्रयोग किया जाए। छोटी–मोटी दूरियों के लिए साइकिल का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। मोटरकार, बाइक जैसे निजी साधनों का प्रयोग घटाया जाए। बिजली के अनावश्यक खर्च को कम किया जाए। जब जरूरत न हो , विद्युत उपकरणों को बंद रखा जाए। कहते है–''बिजली की बचत ही बिजली का उत्पादन है।'' तीसरा मुख्य बिंदु है, रीयूज यानी पुनर्प्रयोग का। यानी चीजों तथा वस्तुओं को बार–बार इस्तेमाल करने योग्य बनाना होगा। रीसाइकिलिंग यानी पुनर्चक्रण एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें सामानों को प्रयोग के बाद फेंक नहीं देना है, बल्कि उन्हें पुनर्चक्रित करके फिर से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना है। इस बहुत बड़े कार्य में सबकी भागीदारी बहुत जरूरी है। सवाल आखिर इस धरती पर सभ्यता के अस्तित्व को बचाने का है।

–पुस्तक संस्कृति

(नवंबर–दिसंबर 2023 से साभार)

◆◆◆

सांप और पर्यावरण : महत्व, भूमिका एवं संरक्षण

–हरेन्द्र श्रीवास्तव

⟶ सांप मनुष्यों के लिए सैकड़ों–हजारों वर्षों से ही बेहद रहस्यमयी एवं भयकारी जीव रहे हैं। भारत सहित विश्व की सभी मानव–संस्कृतियों में सांपो को लेकर अनेकों तरह के मिथक, भ्रांतियाँ, रूढ़ियाँ और मान्यताएँ प्रचलित हैं। एक तरफ जहां मनुष्य सांपो को धार्मिक दृष्टिकोण से अत्यन्त पूजनीय मानता है तो वहीं सांपो के प्रति तरह–तरह के अंधविश्वासों और भय के चलते इन पर जानलेवा हमले भी करता है। इस धरा पर सांप ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिससे मनुष्य सबसे ज्यादा डरता है और इन्हें देखते ही मार देता है। अधिकांश लोगों के मन–मस्तिष्क में ये धारणा घर कर गई है कि प्रत्येक सांप हमारे वजूद के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है और इसे देखते ही मार देना चाहिए। आज के वैज्ञानिक युग में भी कई लोगों के लिए सांप एक जानलेवा प्राणी मात्र है जिस कारण वो सांपो को पसंद नहीं करते और इसी धारणा के चलते वो सोचते हैं कि धरती पर से सभी सांपो का अस्तित्व पूर्णतया समाप्त हो जाये। सांपो के प्रति हमारे मन–मस्तिष्क में बैठा ये भय आज से नहीं बल्कि सहस्रों वर्षों से है और ये डर भी अकारण नहीं है बल्कि सहज, स्वाभाविक एवं नैसर्गिक है जिसका मुख्य कारण है सर्पदंश से होने वाली मानव–मृत्यु। प्रत्येक जीवों की भांति मनुष्य को भी अपना जीवन बेहद अनमोल और प्रिय लगता है और उसे अपने प्राणों की सदैव चिंता रहती है इसी कारण वो हर उस चीज को खत्म कर देना चाहता है जो उसके वजूद हेतु खतरनाक हो। बस इसी असुरक्षा एवं भय के चलते मनुष्य सांपो को अपना मुख्य शत्रु समझता रहा है लेकिन ऐसा सोचते समय मानव अक्सर ये भूल जाता है कि सांप जैसा प्राणी भी हमारे धरती ग्रह पर जैवविविधता का एक अभिन्न हिस्सा है जिसकी प्रकृति में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है और यदि धरती सर्पविहीन हो जाये तो उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जायेगा। दुनिया भर में सांपो की 3400 से भी ज्यादा प्रजातियाँ पायी जाती

हैं। वैज्ञानिक वर्गीकरण के तहत सांप सरीसृप वर्ग के प्राणी हैं। ये शीतरक्त अर्थात् ठंडे खून वाले जीव हैं जिनके शरीर का तापमान वातावरण की मौसमी गतिविधियों के मुताबिक बदलता रहता है जिस वजह से ये तापमान के उतार–चढ़ाव के प्रति बेहद संवेदनशील होते हैं। इसीलिए

आप देखेंगे कि बरसात के उच्च आर्द्रता एवं उष्णता भरे मौसम में तो ये दिन–रात सक्रिय रहते हैं जबकि जाड़ों के समय में इनकी सक्रियता बेहद कम हो जाती है। सांप जंगलों, पहाड़ों, रेगिस्तानी इलाकों, द्वीपों, समुद्रों और नदियों आदि विभिन्न प्रकार के भौगोलिक पर्यावासों में पाये जाते हैं। अंटार्कटिका को छोड़कर इनका साम्राज्य एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया सभी महाद्वीपों में फैला हुआ है। अमूमन ज्यादातर लोग सभी सांपो को विषैला ही समझते हैं जबकि वैज्ञानिक सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत है। करीब 20 फीसदी प्रजातियों को छोड़ दें तो दुनिया के बाकी अधिकांशतः सांप विषहीन ही होते हैं। आस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला इनलैंड ताइपन विश्व का सबसे ज्यादा विषैला सांप है। दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों में पाया जाने वाला किंग कोबरा (ओफियोफैगस हाना) जिसे हम हिंदी में नागराज के नाम से जानते हैं, दुनिया का सबसे लम्बा विषैला सांप है। अफ्रीका में पाया जाने वाला ब्लैक माम्बा दुनिया का दूसरा सबसे लम्बा विषैला सांप है। धरती पर 4 इंच के बेहद छोटे सांप से लेकर 32 फीट तक के भारी–भरकम वाले लम्बे आकार के सांपो की मौजूदगी है। जालीदार अजगर (रेटिकुलेटेड पॉयथन) दुनिया का सबसे लम्बा सांप है जिसकी लम्बाई करीब 32 फीट रिकॉर्ड की गयी है। प्रजनन के दृष्टिकोण से सांप मुख्यतः अण्डे देने वाले जीव हैं लेकिन दुनिया की कुछ सर्प प्रजातियाँ ऐसी भी हैं जो अण्डे ना देकर सीधे नवजात बच्चों को जन्म देती हैं। वाइपर और बोइडे फैमिली के अधिकांश सांप अण्डे देने के बजाय बच्चों को जन्म देने के लिए जाने जाते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाने वाला मूल प्रजाति का रसेल्स वाइपर (घोणस) सांप एक बार में औसतन 40 से लेकर 60 तक की संख्या में बच्चे देता है। इसी तरह बोआ प्रजाति का रेड सैंड बोआ (दोमुहां सांप) भी एक बार में 6 से 14 बच्चे देता है। दुनिया का सबसे भारी सांप ग्रीन एनाकोंडा भी अण्डे ना देकर बच्चों को जन्म देता है। सचमुच सांपो की दुनिया अद्भुत एवं विचित्र है।

हमारा भारत देश जैवविविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और सम्पन्न राष्ट्र है जहां दुनिया की 7–8 फीसदी प्रजातियाँ पायी जाती हैं और इस अनूठी जैव–सम्पदा में सांपो की भी अच्छी खासी तादाद मौजूद है। भारत 300 से भी ज्यादा प्रजातियों के सांपो की शरणस्थली है। हिमालय जैसे पहाड़ हों या फिर मैदानी भू–भाग, पश्चिमी घाट के वर्षावन हों या फिर थार के तपते रेगिस्तान भारत के हर हिस्से में सांपो की आबादी फैली हुई है। ब्लाइंड स्नेक (अंधा सांप) जैसे आधे इंच के सांप से लेकर रेटिकुलेटेड पॉयथन जैसे 30 फीट लम्बे सांप भारत की अनोखी सरीसृप जैवविविधता के हिस्से हैं। कोबरा, करैत और वाइपर आदि 17–18 फीसदी सर्प प्रजातियाँ ही भारत में विषैली हैं बाकी सभी विषहीन हैं। भारतीय नाग (इंडियन स्पेक्टक्लड कोबरा), सामान्य करैत (कॉमन क्रेट), धामन (इंडियन रैट स्नेक), दोमुंहा सांप (रेड सैंड बोआ), घोणस (रसेल्स वाइपर), एशियाई जल सांप (चेकर्ड कीलबैक), हरहरा (बफ स्ट्रिप्ड कीलबैक), सांखड़ सांप (कॉमन वोल्फ स्नेक) आदि भारत के हर क्षेत्रों में पाये जाने वाला सामान्य सांप है। भारतीय नाग को हमारी सनातन संस्कृति में अत्यंत महत्वपूर्ण दर्जा दिया गया है। फन काढ़ने की कला और गर्दन के पीछे बना चश्मे अथवा खड़ाऊं जैसा आकार ही इसकी आकर्षक पहचान है। जंतुओं के वैज्ञानिक वर्गीकरण की दृष्टि से नाग (कोबरा) नाजा जेनेरा का सर्प है जिसकी हमारे देश में चार प्रजातियाँ पायी जाती हैं। दुनिया का सबसे लम्बा विषैला सांप किंग कोबरा भी भारत में पाया जाता है जो कि हमारे देश की समृद्ध जैवविविधता का प्रतीक है। देश के हिमालयी, पूर्वोत्तर राज्यों एवं दक्षिण भारत के वर्षावनों में पाया जाने वाला किंग कोबरा भारत का राष्ट्रीय सरीसृप जीव घोषित किया गया है। किंग कोबरा दुनिया का एकमात्र ऐसा सांप है जो घोंसले बनाता

है। पर्यावरण संतुलन एवं मानव जीवन में सांपो की अहम भूमिका है। धार्मिक, आर्थिक, प्राकृतिक, कृषि, चिकित्सा आदि हर क्षेत्रों में सांपो का अतुलनीय योगदान है। सांप पारिस्थितिकी–तंत्र को संतुलित बनाये रखने में विशिष्ट भूमिका निभाते हैं इसी कारण इन्हें पारिस्थितिकी–तंत्र का इंजीनियर भी कहा जाता है। प्रकृति निर्धारित खाद्य–श्रृंखला के तहत सांप शिकार एवं शिकारी दोनों घटकों के रूप में कार्य करते हैं। चूँकि सांप एक मांसाहारी प्राणी है अतः ये पर्यावरण में जीव–जंतुओं की आबादी को

नियंत्रित बनाये रखते हैं। सांपो का मुख्य आहार चूहे, गिलहरी, मेंढक, छिपकली, मछली, पक्षी, केकड़े, कई स्तनधारी और कीट–पतंगे आदि प्राणी हैं। धरती ग्रह पर जीव–जंतुओं का एक संतुलित तादाद में बना रहना बेहद जरूरी है अतः इस लिहाज से सांप जैसे मांसाहारी प्राणी का महत्व और भी बढ़ जाता है। खाद्य–श्रृंखला में सांप कई प्राणियों के आहार भी हैं। बाज, चील, उल्लू, नेवले, जंगली बिल्ली आदि कई जंतु जीवित रहने के लिए सांपो पर निर्भर हैं। यहाँ तक कि सांप खुद अन्य सांपो के भी आहार हैं। किंग कोबरा और अहिराज सांप तो मुख्यतः सांपो को ही अपना भोजन बनाते हैं। कृषि–क्षेत्र में सांपो की सबसे अहम भूमिका है। सांप चूहों का भक्षण कर फसल एवं खाद्यान्न की सुरक्षा करते हैं इसीलिए ये किसानों के परम हितैषी जीव माने जाते हैं। अक्सर खेत–खलिहानों और ग्रामीण परिवेश में पाया जाने वाला धामन सांप मुख्यतः चूहों से ही अपना भरण–पोषण करता है। चूहा धामन सांप का मुख्य प्राकृतिक आहार है और ये तेजी से चूहों का नियंत्रण करने में माहिर है इसी कारण इसे अंग्रेजी में इंडियन रैट स्नेक की संज्ञा दी गई। इसी तरह दोमुहां सांप जिसे अंग्रेजी में रेड सैंड बोआ कहते हैं खेतों–मेड़ों में चूहों की बिलों में रहता है और उनका सफाया करता है। फसल और अनाज को भारी क्षति पहुंचाने वाले चूहों का भक्षण कर ये सांप किसानों की मदद करते हैं। चूहे हर साल करोड़ों टन अनाज की बर्बादी कर देते हैं। एक सरकारी अनुमान के मुताबिक भारत में चूहों द्वारा प्रतिवर्ष 2.4 मिलियन टन से लेकर 26 मिलियन टन तक खाद्यान्न की हानि होती है। चूहे खेतों–क्यारियों में सब्जी को तेजी से कुतर कर उसे नष्ट कर देते हैं। खेतों में बोए गए बीजों को खोदकर चूहे खा जाते हैं जिससे उपज उत्पादन में भारी गिरावट आ जाती है। किसानों के इन चूहों जैसे प्राकृतिक शत्रुओं का नियंत्रण कर ये सांप खाद्यान्न एवं फसल सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देतें है। अंधा सांप (ब्लाइंड स्नेक) दीमकों एवं चीटियों की संख्या को नियंत्रित करता है। इसी भूमिका के चलते सांप किसानों के मित्र कहे जाते हैं। सर्पदंश चिकित्सा में सांपो का विष एंटीवेनम तैयार करने हेतु प्रयोग में लाया जाता है। हर साल हमारे देश में लगभग 58 हजार लोग सर्पदंश के चलते अपनी जान गंवा देते हैं। भारतीय नाग, कॉमन करैत, रसेल्स वाइपर और सॉ–स्केल्ड वाइपर भारत में सर्पदंश के लिए जिम्मेदार चार सबसे विषैले सांप हैं जिन्हें बिग–4 स्नेक कहा जाता है। एंटीवेनम ही सर्पदंश का एकमात्र प्रामाणिक वैज्ञानिक इलाज है जो कि इन अत्यंत विषैले सांपो के विष से ही निर्मित होता है अतः सांप चिकित्सकीय दृष्टि से भी बेहद विशिष्ट स्थान रखते हैं।

ये बेहद अफसोसजनक बात है कि मानव जीवन एवं पर्यावरण संतुलन में सांपो की इतनी महत्वपूर्ण भूमिका होते हुए भी हम इन्हें अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझते हैं। जंगलों की अंधाधुंध कटाई, शहरीकरण, प्राकृतिक आवासों के विनाश, रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के प्रयोग, अवैध तस्करी आदि कारणों के चलते आज सांपो के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। सदियों से सांपो को लेकर मानव–समाज में प्रचलित तमाम तरह की मिथकीय धारणाओं की वजह से अनेकों सांप बेरहमी से मार दिए जाते हैं। ये कहने में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सांप ही धरती ग्रह पर एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसके बारे में दुनियाभर में सबसे ज्यादा भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। धामन अथवा घोड़ापछाड़ (इंडियन रैट स्नेक) नामक विषहीन सांप के बारे में ये भ्रांति प्रचलित है कि इसके पूंछ में विष होता है अतः इस अंधविश्वास की बदौलत लोग इस कृषक मित्र सर्प को देखते ही मार देते हैं जबकि वास्तविक वैज्ञानिक सच्चाई यही है कि दुनिया के किसी

भी सांप के पूंछ में विष नहीं पाया जाता है। इसी तरह दोमुंहा सांप (रेड सैंड बोआ) को अधिकांश लोग भ्रमवश सच में दो मुंह वाला सांप समझते हैं जबकि वैज्ञानिक सच्चाई ये है कि उसकी गोल व कुंद संरचना वाली पूंछ की बनावट प्राकृतिक रूप से उसके मुंह जैसी दिखती है लेकिन वो पूंछ ही है ना कि उसका दूसरा मुंह। नाग सांप द्वारा दूध पीना भी मानव–समुदायों के बीच फैला बहुत पुराना अंधविश्वास है जिसका फायदा उठाकर सपेरे अपनी आजीविका के लिए सांप और मनुष्य दोनों का शोषण करते हैं। ये एक वैज्ञानिक तथ्य है कि सांप एक मांसाहारी प्राणी है जो दूध नहीं पीता लेकिन इसके बावजूद सपेरे नाग (कोबरा) के विषदंत तोड़कर उसे अपनी कैद में कई दिनों तक भूखा–प्यासा रखते हैं और इस तरह अपने प्राकृतिक आहार अर्थात् मांस के अभाव में कई नाग सर्प घुट–घुट कर दम तोड़ देतें हैं। विषैले सांपो के लिए विष प्रकृति का वरदान है। सर्पविष सांपो को शिकार करने, भोजन पचाने एवं शिकारियों से आत्मरक्षा हेतु प्रकृति ने प्रदान किया है। सांपो की विभिन्न प्रजातियों की उचित पहचान ना होना भी इनके अस्तित्व के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। अधिकांश लोग विषैले एवं विषहीन सर्प के बीच फर्क नहीं समझ पाते इसलिए वो विषहीन सांप को भी विषैला समझकर मार देते हैं। अक्सर देखा जाता है कि लोग धामन जैसे विषहीन सांप को नाग नामक अत्यन्त विषैला सांप समझकर मार दिया करते हैं। इसी तरह सांखड़ (कॉमन वोल्फ स्नेक) नामक विषहीन सांप करैत जैसे अत्यंत विषैले सांप के भ्रम में इंसानो के प्रकोप का भागी बनता है। अजगर (इंडियन रॉक पॉयथन) जैसे विषहीन सांप को लोगों द्वारा घोणस (रसेल्स वाइपर) जैसे विषैले सांप समझने की भूल में अपनी जान गंवानी पड़ती है। बारिश के मौसम में घर के आंगन और फर्श पर दिखाई देने वाला केचुए से मिलता–जुलता बेहद छोटे आकार का चमकीला सांप जिसे ब्लाइंड स्नेक (अंधा सांप) के नाम से जाना जाता है लोगों द्वारा भ्रमवश उसे करैत व कोबरा जैसे अत्यंत विषैले सांपो का बच्चा समझकर मार दिया जाता है जबकि गैर विषैले ब्लाइंड स्नेक का आकार ही इतना होता है जो कि दुनिया की सबसे छोटी सर्प प्रजातियों में से एक है। खाल, मांस एवं पारंपरिक चिकित्सा के उद्देश्य से सांपो की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली अवैध तस्करी भी अजगर और सैंड बोआ आदि कुछ प्रजातियों के लिए गंभीर संकट है। दोमुंहा सांप को लेकर चीन आदि देशों में ये मान्यता है कि इसके सेवन से यौनशक्ति में वृद्धि होती है और बुढ़ापे को भी दूर किया जा सकता है। हालांकि इस बात का कोई भी वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है बावजूद पिछले कुछ दशकों से इसका धड़ल्ले से अवैध व्यापार किया जा रहा है जिसके चलते इसकी आबादी में लगातार गिरावट आ रही है। वन्यजीवों के संरक्षण हेतु समर्पित वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन सोसाइटी नामक संस्था द्वारा भारत में रेड सैंड बोआ का अवैध

व्यापार शीर्षक से जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2016 से वर्ष 2021 के बीच दोमुहां सांप की तस्करी के कुल 172 मामले दर्ज किए गए हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार रेड सैंड बोआ (दोमुहां सांप) का अवैध व्यापार 18 भारतीय राज्यों और 87 जिलों में फैला हुआ है जिनमें सर्वाधिक मामले महाराष्ट्र राज्य से दर्ज किए गए हैं जबकि उत्तर प्रदेश दूसरे स्थान पर है। इस तरह से देखें तो मनुष्यों की लालच, अज्ञानता और भौतिक विकास की अंधी होड़ ही सर्प प्रजातियों पर मंडराते संकटों हेतु सर्वाधिक जिम्मेदार है।

पर्यावरण संतुलन में सांपो की अहम भूमिका को ध्यान में रखते हुए आज हमें इनका संरक्षण करने की विशेष आवश्यकता है। सांप हमारे दुश्मन नहीं बल्कि पर्यावरण के हितैषी जीव हैं अतः हमें उनके प्रति अपनी धारणाओं और मानसिकता को बदलना होगा। सांपो के संरक्षण हेतु सबसे जरूरी कदम है जनजागरूकता क्योंकि इन सरीसृप प्राणियों हेतु मिथक एवं भ्रांतियाँ ही सबसे बड़ा खतरा है। आज के वैज्ञानिक युग में भी अधिकांश लोग सांपो को हेय एवं नफरत की दृष्टि से देखते हैं और उन्हें इस सृष्टि का सबसे तुच्छ व महत्वहीन प्राणी मानते हैं। हमें सांपो के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन कर उनके प्राकृतिक महत्व को समझने का प्रयास करना चाहिए। हालांकि सांपो के संरक्षण को लेकर अभी भी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उतनी दिलचस्पी दिखाई नहीं देती फिर भी कुछ वैज्ञानिक और गैर–सरकारी संगठन इस दिशा में प्रयास कर रहे हैं। जीव–जंतुओं पर मंडराते संकटों के मद्देनजर उन्हें कानूनी सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से हमारे देश में भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 जैसा कठोर कानून बनाया गया है। ये अधिनियम वन्यप्राणियों के संरक्षण हेतु एक कानूनी बाध्यकारी नियम है। इस अधिनियम के अंतर्गत अजगर, सैंड बोआ (दोमुहां सांप), भारतीय नाग, रसेल्स वाइपर, धामन, किंग कोबरा आदि सर्प प्रजातियों को संरक्षित श्रेणी में रखा गया है और यदि कोई भी व्यक्ति इस अधिनियम की संरक्षण सूची में शामिल सांपो का शिकार, तस्करी एवं व्यापार करते हुए पाया जाता है तो उसके लिए सख्त दण्ड व जुर्माने का प्रावधान है। दोमुंहा सांप की आबादी पर मंडरा रहे संकटों को देखते हुए इसे आईयूसीएन की लाल सूची में संकटाय प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। वन्यजीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन अर्थात् साइट्स (CITES) जैसे वैश्विक संगठन के तहत भी सांपो के अवैध व्यापार पर कड़े प्रतिबंध लगाये गये हैं। वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो द्वारा सांपो की खाल एवं मांस की तस्करी करने वाले गिरोहों का पर्दाफाश कर उन्हें सरकार द्वारा सजा दिलवाई जाती है। सर्प संरक्षण के प्रति जनजागरूकता को बढ़ावा देने हेतु प्रतिवर्ष 16 जुलाई को विश्व सर्प दिवस भी मनाया जाता है। ये कानूनी कदम एवं तमाम प्रयास तभी सार्थक हो सकतें हैं जब लोग खुद सांपो के महत्व एवं संरक्षण को लेकर संवेदनशील हों। हमें चाहिए कि यदि हमारे घर में कोई सांप घुस आये तो अपने स्थानीय क्षेत्र के सर्पमित्र (स्नेक कैचर) को बुलाकर उसे सुरक्षित रेस्क्यू करवायें ताकि मनुष्य एवं सर्प दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। हमारा ये भी फर्ज है कि यदि हमें सांपो की तस्करी की घटना दिखे तो शीघ्र ही पुलिस अथवा वन विभाग को सूचित करें। जीव विज्ञान की दृष्टि से सांप हमारे पूर्वज हैं जो हम मनुष्यों से लाखों–करोड़ों वर्षों पहले से ही धरती ग्रह पर रह रहे हैं। हम सभी मनुष्य एवं जीव–जंतु प्रकृति में सहअस्तित्व के आधार पर आपस में नैसर्गिक रूप से जुड़े हुए हैं अतः हमारा वजूद भी इन्हीं सांपो जैसे प्रकृति हितैषी प्राणियों की बदौलत कायम है। सांपो को भी प्रकृति में स्वच्छंद रूप से जीने का अधिकार है। यदि अभी भी हम सांपो के संरक्षण को लेकर सचेत नहीं हुए तो उनकी प्रजातियाँ के विलुप्त होने का खतरा बढ़ जायेगा जो कि हमारे पर्यावरण, हमारी कृषि एवं हमारी जैवविविधता के लिए बेहद नुकसानदायक साबित होगा और इसका खामियाजा समस्त मानव जाति को भुगतना पड़ेगा।

संप्रति : पर्यावरणविद
(विध्य इकोलॉजी एंड नेचुरल हिस्ट्री फाउंडेशन संस्था)
ईमेल : harendrasrivastava365@gmail.com
मो० : 87360089561

◆◆◆

भारत और नेपाल का पर्यावरणीय पर्यवेक्षण

–संतोष बंसल

⟶ आज पूरे विश्व में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा पर्यावरणीय चिंतन पर है, क्योंकि पिछले दिनों जलवायु परिवर्तन के कारण घटित घटनाओं तथा रिकॉर्ड तोड़ ठण्ड के कारण जन हानि हुई है। यह सबकी चिंता का विषय है। यद्यपि कई वैज्ञानिक इस सन्दर्भ में अपनी चिंताएं व्यक्त करते रहें हैं, किन्तु राजनीतिक तौर पर अधिकतर देश इस पर चुप्पी साधें हुए हैं। विश्व के नेताओं की चुनाव घोषणाओं और सभाओं में इस विषय पर कोई ऐलान नहीं होता, जिससे लगता है उन्हें पर्यावरण की परवाह नहीं। अब जबकि 31 अक्टूबर 2021 से ब्रिटेन के ग्लास्गो में 13 दिवसीय जलवायु वार्ता काप–26 शुरू होने जा रही है, तो सबकी निगाहें 120 देशों के राष्ट्राध्यक्षों एवं शासनाध्यक्षों पर लगी हैं। हालांकि कई वर्ष पूर्व सन 2015 में इस विषय पर किये गए प्रयासों में पेरिस समझौते के तहत कई स्थानों पर प्रत्येक वर्ष कॉन्फ्रेंस हुई हैं और दुनिया के तमाम देशों ने कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के अपने लक्ष्य घोषित किये थे। लेकिन मैड्रिड में हुए जलवायु परिवर्तन सम्मलेन में पर्यावरण खतरों को लेकर नए आंकलन ज्यादा चिंताजनक है। क्योंकि सभी राष्ट्रों को यह विचार करना है कि क्या पेरिस समझौते के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए मौजूदा घोषणाएं काफी हैं ? या फिर सभी देशों को नए सिरे से अपने कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्यों को निर्धारित करना होगा। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की हालिया रिपोर्ट कहती है कि पेरिस समझौते के तहत किये जा रहे उपायों से लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकेगा। उनका आंकलन कहता है कि दुनिया ने कार्बन उत्सर्जन कम करने के जो लक्ष्य तय किये हैं, उन्हें पांच गुना करना होगा। क्योंकि बाढ़, सूखा, तूफान, गर्मी और सर्दी आदि से जो तबाही हो रही है, उससे हुई क्षति की भरपाई नहीं हो पाती। चूँकि यह संकट स्थायी किस्म का हो चुका है, इसीलिए यह सोच उठी है कि इसकी क्षतिपूर्ति के लिए एक स्थाई तंत्र बनना चाहिए। यह तंत्र संयुक्त राष्ट्र द्वारा विकसित किया जाए और सभी राष्ट्र उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित कर सके। चिंता यह कि वैश्विक नीति निर्माता छोटे द्वीपों, गरीब व् विकासशील देशों की चिंताओं को पहचानने में चूक कर रहें हैं।

एक रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि आने वाले समय में चरम मौसमी कठिनाइयों का आना सबसे बड़ा खतरा होगा, जो स्वास्थ्य के लिए बड़ी चुनौती साबित होगा।

इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन की जिन घटनाओं ने इस साल दुनिया में तबाही मचाही है, उससे वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग में और भी बड़ा खतरा देख रहें हैं। क्रिश्चियन एड की रिपोर्टके अनुसार, जलवायु परिवर्तन की वजह से मौसम में हुए बदलाव के कारण 2019 में लाखों लोगों की मौत हुई और लाखों लोग घायल व विस्थापित हुए। विनाशकारी सूखे, बाढ़, आग, आंधी और चक्रवातों की 15 बड़ी घटनाओं की पहचान की गयी है जिनमे से प्रत्येक में एक अरब डॉलर से अधिक की क्षति हुई। (1–जलवायु परिवर्तन की 15 घटनाओं ने तबाही मचाई– पृष्ठ–9, हिंदी हिन्दुस्तान अखबार 27 दिसंबर 2019) इस रिपोर्ट में दक्षिणी हवाओं के थमने से उत्तर भारत में ठण्ड की भी हैड लाइन्स थी, जिसमें उत्तर भारत में कड़ाके की ठण्ड के पीछे, जेट स्ट्रीम के प्रवाह में तीव्रता और दक्षिण–पश्चिम गर्म हवाओं का कमजोर पड़ना है। अब यह प्रश्न लाजिमी है कि यह जेट स्ट्रीम क्या है ? जेट स्ट्रीम पृथ्वी सहित कुछ ग्रहों के वायुमंडल में तेजी से बहने वाली हवा धाराएं हैं, जिनके बहाव में बदलाव का कारण वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन मानते हैं। नतीजा यह हुआ कि इन हवाओं में बदलाव के कारण भारत के कई क्षेत्रों में बर्फ की मोटी चादर बिछ गयी और कारगिल के द्रास में तापमान 0 से 30.2 डिग्री सेल्सियस नीचे रहा। एक शोध में दावा किया गया है कि भारत के समानांतर बसे अन्य देशों में भी यह प्रभाव नजर आ रहा है। जनवरी 2020 में दावोस में विश्व आर्थिक मंच सम्मेलन के दौरान पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थन्बर्ग ने दुनिया के सर्वाधिक अमीर और ताकतवर देशों की जमकर खिंचाई की। उन्होंने इन ताकतवर मुल्कों पर जलवायु संकट को नजरअंदाज करने का आरोप लगाया और जलवायु हड़ताल का आयोजन कर विरोध जताया। वैसे दुनिया भर के नेता पृथ्वी को बचाने की बात करते हैं, फिर कूटनीतिज्ञ यह कहते हुए कुछ करने से बच निकलते हैं कि इसके लिए जरुरी बलिदान दूसरे देशों को देना चाहिए, वे तो सिर्फ विकास चाहते हैं।

इसके अतिरिक्त पिछले दो वर्षों से विश्व भर को आक्रान्त करने वाली महामारी ने हमें चेता दिया है कि हमने पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीरता से नहीं लिया। जिसका नतीजा सम्पूर्ण मानवता ने भोगा और झेला, इसके बावजूद भी कोविड–19 से निजात हासिल नहीं हो पा रही है। चूँकि धरती और मानव का निर्माण पंचभूत तत्वों से निर्मित है, किन्तु ये पाँचों तत्व– आकाश, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि या प्रकाश वर्तमान समय में प्रदूषित हो रहें हैं। यद्यपि हिमालय देश की हवा, मिट्टी, पानी की भी चिंता करता है। इस विषय को अनेक आन्दोलनों व् अभियानों ने सामने रखा, लेकिन वाजिब परिणाम सामने नहीं आए हैं। (लेख– हिन्दुस्तान अखबार 21 अक्टूबर 2021 क्योंकि हिमालय को बहुत हल्के में लेने लगे हैं हम श्री अनिल जोशी,पर्यावरणविद) तब आगामी पीढ़ी को हम क्या प्रदान करेंगे ? इस प्रश्न के तहत भारत और नेपाल में हिमालय के प्रति एक नीति होनी चाहिए, जो लोगों को जोड़कर बनाई जाए। लोगों की आवश्यकताओं के साथ ही हिमालय की प्राकृतिक स्थिति का भी ध्यान रखा जाए, क्योंकि पहाड़ों पर ज्यादातर निर्माण मैदानी वास्तुशिल्प की तरह कराये गए हैं और भवन, सड़क बनाने में जरूरी सावधानी रखी जानी थी, वह नहीं रखी गयी। ऐसे में साहित्यकारों का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है एवं उनकी भूमिका निर्वहन में व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों अहम् हो उठते हैं। इसमें हम सबको अपनी परम्परागत रीतियों और नीतियों की याद दिलानी होगी, जिसमे प्रकृति और नदियों की पूजा में उनके संरक्षण तथा सुरक्षा की बात कही गयी थी और वायु शुद्धि के लिए वृक्षारोपण और हवन आदि तथा जल संचयन के लिए नहरों, बावड़ियों तथा प्याऊ इत्यादि की व्यवस्था को पुनर्जीवित करने की गुहार लगानी होगी। मैंने स्वयं अमेरिका प्रवास के दौरान कैलिफोर्निया राज्य की सैन फ्रांसिस्को सिटी में पानी की बोतलों पर रोक लगाकर, भारतीय प्याऊ की तरह पीने के पानी के प्रबंध को देखा है। इन्ही पारम्परिक सन्दर्भों में हम भारत और नेपाल की पर्यावरणीय चिंताओं से पूर्व, दोनों देशो के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और भोगौलिक संबंधों की चर्चा करेंगे।

अगर हम अपने इतिहास पर एक नजर डालें तो पाएंगे कि नेपाल अखंड आर्यावर्त का ही एक हिस्सा था और दोनों देशों की संस्कृति एवं आपसी सम्बन्ध एक दूसरे से जुड़े हुए थे। मिथकीय कथाओं के अनुसार परमात्मा शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ में उनका धड़ तथा पशुपतिनाथ मंदिर में बाकी आधा विग्रह प्राण प्रतिष्ठित है जो नेपाल की राजधानी काठमांडू में स्थित है और इसी कारण इसे देवघर भी कहा जाता है। भारत की प्रसिद्ध पौराणिक कथा रामायण के स्त्री पात्र सीता की जन्म स्थली मिथिला नेपाल में है और आज भी जनकपुर में सीता का मंदिर स्थित है। महात्मा बुद्ध का जन्म भी नेपाल के लुम्बिनी नामक स्थल पर हुआ था। दूसरे दोनों

देशो के राजवंशों का सदैव आपसी रिश्ता रहा है और विवाह जैसा निकटतम सम्बन्ध अक्सर राजपरिवारों में हुआ है। तेरहवीं सदी में जब सारा भारत छोटे–छोटे टुकड़ों में बंटा हुआ था, तब तिरहुत के राजा शिवसिंह की पराजय के बाद राजपरिवार के साथ, मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति को राजा पुरादित्तीय के राज में नेपाल की तराई में प्रश्रय मिला। जहां कई वर्षों तक रहने के दौरान उन्होंने बहुत सी साहित्यिक कृतियों की रचना की, जिनकी पांडुलिपि यहाँ के संग्रहालय में अब भी सुरक्षित रखी हुई हैं। लिखनावली नामक कृति में उन्होंने चिट्ठी–पत्री लेखन से लोगों को परिचित करवाया एवं श्रीमद्भागवत की स्वयं हाथ से पाण्डुलिपियाँ तैयार की थी। लेकिन अठारहवीं सदीं में भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी ने नेपाल को भी कब्जे में ले लिया था, किन्तु 1815 में गोरखाओं ने इनके विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी, जिसका अंत सुगौली संधि के रूप में हुआ। बाद में 1904 में अंग्रेजों ने पहाड़ी राजाओं से समझौता करके नेपाल को एक अलग आजाद देश का दर्जा दे दिया। जिससे वह भारत से तो अलग हो गया, किन्तु ब्रिटिश राज्य से मुक्त वह 1947 में ही हुआ। यद्यपि नेपाल में लोकतंत्र समर्थक आंदोलन होते रहे, किन्तु सन 1991 में राजशाही शासन का अंत हुआ और बहुदलीय संसद का गठन हुआ।

अगर भौगोलिक दृष्टि से देखे तो पाएंगे कि भारत और नेपाल की भौगोलिक सीमाएं एक–दूसरे को छू रही हैं। हिमालय पर्वत श्रृंखला भी दोनों देशों की आपस में मिलती हैं। हिमालय की 500 मील लम्बी श्रृंखला और इसके साथ सीमा पर सभी चोटियां भौगोलिक निकटता दिखाती हैं। नेपाल हिमालय पर्वत श्रृंखला के चार क्षैतिज विभाजनों में पूर्व में असम और पश्चिम में कुमाऊं हिमालय में स्थित है। दक्षिण में बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य और पूर्व में पश्चिम बंगाल, सिक्किम स्थित हैं। माउंट एवेरेस्ट, कंचनजंगा चोटियाँ तथा कोशी, बागमती, गंडक नदियाँ हिमालय से निकलती हैं और इन नदियों में बाढ़ के कारण होने वाली समस्याओं का सामना दोनों देशों को एक समान करना पड़ता है। नेपाल में नदियों की बढ़ी जलराशि से बिहार में अररिया, पूर्णिया और कटिहार सहित बारह जिलों में लोग इस बाढ़ से प्रभावित होते हैं। इस प्रकार पर्वत और उससे निकलने वाली नदियाँ तथा इनसे सम्बंधित पर्यावरणीय प्रभाव से कोई भी अछूता नहीं रहता। इसके साथ पिछले दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हई तस्वीर में माउंट एवेरेस्ट पर पर्वतारोहियों की लम्बी कतार को देख कर कई प्रश्न उभरे थे। उनमे से एक प्रश्न उन पर्वतारोहियों द्वारा प्रयुक्त प्लास्टिक और कूड़ा–करकट का ढेर था, जो पर्वत श्रृंखलाओं में एकत्रित हो गया था। दूसरा प्रश्न इस भीड़ और उनके द्वारा फेंके गए वेस्ट के निस्तारण का था। चूँकि माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने के लिए भी दोनों देशो से रास्ता है, इसीलिए पर्वत आरोहण के लिए माउंट ट्रेनिंग कॉलेज के प्रशिक्षार्थियों को साझा कार्यक्रम नियोजित करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध तीर्थस्थल कैलाश मानसरोवर का रास्ता नेपाल से होकर जाता है, इसीलिए भारतीय श्रद्धालुओं की यात्रा में नेपाल प्रशासन की मदद और सहयोग सदैव होती है। इसमें पर्यटन की सुविधाओं तथा सूचनाओं के लिए, इनकी सारी व्यवस्थाएं और योजनायें मिलकर एक समान बनानी पड़ती हैं। ऐसे में जब भारत और नेपाल की सीमाएं विशाल हिमालय पर्वत श्रेणी से समान रुप से आच्छादित हैं तो दोनों देशों को प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए साझा रणनीति तैयार करनी चाहिए। क्योंकि जब कभी इन क्षेत्रों में तूफान या भूचाल आता है तो उसका नतीजा दोनों देशों के नागरिकों को भुगतना पड़ता है। इन भूगर्भीय दुर्घटनाओं से हिमस्खलन या भूस्खलन आदि तथा पर्वतों पर ग्लेशियरों के पिघलने से बाढ़, नदियों के बांधों में दरार इत्यादि शामिल है। कुछ वर्ष पूर्व भारत ने भूकंप पीड़ितों के लिए बचाव, राहत, पुनर्वास योजनायें चलाई थी और पर्वतों और पहाड़ियों में दवा तथा खाद समाग्री इत्यादि पहुंचाई थी। लेकिन इन आपदाओं के साथ–साथ हमें अन्य विपत्तियों के समय भी सबकी बेसिक जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि जब–तब पहाड़ दरकते, टूटते और गिरते हुए लोगों के जीवन में ऐसी तबाही मचाते हैं, जिसके लिए सरकारी आपदा प्रबंधन विभाग का भी सब संसाधनों से लैस और सक्षम होना अत्यंत जरूरी है। पर्वतीय जीवन के साथ तलहटी और तराई क्षेत्रों में भी लोगो की जान–माल की रक्षा के लिए भी एक–दूसरे की मदद के लिए तत्पर रहना चाहिए। क्योंकि वनों की अंधाधुंध कटाई ने पहाड़ों के वातावरण को असंतुलित, वन्यजीवों को असुरक्षित और स्थानीय जन जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया है। ऐसे में अपने साझा कार्यक्रमों के द्वारा पर्वत श्रृंखला और देश के अन्य हिस्सों में पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में मिलकर काम किया जाना चाहिए। दोनों देश व्यापक वन रोपण कार्यक्रम के माध्यम से वन्यजीवन को पुनर्जीवित करके

नदियों के कटाव और बहाव को काफी हद तक रोक सकते हैं। नदियों को जोड़ने वाली परियोजनाओं के तहत बाढ़ के पानी का उचित इस्तेमाल करके मरुस्थलीकरण के बढ़ते खतरे से मिलकर सामना भी किया जा सकता है। बांधों और तटबंधों के कारण नेपाल में मानसून के मौसम में जलभराव या सैलाब की समस्या पैदा हो जाती है, जिसका संकट उन नदियों के जल निस्तारण के कारण भारत के बिहार राज्य में भी विकराल हो जाता है। इसके अतिरिक्त जीवन के इस बदलते सच को स्वीकार करने का समय आ गया है कि पानी को अब सस्ते और सरलता में नहीं लिया जा सकता। अगर अतिवृष्टि होने से अधिक बारिश कभी कहर ढाती है तो कहीं इसका अभाव सूखा कर देता है, जिससे कई राज्यों में अकाल के हालात भी बन जाते हैं। अब पुराने दिन नहीं रहे, जब पानी गली–कूचों, गाद–गदेरों में सरलता से मिल जाया करता था। उतना पानी अब उपलब्ध नहीं है और आज सारी दुनिया की दो–तिहाई आबादी साल भर में गर्मी के कुछ महीनों में पानी के संकट से गुजरती है, यानी सहज–सुलभ पानी अब एक दुर्लभ वस्तु की श्रेणी में आ गया है। इस तरह पानी के दो सवाल है– पहला उपलब्धता का और दूसरा गुणवत्ता का। वैसे पानी की कोई कमी नहीं है, पर उपलब्धता घट चुकी है। क्योंकि एक गणना के अनुसार, पानी जो वर्षा के रूप में हर साल मिलता है, उसका मात्र 15 फीसदी ही हम नदी, नालों और तालाबों में जुटा पाते हैं, बाकी का 85 फीसदी जल बहकर खराब हो जाता है। क्योंकि विकास के नाम पर सड़कों को बेहतर बनाने के लिए पानी के रास्ते रोक दिए गए और वर्षा का जो पानी मिटटी द्वारा सोख लिया जाता था, वह शहरों में जलभराव और बाढ़ का रूप अख्तियार कर लेता है। प्रसिद्ध पर्यावरणविद श्री अनिल जोशी का कहना है कि, इसका सीधा कारण बढ़ती आबादी, प्रबंधन का अभाव व् प्रकृति के जल संरक्षण के रास्तों के प्रति हमारी अनदेखी है। हालात ऐसे हो गए हैं कि दुनिया के कई देश पानी जुटाने के अनोखे रास्ते भी तैयार करने लग गए हैं। खाड़ी के लोग अब समुद्र के रास्ते हिमखंडों को ही अपने लिए भविष्य का पानी मान कर चल रहें हैं। पानी, जो सबसे आवश्यक वस्तु है, दुनिया के बड़े व्यापारों में से एक बन चुका है। (4– नजरिया कॉलम–पानी और पर्यावरण पर राजनीतिक चुप्पी के बाद हिन्दुस्तान अखबार) आज प्रति सेकंड पानी की 20,000 बोतलें बिकती हैं, जिसमें पानी की घटती गुणवत्ता ने आग में घी डालने का काम किया है। आंकड़े बताते हैं कि हमारे जलश्रोत इस कदर दूषित हो चुके हैं कि उनके दूषित जल के कारण कम उम्र के बच्चे अपना जीवन ही खो देते हैं। पर्वतों पर पर्वतारोहियों और पर्यटकों द्वारा इस्तेमाल की गयी पानी की खाली बोतलों के कारण प्लास्टिक प्रदूषण भी बड़ी समस्या बन चुका है। इन खाली बोतलों के जगह–जगह ढेर के निस्तारण के अलावा एक बड़ी चुनौती है– माइक्रो–प्लास्टिक। इसमें प्लास्टिक के बारीक कण जो आँखों से दिखाई नहीं देते, वे हवा में, जिसमे हम सांस लेते हैं, पानी में, जिसे हम इस्तेमाल करते हैं, उस भोजन में, जिसे हम खाते हैं, यानी हर जगह हैं। ये कण नदी, तालाब, समुद्र तथा हमारी जमीन और मिटटी में भी मिल चुके हैं। कूड़े को कंपोस्ट करते हुए उसमे मिला हुआ प्लास्टिक हमारे खेतों तक भी पहुँच जाता है, जिसकी वजह से जमीन में पाए जाने वाले केंचुए कमजोर होने लगे हैं। केंचुए हमारी जमीन की उर्वरता का ही नहीं, हमारी खाद्य सुरक्षा का भी बड़ा आधार हैं। एक तो वे मिट्टी में मौजूद कचरे को पौधों के लिए खाद में बदल देते हैं, दूसरे वे मिटटी को इस तरह पोला बनाते हैं कि उसमे मौजूद पेड़–पौधों की जड़े आसानी से सांस ले सकें। खासतौर पर बीजों के अंकुरण में इसकी सबसे बड़ी भूमिका होती है, (5– सम्पादकीय प्रदूषित जमीन पर –हिन्दुस्तान अखबार) इसीलिए हमें प्लास्टिक से मुक्ति की ओर तेजी से बढ़ने की जरुरत है। दूसरे पिछले तीन चार दशकों में शहरों के अनियोजित विकास ने भी बहुत सी पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है। उसके लिए लगातार बड़े–बड़े, हरे–भरे वृक्षों को काटा गया, जिससे दिवाली–दशहरा जैसे त्योहारों पर पटाखों के धुंए से प्रत्येक वर्ष हवा दमघोंटू हो जाती है। दूसरे शहरों में आबादी के अधिक घनत्व और ट्रांसपोर्ट की अत्यधिक संख्या से ट्रैफिक जाम के साथ वायु जहरीली हो जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली की यह बहुत बड़ी समस्या है, जिसके लिए दिल्ली सरकार हर साल सम–विषम नंबर की गाड़ियों के प्रयोग की व्यवस्था करती है। नेपाल की राजधानी काठमांडू में भी वाहन जनित भीषण प्रदूषण पैदा हो रहा है, जो नागरिकों के जीवन की कड़वी सच्चाई है। हवा के दूषित होने से हर उम्र की सांसों में यह जहर घुल रहा है और अनेक भयंकर रोगो को जन्म दे रहा है। ऐसे में दोनों देशो के कूटनीतिज्ञों को स्थायी समाधान तलाशना चाहिए।हालांकि प्रत्येक देश के अपने बड़े विकासीय आयामों के प्रोजेक्ट्स भी पर्यावरणीय चिंताओं यानी

प्रदूषण के कारण है, जिनमे जल–विद्युत योजनाएं तथा अंधाधुंध सड़को का निर्माण इत्यादि भी शामिल हैं। पहाड़ पर सड़क बनाने के लिए कटे हुए पत्थर की सड़क बनानी चाहिए, जबकि इसके उलटे उन पत्थरों को नदियों में गिराया जा रहा है। उनमे कही भी इस पहलू पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाता कि इस तरह के अनियोजित विकास से आने वाले समय में कुछ दुष्परिणाम भी सम्भव होंगे। जिसके कारण पहाड़ धसक रहे हैं एवं नदियाँ उफना रहीं हैं। दूसरे इस समस्या के स्थानीय मुद्दों के साथ कुछ कॉमन कारण भी हैं, जैसे वैज्ञानिकों का हाल में ही यह आंकलन आया है कि कार्बन उत्सर्जन के मामले में इंटरनेट का भी हाथ है। अब जबकि इंटरनेट सेवाओं की उपलब्धता को एक तरह से मानवाधिकार का दर्जा दे दिया गया है और लोगों को इस सेवा से वंचित करने को आज की दुनिया में कोई भी अच्छी नजर से नहीं देखता। इसके बावजूद इंटरनेट के कार्बन उत्सर्जन में कटौती के रास्ते तलाशने होंगे क्योंकि उनका मानना है कि, दुनिया के कार्बन उत्सर्जन में 3. 5 फीसदी की हिस्सेदारी इंटरनेट की है, जो बहुत तेजी से बढ़ रही है। अनुमान है कि 2040 तक यह बढ़कर 24 फीसदी हो जायेगी, जो शायद किसी भी देश के कार्बन उत्सर्जन से ज्यादा बड़ा उत्सर्जन होगा। वैज्ञानिक मानते हैं कि 5 –जी शुरू होते ही तरह –तरह के आंकड़ों की सुनामी आ जाएगी और उनकी प्रोसेसिंग के लिए ज्यादा बड़े ,ज्यादा क्षमता वाले और ज्यादा संख्या में ऐसे सर्वरों की जरुरत होगी, जो ऊर्जा खपत के मामलें में भी सबसे आगे होंगे। साल 2025 के लिए आकलन यह है कि तब तक दुनिया की बीस फीसदी ऊर्जा खपत इंटरनेट पर ही होगी, यानी जल्द ही इंटरनेट ग्लोबल वार्मिंग के लिए सबसे बड़ा खतरा बनने जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलनों और संधियों में जब हम कार्बन उत्सर्जन की बात करते हैं, तो अक्सर वहां इंटरनेट का जिक्र नहीं होता। (6– सम्पादकीय इंटरनेट का उत्सर्जन हिन्दुस्तान अखबार, 30 दिसंबर 2019) इसके बावजूद भी हमें कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए उद्योगों के साथ इंटरनेट को केंद्रीय भूमिका में रखना होगा। इसके लिए हमें इंटरनेट के कार्बन उत्सर्जन में कटौती के रास्ते तलाशने होंगे एवं इंटरनेट को पूरी तरह अक्षय ऊर्जा से जोड़ने का लक्ष्य तय किया जाना चाहिए। जिस तरह साइबर खतरे को सरकारी एवं कारपोरेट एजेंसियों ने अपने निर्णयों में शामिल किया है, उसी प्रकार किसी भी योजना के निर्माण, शहरों की प्लानिंग, बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं आदि में भावी जलवायु खतरों को चिन्हित किया जाना चाहिए। अभी जलवायु खतरों पर विश्वव्यापी चर्चा के बीच मैकिंसी ग्लोबल इंस्टिट्यूट की रिपोर्ट क्लाइमेट रिस्क एंड रिस्पांस में कहा गया है कि सार्वजनिक क्षेत्र हो या निजी क्षेत्र कोई भी निवेश करते समय, कोई भी बड़ी परियोजना बनाते समय जलवायु परिवर्तन के कारण पड़ने वाले प्रभावों का आंकलन करें। मैकिंसी की यह रिपोर्ट बेहद अहम है क्योंकि पर्यावरण चिंतन पर बहुत चिंताए व्यक्त की गयी हैं। मसलन खेती के लिए नयी जगह तलाश करनी होगी, नए पर्यटक स्थल विकसित करने होंगे और ऐसी तकनीकों की खोज करनी होगी जो जलवायु खतरों को कम करती है। इसमें प्रसिद्ध पर्यावरण कार्यकर्ता श्री ज्ञानेंदर रावत का कथन विशेष उल्लेखनीय है, आज जरुरी है कि पर्यावरण से जुड़े कानूनों का सख्ती से पालन किया जाए। आपदाओं से निपटने की तैयारी के साथ ही आपदाओं के साथ जीने के तौर–तरीकों का ध्यान रखा जाए और उसी के अनुरूप नीतियां बनाई जाएँ। (7– नजरिया कलम– बड़ी आपदाओं के लिए हमें तैयार रहना चाहिए– हिन्दुस्तान अखबार,30 दिसंबर 2019) अंततः इन सबके साथ हमें अपनी परम्परागत व्यवस्थाओं की ओर लौटते हुए उन्हें पुनर्जीवित करना होगा। इस प्रकार हम देखते है उपर्युक्त पर्यावरणीय चिंताए और समस्याएं ऐसी हैं, जो भारत और नेपाल दोनों देशो की लगभग एक समान हैं एवं उनके लिए पर्याप्त चिंतन की आवश्यकता है, जिससे इनके निवारण का कार्यक्रम साझा या सहभागिता में तय हो सके।

संदर्भ सूची –

1 – खबर –हिन्दुस्तान अखबार, 27 दिसंबर 2019

2 – कादम्बिनी पत्रिका – दिसंबर 2019 अंक

3 – नजरिया – 20 अगस्त 2018, हिन्दुस्तान अखबार

4 – सम्पादकीय – 30 दिसंबर, 2019 हिन्दुस्तान अखबार

5 – संपादकीय –हिन्दुस्तान अखबार

6 – सम्पादकीय–हिन्दुस्तान अखबार

7 – नजरिया – 31 दिसंबर 2019

–पता

ए 1/7 मियांवाली नगर

पश्चिम विहार, दिल्ली–110087

मो. 8860022613

◆◆◆

क्या रहने लायक नहीं रहे महानगर

– शिवचरण चौहान

⟶ भारत के महानगरों की हवा विषैली पाई गई है। कोलकाता ,बेंगलुरु और कानपुर जैसे शहर भी खतरनाक स्तर पर प्रदूषित हैं,। दुनिया भर के अखबारों, पत्रिकाओं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में यह खबरें प्रमुखता से दिखाई जा रही है। किंतु सबक लेने के लिए ना तो सरकार और ना आम लोग तैयार हैं। कई सालों से यह सवाल उठता रहा है कि क्या हमारे महानगर अब मनुष्यों के रहने लायक नहीं रहे? दिन पर दिन प्रदूषित होती हवा खतरनाक होती जलवायु के कारण अब आदमी कहां जाकर रहेगा जहां उसकी जान सुरक्षित रह सके। क्या अब छोटे–छोटे गांव बसा कर झोपड़ी डालकर रहने के दिन आ गए हैं! क्या फिर अरण्य संस्कृति जन्म लेगी। बहुत पहले बेंगलुरु वासियों को चेतावनी दी गई थी कि सन 2025 तक बैंगलोर (बंगलुरु) मनुष्यों के रहने लायक शहर नहीं रह जाएगा! आज यही स्थिति दिल्ली सहित देश के अनेक महानगरों की हो गई है। अनेक महानगर अब रहने लायक नहीं रहे, इनका पर्यावरण बहुत खराब हो चुका है और ऑक्सीजन का लेबल स्तर रोज घटता जा रहा है। सरकारें सिर्फ वादे, वादे और वादे करती हैं। आम जनता भी सब देख सुन कर भी अपनी तरफ से खुद सुधार नहीं करना चाहती। मोटर गाड़ियों का प्रयोग धुआंधार किया जा रहा है। विकास के नाम पर लगाए गए कल–कारखाने जहर उगल रहे हैं। धूल और धुआं आज सबसे प्रमुख समस्या है। आदमी की धूर्तता इस सब की जिम्मेदार है। सुप्रीम कोर्ट चिंतित है कि आखिर होगा क्या? अगर अभी हम नहीं सुधरे तो मनुष्य का जीवन कैसे बचेगा? अभी कुछ दिन पहले भारत के उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी की वायु गुणवत्ता के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की है। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र व राज्यों की सरकारों को फटकार लगाते हुए पूछा कि दुनिया को आखिर हम क्या संदेश दे रहे हैं? राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में दिल्ली, नोएडा गुरुग्राम में लगातार हवा जहरीली बनी हुई है और नौकरशाही हाथ पर हाथ रखे बैठी है। न्यायाधीशों ने कहा, वायु गुणवत्ता के गंभीर श्रेणी में जाने का इंतजार

बंद कर पहले से कार्रवाई क्यों नहीं की जाती ? सरकारों को वैज्ञानिक व सांख्यिकी मॉडल के आधार पर कदम उठाने चाहिए। एनसीआर में बिगड़ी वायु गुणवत्ता को नियंत्रित करने के लिए आपात कदम उठाने का निर्देश देने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई के दौरान तत्कालीन सीजेआई एनवी रमण की पीठ ने कहा था कि हम गंभीर स्थिति होने का इंतजार करते रहते हैं कि तब कदम उठाएंगे। नौकरशाही के इस रवैये को बदलना होगा। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के सुझावों जैसे औद्योगिक प्रदूषण, ताप कोयला बिजलीघरों, मोटर वाहनों से कार्बन उत्सर्जन, धूल नियंत्रण, डीजल जनरेटरों पर रोक के साथ कुछ और दिन घर से काम को बढ़ावा देना चाहिए था। पर गरीब देश में यह संभव नहीं है। आयोग को सांख्यिकी आधारित मॉडल पर भरोसा दिखाना होगा। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने बताया था कि कोयले से चलने वाले छह बिजली संयंत्रों को बंद किया गया है ट्रकों के प्रवेश पर रोक है और शैक्षणिक संस्थानों को बंद करने जैसे कदम उठाए गए हैं। जजों ने कहा था, यह काफी नहीं हैं, प्रदूषण पर अंकुश के लिए हवा की चाल के सांख्यिकी मॉडल को ध्यान में रखते हुए कदम उठाए जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र के साथ दिल्ली, हरियाणा, पंजाब व उत्तर प्रदेश की सरकारों को कठोर चेतावनी दी थी। साधारण लोगों की बात कौन कहे अब तो सुप्रीम कोर्ट भी कहता है कि इतने साल नौकरशाही क्या कर रही थी?

आखिर इतने वर्षों से नौकरशाही क्या कर रही है? अफसरों को पर्यावरण सुधारने के लिए मौके पर जाना चाहिए काम करना चाहिए ताकि ठोस परिणाम सामने आ सके। पराली जलाने के मसले पर विशेषज्ञों को साथ लेकर गांवों में जाना चाहिए, किसानों से बात करनी चाहिए। उन्हें जागरूक करना चाहिए, उनकी समस्याएं सुनें, समाधान निकालें। वैज्ञानिकों को शामिल कर निर्णय हों। सुप्रीम कोर्ट के जजों ने प्रदूषण रोकने के लिए मौसमी मॉडलिंग का सुझाव दिया। कहा, जनवरी–मार्च, अप्रैल–जून, जुलाई–सितंबर और नवंबर–दिसंबर तक दिल्ली में अलग मॉडल होना चाहिए। इतना सब के बावजूद ना तो केंद्र सरकार और ना दिल्ली सरकार कुछ ठोस कदम उठाने को तैयार है। यही हाल सभी प्रदेश की सरकारों का है। दिल्ली ही नहीं लखनऊ, कानपुर इलाहाबाद, वाराणसी, मेरठ, चेन्नई कोलकाता, हैदराबाद, अहमदाबाद, सूरत सहित अनेक महानगरों की हालत बहुत खराब है। इन महानगरों की हवा जहरीली हो गई है। इन सब शहरों के निवासियों, अधिकारियों नगर निगम और प्रांत सरकारों को मिलकर काम करना पड़ेगा। स्वैच्छिक संगठनों को आगे आना पड़ेगा तभी जहरीली हवा में कुछ सुधार हो सकता है वरना अस्पताल मरीजों से भरे रहेंगे नर्सिंग होम में सीट नहीं बचेगी और हम असमय काल के गाल में जाने को

मजबूर होंगे। प्रकृति से छेड़छाड़ होगी तो प्रकृति बदला भी लेगी जिसके बहुत भयंकर परिणाम सामने आते हैं। कुछ सालों में प्रकृति के भयंकर परिणाम देखने में आ सकते हैं। आज भारत ही नहीं दुनिया भर में पर्यावरण के लिए धूल और धुआं बहुत खतरनाक है। इसी के कारण हमारी जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। किंतु धूल और धुआं से भी ज्यादा खतरनाक मनुष्य की धूर्तता भी है। यह धूर्तता ग्लासगो जलवायु सम्मेलन में साफ दिखाई पड़ी थी। ग्लासगो जलवायु सम्मेलन में दुनिया भर में धुआं फैलाने वाले देशों ने धूर्तता की है। चीन ,रूस और अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि संपन्न देशों में दुनिया के आसमान में 45 प्रतिशत से भी ज्यादा कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ा है किंतु इसकी भरपाई करने के लिए अपने हिस्से की राशि प्रगतिशील देशों को नहीं दी। अपनी धूर्तता के कारण अमीर देशों ने प्रगतिशील देशों की स्थिति बहुत खराब कर दी है।

अमीर देशों के अमीर यात्रियों ने इतनी अधिक हवाई यात्राएं की हैं कि आसमान धुएं से भरा हुआ है। हवाई जहाज में प्रयुक्त ईंधन इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करता है जिससे पृथ्वी के क्षोभ मंडल में बढ़ोत्तरी होती है। इसी कारण महानगरों का वायुमंडल बहुत खराब हो गया है जहरीला हो गया है, जिसमें सांस लेना मुश्किल है। चीन और अमेरिका ग्लासगो सम्मेलन में भी इसी बात पर तुले रहे कि भारत दुनिया का तीसरे नंबर का सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जन करने वाला देश है। इसलिए भारत यह शपथ ले कि 2027 तक वह भारत में चलने वाले कोयले के सारे उद्योग धंधे बिजली घर और ट्रेनें नहीं चलाएगा। बंद कर देगा। सौर ऊर्जा को बढ़ावा देगा और पेट्रोल डीजल से चलने वाली गाड़ियों को 2030 तक बदल कर बिजली गैस अथवा सौर ऊर्जा से चलाने का वादा करेगा। भारत के प्रधानमंत्री के सामने यह भयंकर समस्या थी कि एक विकास करता हुआ देश अपने सारे कार्य कैसे रोक दे। फिर भी भारत ने अपनी तरफ से 2070 तक सारा कार्बन उत्सर्जन बंद करने का वादा किया है और 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने का वादा किया है। भारत को सभी से मिलकर एक ठोस नीति बनानी होगी और कठोर निर्णय लेने होंगे नहीं तो हमारे महानगर एकदम रहने लायक नहीं बचेंगे। कोरोनावायरस काल में अधिकांश लोग शहरों से भागकर गांवों में जाकर बस गए थे अब वह शहर फिर वापस आ गए हैं। रेल, बसें, ट्रक, हवाई जहाज फिर

कार्बन उत्सर्जन करने लगे हैं और महानगर प्रदूषित हो गए हैं।

अब तो आम आदमी जहरीली हवा खराब होती जलवायु से बचने के लिए शहर के कंक्रीट के मकान छोड़कर किसी जंगल में झोपड़ी डाल कर रहे, तभी कुछ राहत मिल सकती है। मोबाइल टावरों ने भी जलवायु को बिगाड़ा है। 5 जी और 6 जी भी प्रदूषण फैलाने में और तरंगों के प्रदूषण के लिए जिम्मेदार हैं। मोबाइल चार्जर भी फेंक दिए जाने के बाद कूड़े के ढेर में तब्दील हो गए हैं जो कार्बन उत्सर्जन कर रहे हैं।

हमने अत्याधिक विकास के चक्कर में अपने विनाश का रास्ता खोल दिया है, इसे बिना देर किए सुधारना होगा वरना हमारे महानगर 2025 तक रहने लायक नहीं रहेंगे!

—कानपुर

लेखक पर्यावरण के जानकार स्वतंत्र चिंतक और वरिष्ठ पत्रकार हैं
यह लेखक के निजी विचार हैं।

◆◆◆

लंदन की सड़कों में नही सुनाई देती गाड़ियों के हॉर्न की आवाज

– डॉ. संजय सिंह

किसी भी देश की तरक्की में वहां के नागरिकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति का आत्मानुशासन उस राष्ट्र को महान बनाता है। अंग्रेजों के संबंध में भारत में जो धारणाएं हैं उससे अलग हटकर देखा जाये तो जिस तरह के अनुशासन और नियमों का पालन वह करते हैं, उनसे बहुत कुछ सीखा और समझा जा सकता है। बात कर रहे हैं लन्दन की जो दुनिया के प्रसिद्ध शहरों में से एक है। यह शहर खूबसूरती ,कला, साहित्य, संस्कृति एवं पर्यटन के लिए जाना जाता है। यहां की सडकों पर देखें तो गाड़ियाँ ही गाड़ियाँ दिखाई देती हैं जो शहर की आर्थिक सम्पन्नता को प्रदर्शित करती हैं जो भारत के सापेक्ष बहुत अधिक है। जबकि दूसरी तरफ लोगों में पैदल चलने की क्षमता अद्भुत है। लन्दन के हाईट पार्क में आपको हजारों लोग दौड़ते हुए दिखाई देंगे। सडकों पर भी लोग दौड़ते हुए दिखाई देंगे। इन लोगों को दौड़ते देखकर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती है। स्वास्थ्य को लेकर लन्दन में काफी जागरूकता है। यद्यपि भारत में भी कोविड के बाद स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है परंतु अभी भी शहरों में पैदल चलना एवं साइकिल चलाना आदतों में शामिल नहीं हो पाया है। लन्दन में साइकिल का अधिक उपयोग वहां की अच्छी आदत है। यात्रा के दौरान एक–दो जगह जाम भी मिला उसके बाद भी वाहनों के हॉर्न नहीं सुनाई पड़े। वहां जाम खुलने के बाद लोग शांति से निकल जाते हैं। लंदन के लोगों का यह व्यवहार जहाँ एक तरफ ध्वनि प्रदूषण को कम करता है वहीँ दूसरों के अन्दर आत्मानुशासन की भावना को प्रकट करता है।

एक नजर लंदन की प्राकृतिक स्थितियों पर डालने पर पता चलता है कि लन्दन की टेम्स नदी में बहुत बड़े–बड़े जहाज हैं। इस नदी यात्रा का आनंद अलग ही है। लन्दन में पांच हवाई अड्डे हैं। आसमान में हमेशा हवाई जहाजों के उड़ने की आवाज सुनाई देती है लेकिन इन सबके बावजूद सडकों में जो शांति दिखाई देती है उससे यह प्रतीत होता है कि बगैर आत्मानुशासन से कोई देश आगे

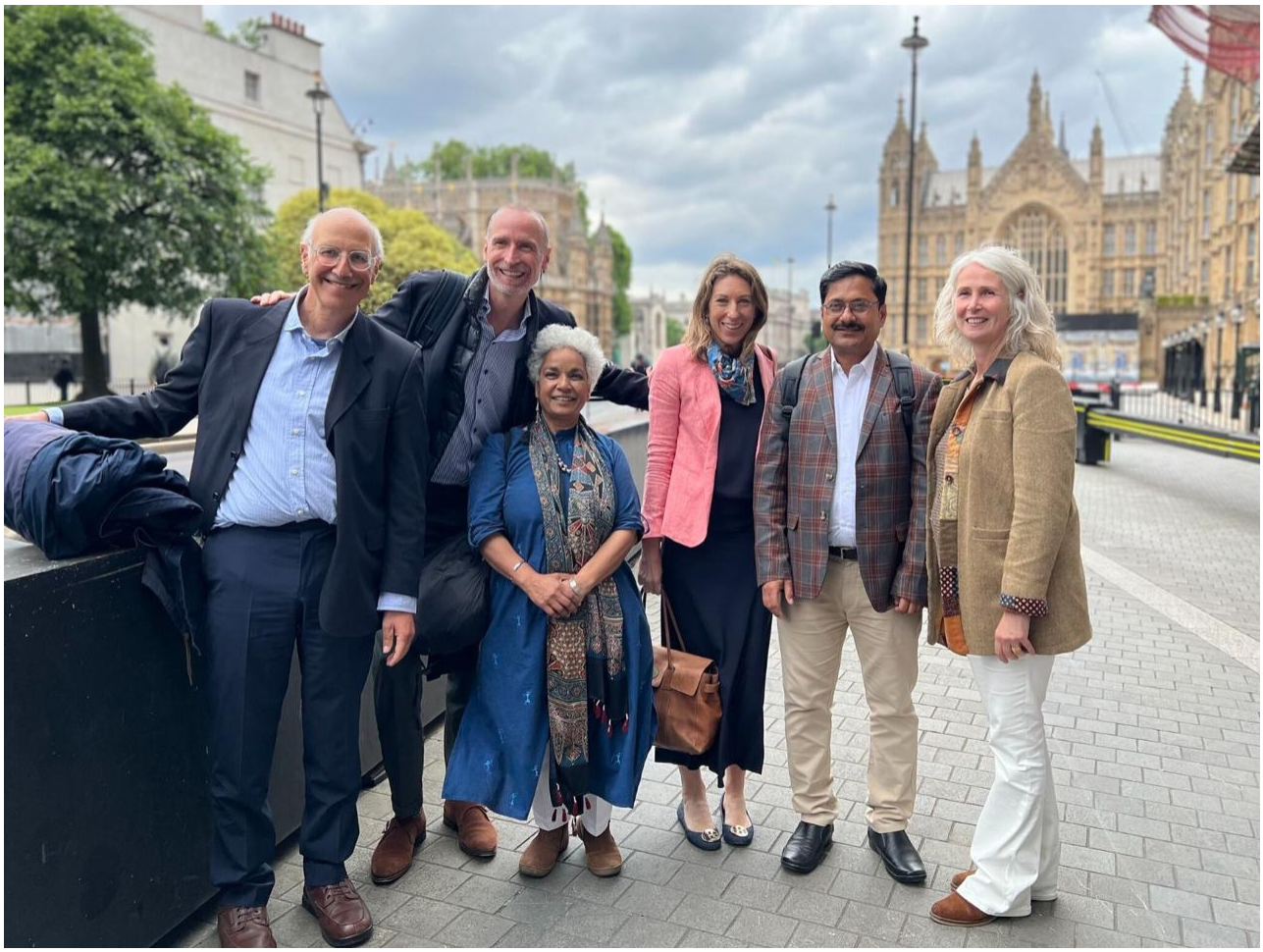

नहीं बढ़ता है। यात्रा के दौरान हमने देखा कि लन्दन में बहुत बड़े पैमाने पर भवन निर्माण का कार्य चल रहा है। 200 से 300 साल पुरानी इमारतें या तो जमींदोज हो रहीं हैं या तो उन्हें तोड़कर दोबारा बनाया जा रहा है। व्यवसायिक शहर के चलते भवनों के निर्माण की प्रक्रिया बहुत तेज है लेकिन उनमें सबसे अच्छी बात है कि लंदन में भवन निर्माण से पहले धूल और उसके दुष्प्रभाव को रोकने के लिए उम्दा इंतजाम किये जाते हैं। हम भारतवासियों को यह सीखने की जरूरत है। एक अनुमान के अनुसार लन्दन में 12 से 13 प्रतिशत नई बिल्डिंग बन रही है लेकिन इन सबके बावजूद कहीं भी धूल दिखाई नहीं देती है।

टेम्स नदी का रंग ऐसा है जो देखने में मटमैला नजर आता है। नदी में जहाजें चलने के बावजूद लोगों के अनुशासन के चलते नदी बिल्कुल साफ नजर आती है। नदी की सफाई को लेकर सभी बहुत चिंतित हैं । नदी की स्वच्छता वहां के लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लंदन में बाहर से आने वाले लोगों की एक बड़ी संख्या है लेकिन जिस तरह से नदी में चलने वाली जहाजों में डस्टबिन आदि लगाई है, इसके माध्यम से वह बताते हैं कि लोग नदी को प्रदूषित होने से कैसे बचा सकते हैं। हालाँकि लन्दन में आबादी बढ़ रही है जिसके चलते जनसँख्या घनत्व भी बढ़ रहा है परंतु पर्यटन का बड़ा केंद्र होने के बावजूद भी व्यवस्थित और सुन्दर है। भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश खासतौर से दक्षिण एशिया के लोग बड़ी संख्या में रोजगार और पढाई के लिए ब्रिटेन आते हैं। लन्दन के किसी भी रेस्टोरेंट में भारतीय मिल जायेंगे। अपने प्रवास के दौरान हमने अधिकांश भारतीय मूल के विद्यार्थियों से बातचीत की। कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि वह पढाई एवं पार्टटाइम जॉब के लिए लन्दन आये हैं वहीँ कुछ नौजवान ऐसे भी मिले जो लन्दन में रहकर नौकरी कर रहे हैं।

भारत के बड़े प्रसिद्ध शेफ विवेक सिंह जिनका नाम भारत में बहुत चर्चित है, एक दिन मैं उनके एक ऐसे रेस्टोरेंट में पहुंचा देखने के लिए जहाँ उन्होंने लाइब्रेरी को रेस्टोरेंट के साथ जोड़ा हुआ है। वहां बड़ी संख्या में पुस्तकें रखी

हुई थीं साथ ही भारतीय एवं लजीज व्यंजनों की भरमार वहां देखने को मिली। अच्छी तनख्वाह एवं रोजगार का अच्छा अवसर होने के कारण होटल, रेस्टोरेंट एवं कैफे में बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग काम कर रहे हैं। हालाँकि आईटी सेक्टर में भी बहुत लोग हैं लेकिन इन सबके बावजूद लोगों के जीवन में तनाव एवं गुस्सा कम है और लोग आनंद के साथ काम कर रहे हैं। ब्रिटेन के अधिकांश टैक्सी ड्राईवर पाकिस्तान और अफगानिस्तान के हैं लेकिन अभी भी उन्हें हिंदी बोलने में रूचि है। इन सबको देखते हुए कहा जा सकता है कि ब्रिटेन में अन्य देशों के लोगों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि ब्रिटेन में ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना बहुत कठिन काम है। यात्रा के दौरान एक अफगानी टैक्सी ड्राईवर ने बताया कि जो ब्रिटेन की प्रक्रिया है उसमें बहुत कठिन ढंग से ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त होता है। एक अच्छी बात यह है कि लन्दन में अंग्रेजी बहुत अच्छी बोली जाती है और अंग्रेजियत देखने को मिलती है। दूसरी तरफ हिंदी बोलने वाले लोग भी काफी हैं और हिंदी के लोगों में खासतौर से भारत पाकिस्तान एवं नेपाल के लोग हैं। बांग्लादेश के लोगों को हिंदी बोलने में थोडा दिक्कत है। लेकिन अफगानिस्तान के लोग हिंदी बोल लेते हैं बल्कि यह कह सकते हैं कि जब कोई भारतीय मिलता है तो उससे वह हिंदी में बात करते हैं हालांकि दक्षिण भारत के लोगों को हिंदी बोलने में असुविधा होती है। परंतु यहाँ बात भाषा की नहीं बात संस्कृति और मूल्यों की है। संस्कृति के मामले में जब मैं एक कार्यक्रम में भारतीय मूल के लोगों को संबोधित करने के लिए मैनचेस्टर के आगे एक ओल्डैम नाम की जगह पर गया जहां बडी संख्या में भारतीय मूल के लोग आए थे उनमें से अधिकांश गुजराती समाज के लोग थे और उनके घरों के जो बच्चे और महिलाएं आयी हुई थीं वे सभी भारतीय परिधान पहने हुए थे भारत की जो संस्कृति है उसे ब्रिटेन में रहने वाले भारतीय लोगों ने अपने जीवन में आत्मसात करके रखा है। हमारे यहाँ जो ब्रिटेन के नागरिक हैं वह भारत की संस्कृति का सम्मान करते हैं। ब्रिटेन में भारत के लोगों की अच्छी संख्या है और व्यापार में उनकी व्यापक पहुंच भी है और व्यापार के साथ–साथ वहां के व्यवस्थाओं में भी हिस्सेदारी निभा रहे हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि आज भारतीयता इंग्लैंड और यूरोप के देशों में बढती हुई दिखाई दे रही है। एक संवाद के दौरान स्थानीय शिक्षा एवं पर्यावरणविद फिलिप ने कहा कि एक जमाने में कहा जाता था कि भारत पर

अंग्रेजों ने राज किया तो हम लोग यह बताते हैं कि आज भारत के लोग इंग्लैंड पर राज कर रहे हैं। हालांकि यह बात शायद उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के कारण कही हो। उनकी यह बात भी सच है लेकिन जिस तरह से व्यापार और अन्य क्षेत्रों में भी हम भारतीयों ने अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है उसका लोहा आज अंग्रेज भी मानने लगे हैं। वर्तमान समय में भारतीय लोग बडे पैमाने पर इंग्लैंड जाना चाहते हैं लेकिन वीजा के नियम दिन–प्रतिदिन कडे होते जा रहे हैं। ब्रिटेन में नागरिकता देर से मिल रही है लेकिन बेहतर भविष्य की तलाश में लोग बडे पैमाने पर जा रहे हैं और जो वहां व्यवस्थित हो गए हैं, वह खुश हैं लेकिन भारत से अपने को संबद्ध किए हुए हैं। वे भारत के विकास के लिए चिंतित हैं। भारत में उनके अपने जो भी सगे संबंधी रहते हैं उनको भी वह इंग्लैंड लाने की कोशिश करते हैं लेकिन कई बार सफल होते हैं और कई बार असफल भी हो जाते हैं। कई लोगों से बात हुई तो उन्होंने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि अब यहां आना थोडा कठिन है। निश्चित तौर पर प्रत्येक देश की अपनी सीमाएं हैं।

भारत आबादी के आधार पर दुनिया का सबसे बडा देश हो गया है। बेरोजगारी की स्थिति बद्तर होने की

वजह से लोग अपनी आर्थिक सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए विदेश जाना चाहते हैं उसमें भी इन नौजवानों के पलायन को रोकना प्रत्येक देश एक चुनौती है।

वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी पर उपस्थित जीवों के लिए खतरा मंडरा रहा है तब यह पड़ताल करना आवश्यक हो गया है कि इसके कारणों को जानें। इसके प्रमुख कारणों में शहरीकरण है। शहरीकरण के कारण आज बडे पैमाने पर हमें जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दिख रहे हैं। इस वर्ष भारत सहित दुनिया के कई देशों में बहुत गर्मी पड़ी वही ब्रिटेन भी इससे अछूता नहीं रहा। दुनिया का बढता तापमान हम सबके लिए चिंता का विषय है। जून के महीने में भी इस वर्ष तापमान कई बार 12 से 15 डिग्री के आसपास रहा। वहां के लोगों ने बताया कि जून का महीना जो सबसे अच्छा मौसम होता था, इस बार ज्यादा ठंडा है। जलवायु परिवर्तन के कारण ही यह विपरीत लक्षण दिखाई दे रहे हैं कि एक तरफ जाडा है तो दूसरी तरफ गर्मी है। पिछले वर्ष ब्रिटेन में अत्यधिक गर्मी पड़ने के कारण ड्राट ईयर भी घोषित किया गया था। वर्तमान समय में हमने अपनी जरुरतें बढ़ा ली हैं, हमने प्रकृति के साथ संबंध बिठाना बंद कर दिया है। आज प्रकृति का दोहन हमने अत्यधिक किया है जिसका दुष्परिणाम है कि मौसम उल्टा–पुल्टा हो गया है और इसका असर हमारे जीवन पर भी है और हमारे स्वास्थ्य पर भी है। अब इन सबके बीच में कैसे सामंजस्य बिठाया जाए? विकास का क्या मॉडल हो ? मैं यह मानता हूं कि दूसरे देश इस क्षेत्र में हमसे ज्यादा बेहतर कर रहे हैं।

लन्दन प्रवास के दौरान मैंने 20 घंटे से अधिक की रेल यात्रा की और 20 घंटे से अधिक की रेल यात्रा में हमने इंग्लैंड के कई प्रान्तों का भ्रमण किया। इस भ्रमण के दौरान हमने यह देखा कि लोग अभी भी अपनी खेती को बचा के रखना चाहते हैं। इंग्लैंड जैसे देश में प्राकृतिक खेती की तरफ लोग बढ़ रहे हैं। घास जिसको हम अंग्रेजी में ग्रास कहते हैं वह बड़े पैमाने पर खेतों में पाई जाती है। इसी घास को पलटकर खेतों में बोने की तैयारी करते हैं। जहां एक तरफ रासायनिक खाद और कीटनाशक से उनका मोहभंग हो गया है अब वह खेती में परंपरागत और रसायनमुक्त और विषमुक्त खेती की तरफ बढ़ रहे हैं। इन दिनों मैंने देखा कि गेहूं की फसल लहरा रही है बाकी के खेत खाली पड़े हुए हैं। यहां लोग नई फसल लगाने की तैयारी कर रहे हैं लन्दन में कृषि का जो काम है वह भारत से अलग मुझे इंग्लैंड में दिखा। लोग अब बहुत जागरुक हैं बड़े–बड़े फार्म हाउस होने के बाद भी वह प्राकृतिक खेती की तरफ लौट रहे हैं और अपने उत्पादन को बेहतर कर रहे हैं। मैंने जब किसानों से बात की तो उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य और तमाम तरह की जानकारी हेतु बड़े पैमाने पर लोगों ने किसान स्कूल खोले हैं। किसान लोग स्कूल जा रहे हैं वहां पर लोगों के साथ बात हो रही है। मानसिक स्वास्थ्य का मुद्दा तो बड़े पैमाने पर पूरी दुनिया में आया है उससे इंग्लैंड भी अछूता नहीं है। लोग मानसिक अवसाद को दूर करने के लिए भी इस तरह की कई थेरेपी जो कृषि के साथ उन्होंने जोड़ी है, वह दिखाई दे रही है। इन सबके कारण लोग अपनी जीवन शैली में भी परिवर्तन कर रहे हैं। स्वाभाविक तौर से आने वाले दिनों में घटती आवासीय एवं कृषि भूमि और बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न संकटों के समाधान के लिए सामूहिक रूप से पूरी दुनिया को सोचना पड़ेगा कि हम कैसे एक बेहतर भविष्य की कल्पना कर पाएंगे और जलवायु परिवर्तन के संकटों से निजात पा सकेंगे।

–लेखक 'जल–जन' जोड़ो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक हैं।
मो०– 9415114151

◆◆◆

ललन चतुर्वेदी की कविताएं

पेड़ मातृभाषा समझता है

वह मां के सतत स्पर्श की आकांक्षा में
धरती की अतल गहराइयों में उतरता जाता है
वह मां को धूप–आतप से बचाने के शुभ संकल्प में अंबर को घेर लेना चाहता है
वह जीवन–रक्षा के लिए जो ग्रहण करता है
उसे भी लौटा देता है प्राण–वायु के रूप में
पूरे जीवनकाल वह अपनी जन्म धरती से हिलता नहीं है
उसे किसी से कोई उम्मीद नहीं
और किसी से कोई शिकायत भी नहीं
वह जीता है निर्विकार तपस्वी का जीवन
समस्त जगत में कोई नहीं स्वार्थ से परे
मगर एक वही है जो निःस्वार्थ जीता है
कभी फूल,कभी फल की भेंट देता रहता है अनवरत
शीर्ष पर, टहनियों पर देता है जीवों को आश्रय
जब लगभग प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से
विलुप्त होती जा रही है मातृभाषा
वह पेड़ ही है जो मौन भाव से सुनता है,समझता है मातृभाषा
जन्मता है जिस मां की कोख से
उसी मां की गोद में सदा–सदा के लिए सो जाता है।

पेड़ मेरे भीतर

यकीनन वह जेठ की दुपहरिया थी
जब उस से मेरी मुलाकात हुई
तब से उस की घनी छांव में
मैं अपने मन प्राण जुड़ाता रहा
शीतल हो गया उसकी छाया में
मेरा पोर पोर

होकर भाव विभोर
एकांत दूधिया चाँदनी में
मैं उसे घंटों निहारता रहा
हर पतझड़ के बाद
कोमल किसलयों से
वह करता रहा मेरा स्वागत
धीरे–धीरे वह सूखने लगा
झड़ गए उसके सारे डाल–पात
होकर उद्विग्न मैंने पूछा
अब मैं किसकी छाया में बैठूँगा
उसने कहा– दुखी मत हो
पहले बाहर छितराया था
अब तुम्हारे भीतर पसर गया हूँ
मैं तुम्हारे भीतर उतर गया हूँ
तुम मुझे निकाल नहीं पाओगे
अब तुम मुझे भुला नहीं पाओगे।

दो पेड़

एक पेड़ यहां, एक पेड़ वहां
दोनों के बीच लगभग दस गज की दूरी
एक–दूसरे को निहारते
बीत रहे बरस–दर–बरस
लगता है निरन्तर रहते हैं संवादरत
एक दूसरे से मिलने की इच्छा
शाखाओं के रूप में फलती–फूलती रही
बरसों बाद टहनियों ने एक–दूसरे को गले लगा लिया।
जड़ें जमीन से जुड़ी रहीं
दोनों ने आकाश में एक दूसरे को पा लिया।

विश्वास

इतने सारे पत्ते
एक दरख्त पर !
हवा के साथ अठखेलियाँ करते
धूप–आतप सब कुछ सहते
जी लेते हैं पूरी उमर
पाँच ऋतुओं को
कर लेते पार
कितनी सहजता से
इतनी मजबूत पकड़ होती है दरख्त पर
इसीलिए वे शायद नहीं सोचते पतझड़ के बारे में
आना है तो आए पतझड़
लौट आयेंगे बसंत में ये पत्ते
फिर से उसी दरख्त पर
दरख्त वहीं खड़ा करता रहता है इंतजार
पतझड़ में भी अपनी बाँहें फैलाए
उसकी रगों में बहते हुए रस
उसे सूखने नहीं देते
यह कहते रहते हैं–
विश्वास करने वाले शिरोधार्य होते हैं
वही बसंत लाते हैं ।

जातियां

पेड़ ने बीजों से कभी नहीं कहा कि तुम मेरी जाति की हो
जो अल्पज्ञानी थे उन्होंने उनका देसी नाम दिया
जो अपने को विज्ञानी मानते थे उनका
वैज्ञानिक नाम दिया
और यह भी जोड़ दिया कि अमुक प्रजाति उन्नत है
कुछ जातियों को आपस में मिलाकर संकर पैदा किए गए
और इन उपलब्धियों पर तालियां बजायी गई
खाते में बड़े–बड़े पुरस्कार भी आ गएं
वनस्पति जगत में इस पर कोई हलचल नहीं हुई
हवाओं ने बीजों को जिन भूखंडों में डाला, वहीं वे विकसित हो गये छतनार पेड़ में
और वायुमंडल में ऑक्सीजन उत्सर्जित करते रहे अनवरत
हम मनुष्य जिन्हें अपनी कुलीनता पर गर्व है
तथाकथित अपने वर्गीकरण पर आज भी झूम रहे हैं नशे में
हम सब अपनी संतानों को सदियों से पढ़ा रहे हैं एक

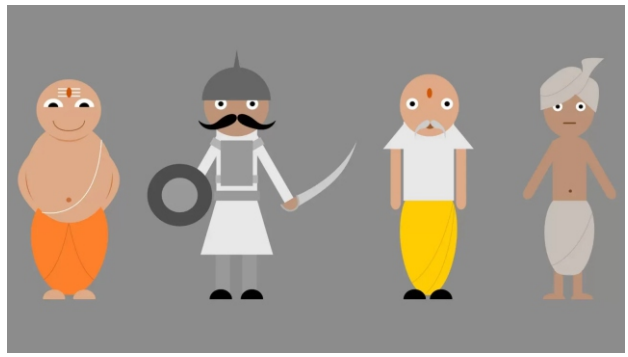

गलत पाठ
जबकि हमारे पास कोई पुख्ता सबूत नहीं है
सिवा अपने पिता के मौखिक वक्तव्य का कि
हम अमुक जाति के हैं
हम आपस में इसी मुद्दे पर लड़ते रहे,
जहर उगलते रहे
सदियों से हम असत्य को सत्य मानकर
उलझते रहे
क्या आपने कभी सोचा है कि
हर पिता इस अनर्गल असत्य पाठ के लिए
अपने संतान का अपराधी है।

–ईमेल lalancsb@gmail.com
मो. नं : 9431582801
पता : बेंगलुरु

◆◆◆

पवन गौतम की कविताएं

संवेदना के पैर

सत्य से भरी
संवेदना से लबरेज
कही गई बातें,
बहुत दूर तक जाने में समय लेती हैं.
तुम पूछना
अपनी आत्मा से
क्या
सत्य,संवेदना के
लम्बे–लम्बे पैर नहीं होते।

चाहता हूँ

मैं चाहता हूँ तुमको
पानी की तरह प्यास दूँ
हवा की तरह प्राण दूँ
आकाश की तरह छाँव दूँ
जैसे
पानी
हवा
आकाश
बुनियाद होते हैं
प्राणी मात्र के।

वापस आना तुम

तुम
आना
सब कुछ छोड़कर
वापस आना तुम।
संवेग
आवेग
प्रेम
ईर्ष्या
सब कुछ छोड़कर
वापस आना तुम।
मत छोड़ना
अपनी रूह
अपने घर के
ताखे पर
वापस आना तुम
मेरे आलिंद पर
अपने अतीत को छोड़कर
मेरे वर्तमान से मुठभेड़ करने
लेकिन
वापस आना तुम
जैसे
पतझड़ आता है
जंगलों को
हराभरा करने।

प्रेम बनाम क्रांति

प्रेम मुल्क से हो
देह से हो
आत्मा से हो
प्रेम तो बस प्रेम है
क्रांति
कैसी भी हो
बस
अस्मिता, पहचान और मिट्टी
लाल हो जानी चाहिए
प्रेम आबोहवा को गुलाबी करता है
क्रांति आबोहवा को लाल करती है

बस थोड़ा तरंगदैर्घ्य बढ़ा दीजिए
गुलाबी.. लाल हो जायेगा
प्रेम है तो क्रांति है
गुलाबी का चरम लालिमा है।

–मु0 हीरापट्टी, आजमगढ़

◆◆◆

वंदना मिश्रा की कविताएं

खो गीत

वो गाती थी
मेरी भीगी–भीगी सी पलकों में रह गए
गीत को बिना पलकें भिगाए
पर गाने के बाद
उसकी आँखों में अजीब सूनापन
तैरने लगता था
लड़कियाँ आपस में फुसफुसाती थीं
ये जरूर किसी से प्रेम करती थीं
जैसे हत्या से कम न हो ये अपराध

उस तक भी पहुँचती होगी ये आवाजें
पर कहती नहीं थीं कुछ भी

हाँ, उसके गीतों की डिमाण्ड बढ़ती जा रही थी
सीनियर लड़कियाँ भी इसी गीत की फरमाइश करती
वो और गाती, और उदास होती
अटकलें तेज होती जाती।

कभी पूछ नहीं पाई
और उसे कभी इतना
विश्वास नहीं हुआ कि
बता सके खुद अपना दर्द

पता नहीं कहाँ होगी !

पर यह गीत
उसकी उदास आँखों के साथ
लोगों की ओछी सोच

की याद भी
दिला देता है ।
किसी को क्यों होना चाहिए
इतना उदास
कि गीत भी न बहला सकें !

◆◆◆

अम्मा का बक्सा

अम्मा का एक बक्सा था।
हरे रंग का।
बचपन से उसे उसी तरह देखा था।
एक पुरानी रेशमी साड़ी का बेठन लगा था
उसके तले में जिसके बचे
आधे हिस्से से ढका रहता था
उसका सब माल असबाब
कोई किमखाब का लहंगा नहीं
कोई नथ बेसर नहीं
कोई जड़ाऊ कंगना नहीं
सिर्फ
कुछ साड़ियाँ
पुरानी एक किताब
पढ़ने के लिए नहीं
रुपयों को महफूज रखने के लिए
कुछ पुरानी फोटो।

कोई बड़ा पर्स नहीं था माँ के पास
कोई खजाना भी नहीं ।
पर पता नहीं क्यों वो बॉक्स खुलते ही
हम पहुँच जाते थे
उसके पास।

झांकने लगते थे
कुछ न कुछ तो मिल ही जाता था
एक सोंधी सी महक निकलती थी
उस बॉक्स में से
माँ चली गई तो दीदी
उस बॉक्स को पकड़ के बहुत रोई

उस बक्से को चाह कर भी
बॉक्स नहीं कह सकते
जैसे अम्मा को मम्मी
भाई ने कुछ साल पहले खरीद दी थी
एक बड़ी अलमारी माँ के लिए
पर वो हरे बक्से जैसा

मोह नहीं जगा पाई
कभी हमारे दिलों में ।
माँ की गन्ध बसी है
उस बक्से में ।
◆◆◆

अब माँ को तो आदत है रोने की

घर में दो चूल्हे हुए तो माँ से पूछा गया
किसके साथ रहोगी ?
माँ ने बूढ़े बीमार पति और कुँवारे बेटे के साथ
तीसरा चूल्हा जलाने की सोची
कौन समय से और प्यार से देगा इन्हें
रोटी ?
ऊपर के कमरे में बड़ा बेटा
नीचे मझला
बीच में माँ की रसोई
जिस माँ के आगे–पीछे चूजों की तरह
घूमते रहते थे बेटे
अब सूनी आँखों से
देखती है, अपने जायो को

अपने बेटों के साथ खिल खिलाती भाभियाँ
कभी बूढ़ी नहीं होंगी
माँ ममता का सागर होती है
तुम्हारी दादी को छोड़ कर कह कर
हँसती हैं।
बुढ़ापे में जीभ ज्यादा तेज हो गई
इसलिए बेटों से अलग हो गई

बेटे अपने बच्चों को
परिवार की परिभाषा सिखाते
माँ के परिवार में
सिर्फ छोटे भाई और पिता को जोड़ते

माँ को क्या पता 'न्यूक्लियर फैमिली' की परिभाषा
वो हर बार इस बात पर रो देती है
कि मेरा परिवार इतना छोटा कैसे हो गया

समझाने पर भी
रोने की आदत लगा ली है

बताओ उस दिन जब मझले बेटे का साला आया
और पूछ लिया ''ठीक हौ अम्मा''
अब इसमें ये कहने कि
''अब ऐसे जादा ठीक का होबे''
और रोने की क्या बात थी

तो क्या हुआ कि वो अलग खाना बना रही थी
उनकी अपनी इच्छा थी
घर की बेइज्जती कराने की ठान ली है
डपटते हैं बेटे
माँ एकता देखना चाहती है और
उसे कोसने में एक हो जाते हैं बेटे।
◆◆◆

घर फोड़नी

बहन बड़ी थी कई साल
भाई को पीठ पर लाद लाद घूमती रही सालों
माँ तो निहाल थी
अपने घर में व्यस्त बहन को
बातों बातों में पता चला
भाभी के दुर्व्यवहार की बातें
सोचा भाई तो अपना है
समझा लूँगी
''इतना कुछ बोलती है
पत्नी तुम्हारी मना नहीं करते?''
भाई ने बेहयाई से कहा
''मैने तो छूट दी है
ज्यादा बोलें तो बाल घसीट कर मारो भी।''

बहन को समझ नहीं आया कि वो अपना दिल संभाले
या दिमाग
हथौड़े की तरह लगे शब्द से टकरा कर बैठ गई

माँ दौड़ कर आई

पानी पिला कर समझाया
शान्त किया

भाई ने माँ से कहा कह दो अपना घर देखे
भाभी के चेहरे पर खिली मुस्कान देख
बहन ने सिर झुका लिया
पीठ पर लदे भाई ने

कलेजे पर लात मारी
किससे कहे
माँ ने कहा ''मुझे पता था
क्यों बोली तू उससे
पता तो है उसका स्वभाव''

सब पता था बहन को
बस अपना पराया होना
बार बार भूल जाती है
पर अब नहीं

माँ का हाथ पकड़ा और
अधिकार से बोली
''अब और नहीं माँ
तुम साथ चलो मेरे''

भाई ने झपट कर माँ को छीना
''ऐसे कैसे लोग क्या कहेंगे''
भौजाई नागिन सी तड़पी
''सब जायजाद के चोंचले हैं जी
किसके घर लडाई नहीं होती?''

भाई ने धमकाया ''माँ अगर गई तो
मेरी लाश पर से''

माँ ने दौड़ कर भाई के मुँह पर
हाथ रख दिया प्यार से

''मैं कहीं नहीं जाऊँगी मेरे लाल''
बहन को सुनाई दिया
तेरी गालियों पर बेटियों की सौ मनुहारें कुर्बान बेटा ।
घर फोड़नी होती हैं बेटियाँ

क्या जरूरत अपने घर में इतना
स्वभिमान सिखाने की ।
जाते हुए गले लगी माँ ने कहा
''तू बेटा होती तो दरिद्र कट जाता मेरा''
कट तो अब भी जाए माँ
पर कहने से फायदा नहीं
सोच
जल्दी से कदम बढ़ा दिया
बाहर की ओर बेटी ने ।

◆◆◆

मनराखन बुआ

मनराखन बुआ ,ऐसा ही नाम सुना था
उनका बचपन से
पर उनके सामने बोलने पर डाँट पड़ी
तब समझ आया कि ये उनका असली नाम
नहीं था
असली नाम क्या है बुआ
पूछने पर शरमाई थी वो
'का करबू बच्ची जाए दा'
अम्मा, चाची की 'जिज्जी'
और भाइयों की 'बहिन'
खोज खोज खाज कर पता लगा
सुरसत्ती (सरस्वती) नाम है

फूफा कभी गए थे कमाने तब के बम्बई
और कमाते ही रहे
बुआ मायके की ही रह गई

ससुर के विदाई के लिए आने पर
घर की चौखट पकड़
बोली ''चार भाई की जूठी थाली
धो कर भी पी लूँगी तो पेट भर जाएगा
बाबा मत जाने दो
किसके लिए जाऊ''
ससुर अच्छे दिल के थे
बोले ''ठीक है बहू पर
काज परोजन आना है तुम्हें''

तब से सास से लेकर
चार देवरानी, तीन जिठानी, दो ननद
सबकी जचगी में बुलाई गई बुआ
शादियों में बिनन–पछोरन बिना उनके कौन करता

हाँ नई बहू और दामाद से पुरानी साड़ी में
कैसे मिलती सो दूर ही रखा गया
फिर काम से फुरसत कहाँ थी
अम्मा–चाची भी न
जाने क्यों नाराज हो जाती हैं
ये भी कोई बात है?
हाड़ तोड़ काम किया तो पेट भर खाया
पहुँचा दी गई फिर मायके
'हिस्सा' जैसा शब्द सुना ही नहीं था उन्होंने
उनके बच्चों की हर जरूरत पर
पहुँची
मनरखने
और नाम ही 'मनराखन' पड़ गया

मजाक का कोई असर नहीं होता था उन पर
एक दिन बोली ''विधना जिनगी ही मजाक बना दिहेन
त का मजाक पर हँसी का रोइ बच्ची !''

हर जरूरत पर मन रखने पहुँची बुआ का
'मन रखने' भी कोई नहीं आया
अंत समय में ।
◆◆◆

माँ चली गई

पिता माँ से 14 वर्ष बड़े थे
बिस्तर पर जल्दी पड़ गए ।

माँ उन्हें इस तरह
देख–देख सूखती
जैसे घात लगाए बिल्ली से
कबूतर
ठंडी साँस ले कहती ''पता नहीं
कौन सा दिन देखना पड़े!''
पिता केवल दो रोटी खाते
माँ रोटियां थोड़ी मोटी बना देती
पिता इसे माँ की 'चालाकी' कह
गुस्सा होते।
माँ उनकी एक आवाज पर
उठ जाती थी
लाख थकी होने ,
और हमारे रोकने पर भी
पिता की भूख का अंदाज था उन्हें ।
माँ चली गई पिता से दस वर्ष पहले
पिता ने डॉक्टर के कहे पर भी
भरोसा नहीं किया
बार–बार माँ की कनपटी पर हाथ रखते
कहते अभी जी रही हैं ।

माँ जानती थी
पिता का प्यार
हम तब जान पाए
जब नहीं रही माँ।

देखा
एक बूढ़ा, बच्चा
कैसे बन जाता है !
क्षण भर में

आखिरी बार सिंदूर पहनाते समय
बिलख उठे
बोले फिर मिलना
माँ के दोनों हाथों में लड्डू
रख दिया गया,
और पिता का हाथ खाली हो गया।

मैंने तब जाना कि
ये सिर्फ मुहावरा नहीं है।
लाल चुनरी में सजी माँ को
उठा लिया लोगों ने ।
लौटे माँ को छोड़ तो
पिता भी
वहीं छूट गए थोड़े से ।

माँ !उठो न
पिता को किसी ने
अभी तक
कुछ नहीं खिलाया ।
◆◆◆

–ईमेल : vandanamkk@rediffmail.com

चित्रा पंवार की कविताएं

चिड़िया उड़, कौवा उड़

मैं खेल रही थी बच्चों के साथ
चिड़िया उड़, कौवा उड़
गिद्ध उड़, कोयल उड़
मैना उड़, बुलबुल उड़
गौरैया उड़, बगुला उड़
उल्लू उड़, सारस उड़
मैंने पूरा खेल सही खेला
बस जीतने ही वाली थी
मगर बीच खेल में ही बच्चे
रूठ कर बैठ गये
जाओ हम नहीं खेलते
बहुत बुरी हो तुम
सारे पक्षी उड़ा दिए
अब वो कभी नहीं आएंगे...।।

कबूतर तालाब

बाबा बता रहें हैं
मेरे छुटपन में
इस गांव में ग्यारह तालाब थे
पानी इतना साफ
की दिन का सूरज
उसे सोना बना देता
और रात का चांद दूध सी चांदी
पिताजी कुछ असहमति में गर्दन हिलाते है
ग्यारह तो नहीं मगर हां चार तो मुझे भी याद है
जिनके किनारे कूड़े के बड़े बड़े ढेर लगे थे
पानी गंदला सा था
पास खड़े बच्चे असमंजस में एक दूसरे का मुंह ताक रहे हैं
तालाब क्या कबूतर थे
की फुर्र से उड़ गए
हमने तो एक भी नहीं देखा।।।

–ईमेल : chitra.panwar20892@gmail.com

◆◆◆ ◆◆◆

कंक्रीट वन

–कनक किशोर

⟶ वन महोत्सव मनाने की तैयारी विभाग में जोरों से चल रही थी। कोई स्थल चौड़ा कर रहा था, कोई पौधों की व्यवस्था और कोई मुख्य मंत्री और राज्यपाल हेतु वन महोत्सव संदेश तैयार करने में लगा था। मुख्यमंत्री के जिम्मे वन विभाग भी था। किसी प्रकार की तैयारी में चूक ना हो इसे रिव्यू करने हेतु मुख्यमंत्री हीरालाल जी ने एक बैठक अपने आवासीय कार्यालय में रात्रि सात बजे से रख दी। सभी संबंधित पदाधिकारी अपने मातहत के साथ बैठक में उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने वन महोत्सव हेतु स्थल चुनाव के संबंध में जानना चाहा। वन सचिव बोलना चाह रहे थे कि हीरालाल जी ने उन्हें निर्देश दिया कि जिस पदाधिकारी को स्थल चयन का काम सौंपा गया है वही जानकारी दें। यह सुन सचिव ने नये आई एफ एस प्रोबेशनर राजीव दूबे को इशारा किया जिसे स्थल चयन करने हेतु कहा गया था। दूबे ने मुख्यमंत्री जी को बताया कि इस वर्ष वन महोत्सव के लिए कंक्रीट वन परिसर का चुनाव किया गया है। यह सुन सभी दूबे की ओर देखने लगे। किसी ने यह नाम पहले नहीं सुना था। दूबे बात समझ गया। उसने कहा क्षमा चाहता हूँ सर कंक्रीट वन नहीं शांति वन। उसकी बातों को सुनकर उच्चाधिकारियों ने हाँ में हाँ मिलाया।

मुख्यमंत्री को कुछ आशंका हुई। उसने चयनित स्थल की स्थिति स्पष्ट करने हेतु दूबे को कहा। दूबे ने कहा सर शहर के उत्तरी किनारे पर स्थित साल वन को काट कर वन प्रशिक्षण केन्द्र की बहुमंजिली इमारत बनाई गई है जिसे शांति वन नाम दिया गया है। परंतु स्थल के निकट के रहवासी उसे कंक्रीट वन कहते हैं चूंकि वहाँ लहलहाती वन की जगह कंक्रीट के अनेक भवन वृक्षों की लाश पर खड़े हैं। गलती से गाँव वालों का दिया नाम ही मुँह में आ गया। उक्त शांति वन की रिक्त भूमि को ही इस वर्ष वन महोत्सव हेतु चयनित किया गया है। यह सुन मुख्यमंत्री ने बैठक में निर्णय लिया कि इस वर्ष वन महोत्सव नहीं मनाया जायेगा एवं कंक्रीट वन निर्माण में संलग्न सभी पदाधिकारियों को निलंबित कर विभागीय कार्यवाही का आदेश दिया। अगले दिन सभी समाचार पत्रों ने अपना मुख्य शीर्षक बनाया कि मुख्यमंत्री ने कंक्रीट वन में वन महोत्सव से इंकार किया।

राँची (झारखंड)
मो.– 9102246536

◆◆◆

भाषा

हिन्दी काव्येतर साहित्य में पर्यावरण चिंतन

–डॉ. जया आनंद

→ पर्यावरण के अतंर्गत प्राकृतिक पर्यावरण और भौतिक या मनुष्य निर्मित पर्यावरण दोनों ही आते हैं किन्तु यहाँ हम प्राकृतिक पर्यावरण चेतना की बात कर रहे हैं। वस्तुतः प्रकृति पर्यावरण का हस्ताक्षर है। प्रकृति के कण–कण में सौंदर्य का बखान करती प्रकृति के कवि सुमित्रानंदन पंत की यह पंक्तियां बरबस ही स्मरण हो आती हैं।

'कूड़ा कड़क कंकड़ पत्थर सब लगते इस भू पर सार्थक सुंदर'

वास्तव में हिंदी साहित्य प्रकृति की सुषमा को बहुत पहले से समाहित करता आया है। पद्य साहित्य में तो बहुतायत में दिखाई पड़ता है किंतु हिंदी काव्येतर साहित्य में प्रकृति पर्यावरण का चित्रण काव्य की तुलना में कम हुआ है। पर्यावरण चेतना के सन्दर्भ में प्रकृति के सौंदर्य का अंकन, उसकी सुषमा का वर्णन पर्यावरण के प्रति स्नेह को दर्शाता है। भारतेंदु काल में लिखी गई नाटिका 'प्रेम योगिनी' में यमुना नदी का सुन्दर वर्णन मिलता है। द्विवेदी युग में गोविंद नारायण का निबंध षडऋतु वर्णन, चँद्रधर शर्मा गुलेरी जी का निबंध 'जय गंगा मैया' प्रकृति प्रेम के द्योतक हैं।

छायावाद में तो प्राकृतिक सुषमा बिखरी पड़ी है, गद्य साहित्य में महादेवी जी के रेखाचित्रों में प्रकृति पर्यावरण विशिष्ट रूप से प्रकट होता है। पर्यावरण में एक टर्म आता है बायोडायवर्सिटी यानी जैव विविधता, ये जैव विविधता महादेवी के रेखाचित्र 'गिल्लू' जिसमें गिलहरी का चित्रण, 'दुर्मुख' में खरगोश, 'सोना' में हिरणी, 'गौरा' रेखाचित्र में गाय का तो वहीं 'नीलकंठ' में मोर का अद्भुत वर्णन है। जीव–जंतु जगत के प्रति करुणा जगाता है महादेवी का गद्य साहित्य। इनके साहित्य से परोक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण का भाव जागृत होता है। इन जीव जंतुओं के होने से पर्यावरण का संतुलन बना रहता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में फणीश्वरनाथ 'रेणु' के आंचलिक उपन्यासों में, कहानियों में प्रकृति का चित्रण पार्श्वभूमि के रूप मे है। प्रकृति के सानिध्य में असाध्य वीणा रचने वाले अज्ञेय की कहानी 'जिज्ञासा' मे पर्यावरण चेतना का प्रत्यक्षीकरण होता है। प्रकृति को जानने की जिज्ञासा में मनुष्य न केवल इसका उपभोग करता है बल्कि कुछ समय पश्चात् इसका दोहन करने लगता है और पारिस्थितिकीय संतुलन को डगमगा देता है।

हिन्दी साहित्य के अनेक निबन्धों में प्रकृति के माध्यम से सांस्कृतिक, सामाजिक चेतना को बल मिला है। हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'अशोक के फूल', धर्मवीर

भारती का 'ठेले पर हिमालय', विष्णु प्रभाकर का 'ज्योति पुंज हिमालय', विद्यानिवास मिश्र का 'आंगन के पँछी' और 'बंजारा मन' आदि। इन निबन्धों में पर्यावरण का सरंक्षण सहज रूप में चित्रित होता है। अनेक यात्रा वृत्त हैं जिनमें प्रकृति निरूपण अनिवार्य तत्व की तरह संपृक्त है जैसे काका कालेलकर का 'हिमालय की यात्रा' आदि।

इस कृति के संदर्भ में निर्मल वर्मा ने लिखा है, ''प्रकृति के पास जाने का मतलब है, अपने अलगाव और अकेलेपन से मुक्ति पाना, अपने छिछोरे, ठिठुरते अहम् का अतिक्रमण करके, अनवरत समय की कड़ी में अपने को पिरो पाना, तो यह बोध पुराने खँडहरों के बीच भी होता है। यह विचित्र अनुभव है ठहरे हुए पत्थरों के सामने बहते समय को देख पाना।" विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' में प्रकृति के सहज दर्शन होते हैं। उन्होंने प्रकृति के अनेक बिम्बों और प्रतीकों को अपने रचना–संसार में रेखांकित किया है जो किसी न किसी व्यापक अर्थ को अपने अंदर संजोकर रखे होती है। उनके उपन्यास में नदी, समुद्र, लहर, पेड़, पक्षी, किरण, चांदनी, धरती, पवन, पहाड़ आदि अनेक प्राकृतिक सौंदर्य हैं। उन्होंने प्रकृति के बहुत ही सुन्दर चित्र खींचे हैं।

प्रकृति के सौंदर्य की व्याख्या करते हुए अपने पर्यावरण से स्नेह, लगाव परिभाषित होता है और हम उसके संरक्षण के लिए चेतना के स्तर पर तत्पर होते हैं पर पिछले कुछ समय से भौतिक विकास ने पर्यावरण को अत्यधिक हानि पहुँचाई है। विस्तृत होते शहर, कटते जंगल, हरियाली का नष्ट होना, पर्वतों पर भौतिक विकास के दबाव के कारण भूस्खलन होना, ग्लेशियरों का पिघलना, पानी की कमी इन सब समस्याओं से साहित्य अछूता नहीं है।

ज्योति व्यास की कविता है 'बहुत याद आता है मेरा छोटा सा गांव' में इसी समस्या को मार्मिक ढंग से प्रकट करती है, इसका उल्लेख सहज रूप से होने लगता है–

'बहुत याद आता है मेरा छोटा सा गांव
आईने सी बहती नदी और पीपल की छाँव
सीमेंट और कंक्रीट में मेरा गाँव कहीं खो गया
बुलडोजर की गड़गड़ाहट मे चिर निद्रा में सो गया
दे गया एक हरा घाव
बहुत याद आता है मेरा छोटा सा गांव'

समकालीन गद्य साहित्य में पर्यावरण चेतना के प्रति गांभीर्य झलकता है। पर्यावरण चेतना के संदर्भ में नासिरा शर्मा का उपन्यास 'कुइयां जान' पानी की किल्लत को उसके संकट को बड़ी ही गहराई से दर्शाता है उसका एक अंश– 'मोहल्ले के कुंए पाट दिए गए थे, 12 घरों में हैंडपंप थे जो खराब पड़े थे, मस्जिद वाली गली से मिली अंदर से पतली गली थी वहां पक्के बड़े–बड़े घर थे उनके यहां भी पानी की हाय तौबा मची थी, शिव मंदिर के पुजारी भी बिना नहाए परेशान बैठे थे, उन्होंने ना मंदिर धोया था ना भगवान को भोग लगाया था, उनके सारे गजरे लौटे खाली पड़े थे नल की टोटी पर कई बार कौवा पानी की तलाश में आकर बैठ उड़ चुका था, गर्मी ऐसी कि पसीना पानी की तरह शरीर से बह रहा था।'

कंक्रीट में तब्दील होते शहर, गांव जहाँ हरियाली दूर–दूर तक दिखती नहीं है, वृक्ष कटते जा रहे हैं, जंगल, खेत, खलिहान का कटाव जारी है ऐसे में जल का अभाव होना स्वाभाविक है। जल के अभाव का सजीव चित्रण' 'कुइयां जान' में मिलता है।

जल के महत्त्व और पहाड़ों पर विकास के नाम पर हो रहे अतिक्रमण, डायनामाइट के प्रहारों से चूर–चूर होते पर्वत, ग्लेशियर के प्रति चेतना जागृत करती एस. आर. हरनोट की कहानी है 'नदी गायब' है। 'लोग नदी के किनारे किनारे से पहाड़ की ओर चढ़ने लगे वहां से नदी नीचे बैठी थी। नदी छोटी थी लेकिन आज तक कभी उसका पानी नहीं सूखा था। कितनी भी गर्मी क्यों ना पड़े उसका पानी बढ़ता रहता था। वह नदी ऊंचे पर्वतों के पास से निकलती थी। वह हमेशा बर्फ के ग्लेशियरों से ढके रहते थे। उन पहाड़ों पर कई ऐसे हिमखंड थे जो सदियों पुराने थे। इसी छोटी सी नदी में कई गांव की रोजी–रोटी चलती थी। अभी तक इन पहाड़ों के गांव में कोई पानी की योजना नहीं थी इसलिए लोगों ने जरूरत के मुताबिक गांव में छोटे–छोटे पुलों से पानी लाया था लेकिन आज तो उन पर पहाड़ ही टूट गया था। अब रोज डाइनामाइटों के धमाकों से टनो के हिसाब से उस नदी में चट्टानें गिरनी शुरू हो गई थीं और नदी के किनारे जो घर थे वह पूरी तरह से नष्ट हो गए थे। स्थिति गंभीर बनती जा रही थी लेकिन कंपनी अपने काम को किसी भी तरह से रोकने के पक्ष में नहीं थी। यदि सड़क का निर्माण काम रुक गया तो उसका नुकसान हो सकता है इसलिए सरकारी आदेश भी ऐसे थे।' एस. आर. हरनोट की यह कहानी पहाड़ों के नैसर्गिक सौंदर्य को नष्ट कर वहाँ बनने वाले डैम, सड़कों इमारतों के दुष्परिणामों को इंगित करते हुए सचेत करती है।

पर्यावरण के प्रति सजग दृष्टिकोण रखता एक और उपन्यास है 'मीठी नीम'। धरती की हरियाली को मसलते ईट, गारों और पत्थरों के महल खड़े होते जाना जीवन की प्राणवत्ता से दूर होते चले जाना है। मीठी नीम उपन्यास जीवन से परिपूर्ण उस हरीतिमा की ओर ले चलता है। मन को कहीं ना कहीं रमना होता है लेकिन प्रकृति हमें सदा ही उलझ उचित करती है। प्रकृति हमें हमारी क्षमताओं से परिचित कराती है और वैसे भी हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जिसमें प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं। खनिज, तेल, घास के मैदान, सागर, कृषि और मवेशियों से मिलने वाली सभी वस्तुएं हमारी जीवन रक्षक व्यवस्थाओं के अंग हैं। जैसे–जैसे हमारी जनसंख्या बढ़ेगी हममें से हर एक व्यक्ति द्वारा संसाधनों का उपभोग भी बढ़ेगा तो पृथ्वी के संसाधनों का भंडार निश्चित रूप से कम होगा। ऐसे में आवश्यकता है संसाधनों के सीमित उपयोगों की जिससे हमारा ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के जीवन सुरक्षित रह सके। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति समाज को जागरूक कर अपनी प्रतिबद्धता भी सुनिश्चित करनी होगी जो कि वह बखूबी करती है। उसे दादी बनने की खुशी है लेकिन अपने पौधों को छोड़कर और बेटे के साथ न जाने का निश्चय करती है। यही प्रकृति प्रेम उसे ऊंचे आसन पर प्रस्तुत करता है। अनेकों शक्ति उपन्यास का एक और अंश मेट्रो रेल विकास का सूचक है लेकिन इस विकास में कितनी हरियाली नष्ट होती है यह किसी से छुपा नहीं है। उपन्यास में मुख्य पात्र ओमना कहती है इस गाड़ी की सफलता की पृष्ठभूमि में शहर के कुछ वयोवृद्ध वृक्षों का योगदान है। यह सच्चाई सरकारी नौकरशाहों से अधिक पैदल पथिक जानते हैं। कुसुम कुमार का यह उपन्यास मुख्य पात्र ओमना के माध्यम से हरीतिमा के प्रसार का संदेश देता है। ग्लोबल वार्मिंग जो कि हमारे पर्यावरण को भयंकर रूप से क्षति पहुँचा रहा है जिसे हम आप निरन्तर अनुभव कर रहे हैं। रत्नेश्वर का उपन्यास 'रेखना मेरी जान' ग्लोबल वार्मिंग विषय पर ही आधारित है इसमें प्रेम कथानक के माध्यम से ग्लोबल वॉर्मिंग की भयावहता को प्रदर्शित किया गया है। यह उपन्यास बहुत चर्चित भी रहा है।

आजादी से पहले जंगल को बचाने के लिये लोगों ने जंगल सत्याग्रह चलाया और फिर आजादी के बाद सुन्दरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में चिपको आन्दोलन शुरू किया गया। इन्हीं वन आन्दोलनों पर आधारित वाणी प्रकाशन से इतिहासकार–लेखक शेखर पाठक की एक नॉन–फिक्शन किताब 'हरी–भरी उम्मीद' है। शेखर कहते हैं– 'हमारे जीवन के केन्द्र में है जंगल।' उसी से हमें खाद्य पदार्थ, पानी, जड़ी–बूटी, कन्दमूल आदि मिलते हैं। फिर भी हम हरे–भरे जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई कर इमारतें और खेत बनाने में लगे हुए हैं। मेरी किताब न सिर्फ वन आन्दोलनों पर आधारित सात सौ पन्नों का शोधग्रंथ है, बल्कि इसके जरिए लोगों से जंगलों को बचाने की अपील की जा रही है।'

कुछ साल पहले 'चिपको आन्दोलन' की पृष्ठभूमि पर नवीन जोशी का लिखा उपन्यास 'दावानल', देवेन्द्र मेवाड़ी का संस्मरण 'मेरी यादों का पहाड़' और प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनंत का उपन्यास 'एक उम्मीद और' भी बुक स्टॉलों पर प्रमुखता से दिख रहा है। 'एक उम्मीद और' में गर्भस्थ शिशु लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिये प्रेरित करता है। यह उपन्यास न सिर्फ सामाजिक एवं प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषण पर सार्थक चिन्ता जताता है बल्कि उनसे निजात पाने के सार्थक संकेत भी देता है।

यात्रा वृतान्त 'इनरलाइन पास' में उमेश कहते हैं, 'इन क्षेत्रों में नदी के बहाव वाले इलाकों में लोगों ने घर बना लिये हैं। जिस दिन नदी अपने बहाव वाले रास्तों पर वापस आएगी, उस दिन वह सब कुछ बहाकर अपने साथ ले जाएगी। पर्यावरण के प्रति हो रहे इस तरह के खिलवाड़ के प्रति लोगों को मैंने इस किताब में चेताया है।'

भालचन्द्र जोशी का नया उपन्यास 'प्रार्थना में पहाड़' आया है। भालचन्द्र ने भले ही मध्य प्रदेश के मालवा अंचल के धार, झाबुआ और खरगोन के आदिवासियों के जीवन पर उपन्यास लिखा है लेकिन इसकी पृष्ठभूमि में पर्यावरण ही है। उपन्यास में शराब फैक्टरी के कचरे से नदी का पानी जहरीला हो जाता है, जिसे पीकर लोग मरने लगते हैं। भालचन्द्र कहते हैं, 'हिन्दी में समय–समय पर पर्यावरण की किताबें तो लिखी गईं लेकिन वे पाठकों को आकर्षित नहीं कर पाईं। दरअसल, लेखक जब तक खुद अनुभव न कर ले या वैज्ञानिक शोधों से रूबरू न हो जाये, तब तक विश्वसनीय तथा असरदार उपन्यास लिखना मुश्किल है।

रत्नेश्वर का नया उपन्यास 'एक लड़की पानी–पानी' पानी के संकट की ओर ध्यान आकर्षित करता है। भारत में और आसपास के देशों में होने वाले

जल संकट की भयावहता को आजकल के युवाओं के दृष्टिकोण से दर्शाया गया है इस उपन्यास में। उपन्यास में बताया गया कि पानी की अनुपलब्धता के कारण भारत 37 वे स्थान पर पहुँच गया है जो कि बहुत चिंता का विषय है और पाकिस्तान तीसरे स्थान पर है, पानी के कारण नागरिकों की घुसपैठ जारी है।

उपन्यास का एक अंश

''जल यानी पानी यानी आप जीवंत है इसमें भी हमारी तरह जीवन है, हमारी सनातनी ऋषियों को इसका सारा ज्ञान था इसीलिए वे जल को अभिमंत्रित करते थे और अंजुरी में लेकर जल सिद्धि करते थे, पूजा–पाठ की विधियों में जलाभिषेक, जल भरा कलश, जल अर्पण आदि। यह सब स्वयं के पंच तत्व से बाहरी पंचतत्व से मिलने के उपाय थे जिससे की पूरी प्रकृति हमारे जीवन के लिए सहयोगी बनी रहे'।

महुआ माजी की, 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' में यूरेनियम उत्खनन से उड़ने वाली पीली धूल से किस प्रकार आदिवासी जन जीवन को, पशु–पक्षियों को नुकसान पहुँचा रही है का वर्णन है। निश्चय ही प्रकृति का अत्यधिक दोहन करने पर प्रकृति अपना बदला ले लेती है। यह इस उपन्यास में बताया गया है।

कथाकार संजीव की 'रह गईं दिशाएँ इसी पार', मृदुला गर्ग की 'कठगुलाब', अलका सरावगी की 'एक ब्रेक के बाद', राजकिशोर की 'सुनंदा की डायरी', रणेंद्र की 'ग्लोबल गाँव के देवता', के वनजा की 'साहित्य का पारिस्थितिक दर्शन' आदि प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जागरूक करती है।

पंकज चतुर्वेदी जी की किताब 'लोक, आस्था और पर्यावरण' में उन उत्सवों और परंपराओं को सहेजने की बात कही गयी है जो परोक्ष रूप से प्रकृति को, पर्यावरण को सहेजते हैं। पुस्तक में बाजारवाद के कारण दीपावली, छठ आदि त्योहारों के बदलते स्वरुप पर चिंता व्यक्त की गई है जिससे पर्यावरण को क्षति पहुँच रही है जबकि इन पर्वों का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण रहा है। स्वानुभव पर आधारित मेरी स्वरचित कहानी 'केदार का तिलक' में भीषण त्रासदी का उल्लेख करते हुए उस त्रासदी के पीछे छुपे कारणों को भी जानने का सूक्ष्म प्रयास करती है। भौतिक समृद्धि और विकास के नाम पर प्रकृति और पर्यावरण का विनाश हो रहा है। प्रकृति का उपभोग सुन्दर जीवन यापन के लिए होना चाहिए किंतु यहां उपभोग के बजाय उसका इतना अधिक दोहन हो रहा है कि कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि ,कहीं विषैली हवा, कहीं भूस्खलन, हम निरन्तर देख रहे हैं। इस दोहन पर नियंत्रण आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में भगवती शरण मिश्र का उपन्यास 'लक्ष्मण रेखा' उल्लेखनीय है।

एक अंश 'कितना धुआं उगलोगे' अपने वाहनों से, फैक्ट्रियों से, रॉकेट से, मोटर गाड़ियों से यहां पर भी तो लक्ष्मण रेखा होनी चाहिए कि नहीं। कितना गंदे नालों का मुंह खोलोगे, कितना कचरा उगलोगे अपने कारखानों से, गंगा–यमुना और अन्य नदियों के पेट में? कितना अपेय बनाओगे पेयजल को कोई लक्ष्मणरेखा तो होनी चाहिए यहां भी? और वन तुम्हारे प्राण रक्षक तुम्हारे फेफड़ों में निरंतर वायु फूटने वाले तुम्हें शीतलता और शरण स्थली से लेकर फल–फूल के रूप में उदर पूर्ति का साधन बनने वाले आदिवासियों, वनवासियों के अस्तित्व उनकी संस्कृति के भी पोषक और प्रतीक हैं कब तक काटोगे इन्हें? कितना और कहां तक ? कोई लक्ष्मण रेखा खींचोगे कि नहीं जो प्रकृति के साथ तुम्हारे इस विवेकहीन व्यवहार पर अंकुश दे। निश्चय ही हिन्दी काव्येत्तर साहित्य पर्यावरण चेतना के माध्यम से पर्यावरण के प्रति सचेत करने का महती कार्य कर रहा है।

–प्रवक्ता
सीएचएम कॉलेज, मुम्बई
–ईमेल : maipanchami@gmail.com

◆◆◆

आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य में पर्यावरण चेतना

–डॉ मो. अरशद

➟ वर्तमान समय में पर्यावरण एक गम्भीर त्रासदी से गुजर रहा है। जहां एक तरफ कहीं सूखा, कहीं बाढ़ से उत्पन्न हुई परिस्थितियां हैं तो वहीं दूसरी तरफ पर्यावरण में फैले हुए विषैले रसायनों एवं कभी नष्ट न होने वाले उत्पादों का बेतहाशा इस्तेमाल किया जा रहा है। ऐसे संकटग्रस्त समय में समाज की सभी विधाओं की एक नैतिक जिम्मेदारी होती है कि वह प्रासंगिक मुद्दों पर चर्चा के द्वारा सृजनात्मक माहौल बनाए जो पर्यावरण संकट के प्रति सबको सचेत करे। पिछले 50 वर्षो से विकासशील देशों में हो रहे अनियोजित विकास ने प्राकृतिक धरोहरों के विनाश के लिए जो समस्याएं पैदा की है उससे कहीं न कहीं हमारे समय के साहित्य का संवाद अतिआवश्यक है। यह भी जरुरी है कि जब तक पर्यावरण संकट की समस्या को वृहद स्तर पर नहीं उठाया जायेगा तब तक आम जनमानस में चेतना का विस्तार नहीं हो सकता। ऐसे समय में जब हम हिन्दी साहित्य के संदर्भ में पर्यावरण चेतना की बात करते हैं और यह जानने की कोशिश करते हैं कि हिन्दी साहित्य के रचनाकारों ने पर्यावरणीय समस्याओं को अपनी रचनाओं में कितना स्थान दिया है और वे इसके प्रति कितने संवेदनशील रहे हैं तो इस क्रम में देखा जाय तो पता चलता है कि कबीर ने 600 वर्ष पहले लिखा था कि–

'काहे री नलनीं तू कुम्हिलानी,
तेरे ही नालि सरोवर पानी।
जल मैं उतपति जल मैं बास
जल मैं नलनी तोर निवास'
ना तलि तपति न ऊपरि आगि,
तोर हेतु कहु कासनि लागि।
कहै कबीर जे उदिक समान,
ते नहीं मूए हमारे जान।

जैसी रचना उस दौर में लिखी थी जब हमारा पर्यावरण आज की अपेक्षा स्वच्छ हुआ करता था। शहरीकरण और औद्योगिक विकास दूर–दूर तक नहीं था। यदि उस दौर में कोई रचनाकार कमल के कुम्हलाने की बात करता था तो इसका अर्थ यह है कि कबीर अपने समय में ही संकेत दे रहे थे कि भविष्य में हमारे जल स्रोतों का, हवाओं का, पहाड़ों का क्या होने वाला है। बाद के दौर में जब यूरोप से आयी औद्योगिक क्रान्ति ने दुनिया के विकास को एक नई दिशा दी, तब भी हमारे हिन्दी साहित्य के रचनाकारों ने पर्यावरण सुरक्षा के लिए आवाज उठायी। सामान्य तौर पर जब हम प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की बात करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वजों में, जल, वृक्ष, जीव–जन्तुओं के साथ जिस तरह की भावनाएं जुड़ी थीं वह अद्वितीय थीं। परन्तु बदलते दौर में आम जनमानस इन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से बहुत दूर हो गया। वह जिन पेड़ों की पूजा करता था, जिन जलनिधियों से उसका जीवनयापन होता था उन्हें ही वह नष्ट करने लगा।

मनुष्य एवं संस्कृतियों का विकास प्रकृति की सानिध्य में ही हुआ है। आदिमानव जंगलों में रहता था, उसकी वनस्पतियों का इस्तेमाल करता था तथा उनका संरक्षण भी करता था। वन्य जीवों के साथ मनुष्य का सम्बन्ध इतना प्रगाढ़ था कि जैवविविधता पर कोई खतरा नहीं था। चूंकि मनुष्य का विकास प्रकृति की गोद में हुआ इसलिए उसकी भावनाएं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से जुड़ी हुई थीं। भारत के महान ऋषियों, संतों एवं महात्माओं ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए या तो वृक्षों की छाया को चुना या नदियों के संगम पर अपनी कुटिया बनाई और वहीं से उन्होंने मानव कल्याण के लिए विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थों का निर्माण किया। यह इतिहास हमें बताता है कि जिस प्रकार हमारे संतों, महात्माओं ने प्रकृति के सानिध्य में, प्रकृति से जुड़कर जो प्रकृति संरक्षण की परम्परा तैयार की थी, बाद के दौर में आधुनिक मानवों की

जीवनशैली ने उसे तहस–नहस कर दिया।

आजादी के बाद हिन्दी काव्य साहित्य में कई रचनाकारों ने प्रकृति के विनाश की चिंता की है। जब दुष्यन्त कुमार यह लिखते हैं–

अब तो इस तालाब का पानी बदल दो
ये कंवल के फूल कुम्हलाने लगे हैं।

दुष्यन्त इस शेर में यह चेतावनी देते हैं कि तालाब का पानी पूरी तरह गंदा हो चुका है वह अब इस लायक नहीं है कि इसमें कमल के फूल भी रह सकें। जिस चेतावनी को कबीर 600 वर्ष पहले बताते हैं उसे दुष्यन्त 50 वर्ष पहले लिखते हैं। हिन्दी साहित्य में समय–समय पर रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में अपने समय में उत्पन्न खतरों से आगाह करने की कोशिश की है। सुशील शर्मा लिखते हैं–

नदियां मुझसे कर रहीं, चुभता एक सवाल।
कहां गया पर्यावरण, जीना हुआ मुहाल।।
तान कुल्हाड़ी है खड़ा, मानव जंगल खोर।
मिट रहा पर्यावरण, चोर मचाये शोर।।
हरे वृक्ष जो काटते, उनको है धिक्कार।
पर्यावरण बिगाड़ते जो, वो सब हैं मक्कार।।
मानव स्वार्थों से घिरा, बेचे सारे घाट।
पर्यावरण निगल गया, नदी ताल को पाट।।

सुशील शर्मा ने उपरोक्त रचना के माध्यम से मानव जाति से संवाद करते हुए उसे धिक्कारा भी है कि तुमने अपने स्वार्थ के लिए नदियों में कचड़ा डालकर ,जंगलों को काटकर अपने चमचमाते महल बना लिये और पर्यावरण को एक ऐसे मुहाने पर खड़ा कर दिया कि आज प्राकृतिक संसाधन संकटग्रस्त हैं।

फरहत एहसास लिखते हैं–

जंगलों को काटकर, कैसा गजब हमने किया।
शहर जैसा, एक आदमखोर पैदा कर लिया।।

फरहत ने यहां शहर की तुलना एक आदमखोर से की है। यह सच है कि शहरीकरण ने ही प्राकृतिक विनाश की गाथा लिखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ज्यादातर शहर नदियों के किनारे बसे हुए हैं। सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि नदियों की जमीनों पर कब्जा करके उसकी हरियाली को खत्म कर दिया है। हमारे अंदर जो आधुनिक जीवनशैली पनप गई है वह सिर्फ प्राकृतिक विनाश के लिए है।

प्रसिद्ध कवि गोपाल दास 'नीरज' जी ने लिखा है–

कोई दरख्त मिले, या किसी का घर आये
मैं थक गया हूं, कहीं छांव अब नजर आये।

नीरज जी इस शेर के माध्यम से बता रहे हैं कि एक पेड़ की छांव में मनुष्य को जो सुकून मिलता है वह कहीं और नहीं मिलता लेकिन वह छांव कैसे मिलेगा जब दरख्त ही नहीं हैं।

गज़लकार डी.एम. मिश्र लिखते हैं–

रक्त का संचार है पर्यावरण
सांस की रफ्तार है पर्यावरण
पेड़ रोते हैं कुल्हाड़ा देखकर
किस कदर लाचार है पर्यावरण।

इस शेर के माध्यम से मिश्र जी ने पर्यावरण की लाचारी को दर्शाया है कि जब कोई लालची मनुष्य कुल्हाड़ा लेकर पेड़ों की हरी–हरी डालियों को काटता है तो वह सिर्फ पेड़ नही काटता बल्कि कई जीव–जन्तुओं की हत्या करता है। बेजुबान पेड़ कुछ कह नहीं पाता। मनुष्य की यह आपराधिक प्रवृत्ति ही सृष्टि के विनाश की गाथा लिख रही है। एक तरफ जहां हमारे पूर्वजों ने बागें लगाईं, घर के द्वार पर नीम, घर के पीछे बांस लगाया और पीपल को न काटने का संकल्प लेकर जो पर्यावरण संतुलन बनाया था आज उसी मानव के बुद्धिहीन पुत्रों ने पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ने में अग्रणी भूमिका निभाई है।

मशहूर गज़लकार अशोक अंजुम लिखते हैं कि–

ये नदी वो घटा व आसमान फूलों का
काश हो जाता ये सारा जहान फूलों का।

अंजुम जी ने इस रचना के माध्यम से कंक्रीट बनती दुनिया में एक उम्मीद जगाने के लिए चेतनायुक्त मनुष्यों से अपील की है कि काश यह संसार फूलों से सजा रहता तो ये दुनिया कितनी खूबसूरत होती। जब नदियों के किनारे हरा–भरा पेड़ और पारदर्शी जल दिखाई देता है तो वह दृश्य कितना मनोरम होता है।

वरिष्ठ कवि रामदरश मिश्र लिखते हैं कि–

पूछते हैं पेड़, पेड़ों से सहम कर
क्या हवा में आज फैली सनसनी है।
मिश्र जी एक और शेर में लिखते हैं कि
जमीं खेत के साथ लेकर चला था

उगा उसमें कोई शहर धीरे–धीरे

इस शेर की व्यंजना दूर तलक है। जमीं खेत के साथ लेकर चला था यानी एक समय केवल जमीन ही जमीन थी उसमें खेती की जाती थी, उसमें अन्न पैदा होता था जिससे लोग जीवन यापन करते थे। आज उसी खेत में कोई शहर बन गया है तो अब न वो कृषि योग्य भूमि नजर आती है और न ही खलिहान नजर आता है। वरिष्ठ गज़लकार वशिष्ठ अनूप लिखते हैं–

क्यों उठ रही हैं लपटें, क्यों हुआ है लाल जंगल,
देना पड़ेगा उत्तर, करता सवाल जंगल।
क्यों घास–फूस–फल सब बारुद बन गये हैं
कैसी है आग जिससे लेता उबाल जंगल।
न नदी, न पेड़–पर्वत, न है पक्षियों का कलरव
है आज अकिंचन, था कल मालामाल जंगल।
बेहतर है वक्त रहते चलकर उसे मना लो
वरना करोगे क्या जब ठोंकेगा ताल जंगल।

तापमान बढ़ने की वजह से जंगलों में आग की घटनाएं बहुत तेजी से फैल रही हैं। इन सबके पीछे मानवजनित गतिविधियां हैं। आज घास–फूस–फल सब बारुद बन चुके हैं। जहां कभी जंगलों में असंख्य प्रजातियां रहती थीं आज उन प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो चुका है। अनूप जी मानव को इस गज़ल के माध्यम से चेतावनी दे रहे हैं कि यदि समय रहते जंगलों के संरक्षण के लिए कदम नहीं उठाए तो प्रकृति के विनाश को रोकना संभव नहीं है।
देवेन्द्र आर्य जी लिखते हैं–

हरापन मांगता है पेड़, तुमसे
अगर दोगे तो हरियाली मिलेगी
नही तो भूख
बदहाली मिलेगी।

इस कविता में पेड़ हरापन मांगता है। यह हरापन पेड़ों को जिन्दा रहने के लिए जरुरी है। यह हरापन पेड़ों को मिट्टी, पानी एवं प्रकाश से मिलेगा। परन्तु आज का मानव इन सभी प्राकृतिक संसाधनों को दूषित कर चुका है।

प्रकृति संरक्षण के लिए लोक साहित्य में भी बहुत ही सशक्त ढ़ंग से लिखा जा रहा है। लोककवि बैजनाथ 'गंवार' जी प्राकृतिक संसाधनों के नष्ट होने के कारण वन्यजीवों के अस्तित्त्व पर उत्पन्न हुए संकट पर लिखते हैं–

हिरना आजु गइला जाने कौनी ओरिया हो ना !
तोहरी हिरनी के होत बा फिकिरिया हो ना !
एक बन गइलीं, दूसर बन गइलीं, तीसरे बनवां,
परलीं धोखे से गले में फंसरिया हो ना !

इस गीत के माध्यम से रचनाकार ने उस संकट की तरफ इशारा किया है जहां जंगलों में रहने वाले जीवों के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। इसी गीत में वे आगे लिखते हैं–

सुनलीं कि अब मोर जंगलवो बिकायल,
कउनो सेठवा क गडल बा नजरिया हो ना!
सुना–सुना हिरनी, तूं सबके बतइहा,
बनबसियन के दे दिहा खबरिया हो ना!
छूटत हउवे साथ, अब जियला कठिन बा
तोंहके देखि लेईं, आजु भर नजरिया हो ना!

वैसे भी देश में जंगलों पर सरकार और पूंजीपतियों की नजर रही है। विकास की हनक ने सबके विवेक को खत्म कर दिया है। यह विनाशवादी दृष्टि ही जैवविविधता को खत्म करने पर तुली हुई है। गीत के अंत में गीतकार इस संकट से निपटने के लिए मनुष्य से अपील करता है–

पेड़वा पहाड़ नदी मिलिके बचइहा,
ना त रुकि जाई गंवार, तोर संसरिया हो ना!

साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के प्रति किये जा रहे लेखन से एक नई दृष्टि विकसित हो रही है। इस प्रकार के लेखन से उम्मीद है कि संरक्षण के लिए एक बेहतर माहौल बनेगा।

–प्रवक्ता
शिब्ली नेशनल इण्टर कॉलेज
आजमगढ़

◆◆◆

भारतीय राजनीति का नया पर्यावरण

–अरुणकांत पाठक

1 जुलाई 2024 का दिन था। 10 वर्षों में पहली बार विपक्ष के मान्यता प्राप्त नेता राहुल गाँधी का भाषण चल रहा था और एनडीए सरकार के सभी मंत्री और प्रधानमंत्री लोकसभा में बैठे थे। राहुल गाँधी ने शिवजी की तस्वीर दिखाते हुए कहा कि हम इनकी बात मानते हैं। इनकी पूजा करते हैं और इनकी अभय मुद्रा को मानते हुए न किसी से डरते हैं और न ही किसी को डराते हैं। राहुल गाँधी ने प्रधानमंत्री के चुनाव के दौरान दिए गए बयान को उद्धृत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री जी कहते हैं हमारा परमात्मा से सीधा कनेक्शन है, मैं बायोलॉजिकल नहीं हूँ । इसका क्या मतलब है कि रात्रि के 8 बजे परमात्मा से सीधा सन्देश आया कि नोट बंद कर दीजिए और नोटबंदी हो गई । इसी तरह की कई बातें जैसे किसानों की एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) सहित, बेरोजगारी, मणिपुर, धार्मिक हिंसा के साथ–साथ कई मुद्दे उठाये। हिंदू को लेकर उन्होंने कहा कि हिंदू वह है जो सत्य, अहिंसा के साथ रहता है लेकिन आप लोग तो हिंदू के नाम पर हिंसा करते हैं । इस बात पर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री अपनी सीट से दो बार उठकर खड़े हो गए अपनी प्रतिक्रिया दर्ज कराने के लिए। सामान्य तौर पर यह लोकतंत्र की जीत हुई कि 10 वर्षों में पहली बार प्रधानमंत्री जी विपक्ष के किसी नेता के भाषण के बीच में उठकर बोले। लगभग डेढ़ घंटे के भाषण में विपक्ष के नेता ने 5 कैबिनेट मंत्रियों को अपनी सीट से खड़े होने के लिए मजबूर कर दिया। राष्ट्रपति के अभिभाषण प्रस्ताव पर हो रही इस परिचर्चा में विपक्ष के नेताओं ने सत्ता पक्ष से ऐसे प्रश्न किये जिसका जवाब नवगठित सरकार के पास नहीं था। विपक्ष के चौतरफा हमले में अखिलेश यादव, के सी वेणुगोपाल , सहित कई नेताओं ने संसद को वर्षों बाद अपने भाषणों के द्वारा इस प्रकार घेरा जिसका जवाब देना सत्ता पक्ष के किसी नेता के लिए मुमकिन नहीं था। 3 जुलाई को जब प्रधानमंत्री जी राष्ट्रपति के अभिभाषण पर बोलने के लिए उठे तो 2014 का ना वो तेवर था और न ही कोई जवाब देने की तैयारी थी। वहीं दूसरी तरफ प्रधानमंत्री के भाषण के दौरान शायद पहली बार ऐसा हुआ कि विपक्ष के नेताओं ने जमकर नारेबाजी कर व्यवधान पैदा करने की पूरी कोशिश की। भारतीय राजनीत के इस नये पर्यावरण का कैसे स्वागत किया जाये कि माहौल इस प्रकार का हो गया है सदन के नेता को भी नहीं सुना जा रहा है।

संसद में जिन मुद्दों पर खासतौर से चर्चा होनी चाहिए उनमें से ज्यादातर मुद्दों पर चर्चा न होना यह

संकेत देता है कि आने वाले समय में जरूरी मुद्दों पर बहस नहीं होने वाली है . सामान्य तौर पर यह कहा जाता है कि संसद जनता के प्रश्नों को उठाने के लिए है और उन प्रश्नों के आधार पर सरकार की नीतियां बनती है। परंतु इस देश का दुर्भाग्य है कि संसद में अब देश के मुद्दों पर चर्चा की बजाय व्यक्तिगत छींटाकशी हो रही है। सिर्फ यही नहीं यहाँ किसी की जाति पूछी जा रही है तो किसी को धर्म के नाम पर कुछ भी बोल दिया जा रहा है।

भारतीय राजनीति के नये पर्यावरण में 2024 का परिदृश्य बहुत कुछ कह रहा है। एक तरफ वह राजनीतिक दल है जो लगातार 10 वर्ष से सत्ता में रहते हुए भी अपनी नीतियों के द्वारा कोई सार्थक बदलाव नहीं कर पाया और प्रत्येक समस्या के लिए विपक्ष की सरकारों को ही जिम्मेदार ठहराता आया है और ठहरा रहा है जबकि दूसरी तरफ वह गठबंधन है जो सत्ता पक्ष की नाकामियों और जातीय समीकरणों को साधकर सत्ता पक्ष के सामने एक चुनौती बनकर उभरा है । 2024 के आम चुनाव की राजनीति ने पिछले दो चुनावों से अलग माहौल बनाया है। भाजपा जहाँ सिर्फ एक चेहरे के नाम पर चुनाव लड़ रही थी जिसके पास महंगाई, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य पर कोई साफ दृष्टि नहीं थी वहीँ दूसरी तरफ विपक्ष ने महंगाई, जातीय जनगणना, संविधान बदलने की बात कहकर जनता के ज्यादातर जनमानस को अपनी तरफ मोड़ने की पूरी कोशिश की। विपक्ष की इस तरह की कोशिशों से मुकाबला करने के लिए सत्ता पक्ष ने अपना वही पुराना राग अलापना शुरू कर दिया जिसमें हिंदू–मुस्लिम का मुद्दा भी आ गया ।

वहीं विपक्ष इस बार जरूर मजबूत होकर उभरा है। यह मजबूती संसद के अंदर दिखाई दे रही है। लेकिन जिस विजन की जरूरत है वह नजर नहीं आ रही है। विपक्ष को महंगाई, बेरोजगारी, प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक फैले भ्रष्टाचार, बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्था, महिलाओं की सुरक्षा, कानून के नाम पर बुलडोजर संस्कृति के द्वारा किया जा रहा उपद्रव, तहसीलों से लेकर जिलों तक कार्यालयों में फैले भ्रष्टाचार, पर्यावरण सुरक्षा को ताक पर रखकर किया जा रहा अनियोजित विकास, देश में नदियों की बदहाल स्थिति जैसे मुद्दों को लेकर जिस तरह की बहस की जरूरत है वह नई सरकार के पहले संसद सत्र में नजर नहीं आया।

भारतीय राजनीति के इस नये पर्यावरण में जो सबसे खास बात नजर आई वह यह है कि कोई भी दल राजनीति का कोई नया मानक स्थापित करने नहीं जा रहा है। बल्कि मूल्यहीन राजनीति में ही कोई नया रास्ता तलाश रहा है क्योंकि पिछले कई वर्षों से भारतीय राजनीति में जो मूल्यहीन राजनीति हो रही है उसमें मूल्यों के आधार पर सत्ता प्राप्त करना नामुमकिन है। इन सबके बीच सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा रोजगार का हाशिये पर ही रहा है क्योंकि संस्थाओं के निजीकरण होते जाने की प्रक्रिया एवं ठेके पर दिए जा रहे रोजगार को किसी ने कोई मुद्दा नहीं बनाया। विपक्ष की इंडिया गठबंधन की कांग्रेस पार्टी ने केंद्र सरकार की भर्तियों में खाली पड़े 30 लाख पदों को भरने की योजना का विवरण अपने घोषणा पत्र में किया था लेकिन चुनावी शोर में जहाँ जाति और धर्म के नाम पर सब कुछ हो रहा था वहां युवा पीढ़ी के लिए यह कोई मुद्दा नहीं बन पाया । आमजन को नई सरकार से उम्मीदें बहुत रहती हैं। लेकिन इस सरकार में अभी तक चर्चा नहीं हुई . यह समझने की आवश्यकता है कि जब तक संसद में चर्चा नहीं होगी तब तक देश के किसी भी भाग में कोई बदलाव नहीं हो सकता। देश में युवाओं की बेरोजगारी की दर बढ़ रही है। हुनरमंद हाथों को कोई कार्य नहीं मिल रहा है। देश का जवान और किसान दोनों परेशान हैं।

18वीं लोकसभा के चुनाव परिणाम आने के बाद जो परिदृश्य भारतीय राजनीति में उभरा है वह लोकतंत्र को मजबूत करने के साथ ही साथ बहुत सारे प्रश्न भी खड़ा करता है। दोनों गठबन्धनों के पास कोई ऐसा विजन नहीं देखा गया जो किसी मजबूत और स्वस्थ लोकतंत्र की मजबूती के लिए जरूरी होता है। एक तरफ जहाँ सत्ता पक्ष अपने 10 वर्षों की विफलताओं को सफलता के साथ प्रस्तुत कर रहा था वहीं दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन भी मुफ्त में 8500 रुपये देश की गरीब महिलाओं के खाते में देने की बात कर रहा था। उन देशों की सरकारें ज्यादा जवाबदेह होती हैं जो जनता के मुद्दे पर बड़े फैसले के लिए जानी जाती हैं, विकसित देशों और विकासशील देशों के लोकतंत्र में सबसे बड़ा फर्क यह है कि विकसित देशों में जहां जनता के प्रति आवश्यक मुद्दों पर बहस होती है वहीं विकासशील देशों में यह बहस नहीं होती है। चुनावी रैलियों में नेताओं की बयानबाजी इतने निम्न स्तर तक गिर जाती है कि आम आदमी भी शर्मा जाये जिसे हम सत्ता सौंपने जा रहे हैं उसकी भाषा का स्तर इतना निम्न है तो और क्या कहा जाये। वर्तमान सरकार के सामने कई चुनौतियां हैं जिन पर भाजपा सरकार ने पिछले 10 वर्षों में कोई कदम नहीं उठाया है और यही कारण है कि 2024

के चुनाव में पूर्ण बहुमत नही प्राप्त हुआ। इस बार गठबंधन की सरकार बनने और विपक्ष के नेता को दर्जा दिए जाने के बाद सरकार को कई मुद्दों पर टकराव का सामना करना पड़ सकता है। यह टकराव सिर्फ संसद ही नहीं बल्कि अन्य कई मुद्दों पर भी मतभेद के साथ ही उभर सकता है। जब तक लोकतंत्र में असहमति का पक्ष मजबूत नहीं होता है तो सरकारें मनमानेपन पर उतारू हो जाती हैं। यही स्थिति इन 10 वर्षों के दौरान देखने को मिला। एक तरफ सत्ता पक्ष कांग्रेस मुक्त भारत का नारा दे रही थी वहीं दूसरी तरफ खुद ही वह कांग्रेसयुक्त भाजपा का निर्माण कर रही थी। जीवन के 50 वर्षों तक जिन्होंने कांग्रेस की मलाई खाई थी वह आज भाजपा में मलाई खाने की कोशिश में लगे हुए हैं। इस बदलाव में जहाँ यह देखने की जरूरत है कि देश में राजनीतिक शुचिता का स्तर कितना गिर गया है। भारतीय राजनीति में जहाँ प्रत्येक चनुाव में अपराधीकरण बढ़ता जा रहा है वही दूसरी तरफ जाति–धर्म के मुद्दे भी अपने फन फैलाए हुए हैं। इस फन को सिर्फ तर्कशील और वैज्ञानिक दृष्टि से ही नेस्तनाबूत किया जा सकता है. जब तक भारतीय समाज में इस दृष्टि की कमी है तब तक तर्कयुक्त समाज बनाना असंभव सा लगता है। राजनीति के अपराधीकरण की जब भी बात होती है तो सभी राजनीतिक दल यह दावे करते हैं कि राजनीति से अपराधीकरण दूर होना चाहिए लेकिन जब चुनाव की बात आती है तो सभी उसी अपराध की नगरी में गोता लगाते हुए दिखाई देते हैं। 18वीं लोकसभा के चुनाव परिणामों पर नजर डालें तो भारतीय राजनीति में कितनी गिरावट है इसका अंदाजा इन आंकड़ों से पता चलता है। वर्ष 2014 में हुए 16वीं लोकसभा चनुाव में कुल 185 सांसदों के ऊपर आपराधिक मामले दर्ज थे वहीँ 17वीं लोकसभा में 233 तथा 18वीं लोकसभा में 251 सांसदों के उपर मामले दर्ज हैं। इस नई राजनीति के दौर में यह कैसे कहा जा सकता है कि हम बेहतर भविष्य की तरफ बढ़ रहे हैं। जिस देश की संसद में जनता का प्रतिनिधित्व करने वालों के उपर दाग है तो वे लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में देश के लिए कानून बना रहे हैं तो कैसा होगा देश का भविष्य। जब प्रधानमंत्री जी का यह सपना है कि 2047 तक देश को हम विकसित भारत बना देंगे तो सबसे पहला प्रश्न यही खड़ा होता है कि क्या इन्हीं के दम पर वह बेहतर और विकसित भारत बना सकते हैं। इन राजनीतिक दलों की क्या मजबूरी है कि वे आपराधिक

कृत्य वाले लोगों को ही उम्मीदवार चुनते हैं। इन सबके बीच यदि राजनीतिक हिस्सेदारी की बात करें तो आधी दुनिया की हिस्सेदारी तो एक तरफ संसद में महिला आरक्षण बिल पास हो गया है कि 33 प्रतिशत हिस्सेदारी महिलाओं की होगी लेकिन वर्तमान संसद में केवल 74 महिला सांसद ही चुनी गई हैं जबकि 2019 में यह संख्या 78 थी। देश की सबसे बड़ी अल्पसंख्यक आबादी मुसलमानों (15 प्रतिशत) की है लेकिन केवल 24 मुस्लिम सांसद (4.4) प्रतिशत चुने गए हैं जबकि यह संख्या पिछले 6 दशकों में सबसे कम है। भारतीय राजनीति के इस नए पर्यावरण में सबसे बड़े बदलाव की बात यह कही जा रही है कि यह सबसे युवा सांसद है। वह यह है कि इस बार कुल 10 युवा सांसद ऐसे चुने गये हैं जिनकी उम्र 30 वर्ष के आस–पास है। इनमें से 4 सांसदों की उम्र 25 वर्ष के आस–पास है। लेकिन एक सच यह भी है कि जब यह कहा जाता है कि राजनीति में परिवारवाद को खत्म किये बगैर कुछ नहीं किया जा सकता है तब यह कहना कि यह युवा संसद है, बेमानी सा लगता है। इन युवा सांसदों में से ज्यादातर परिवारवादी राजनीति से ही आये हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण जरूर बदला है लेकिन इस पर्यावरण से कोई सार्थक बदलाव होगा या नहीं यह तो भविष्य के गर्त में है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या जब संसद में आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों की संख्या बढ़ रही है, अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व घट रहा है, योग्य लोग राजनीति में नहीं आ रहे हैं, जो पढ़ा लिखा वर्ग आ भी रहा है वह जनता के बीच से नहीं बल्कि पारिवारिक राजनीति को बढ़ावा दे रहा है। हमारी संसद में बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार कोई मुद्दा बनेगा या नहीं या हर बार की तरह केवल झुनझुना पकड़ा दिया जाएगा। जनता की थाली मंहगी होती जा रही है लेकिन चुनावी शोर में यह कोई मुद्दा नहीं बन पा रहा है। इन सभी विसंगतियों के बीच जनता सिर्फ संसद से यह उम्मीद कर सकती है कि वह कुछ ऐसा करे जो गरीबों की थाली न छीने। शायद इस बार जो 282 नए सांसद चुने गए हैं, हो सकता है कुछ नया करें या यह भी हो सकता है कि वे भी जाकर संसद में मूकदर्शक बनकर बैठे रहें। संसद के पहले सत्र में तो ऐसा कुछ नहीं दिखा कि बेरोजगारी, महंगाई और किसान कोई मुद्दा बने। परन्तु उम्मीद भी इन्हीं से रखने के साथ–साथ जनता को भी अपने जनप्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाने की आवश्यकता है। शायद भारतीय राजनेता राजनीति के इस नए पर्यावरण में कुछ नए कदम उठाने की कोशिश करें जिससे सभी की लोकतांत्रिक आस्था और मजबूत होकर उभरे।

–लक्षिरामपुर
मो० 9415831010

◆◆◆

पर्यावरण मुद्दा क्यों नहीं !

–डॉ मो. खालिद

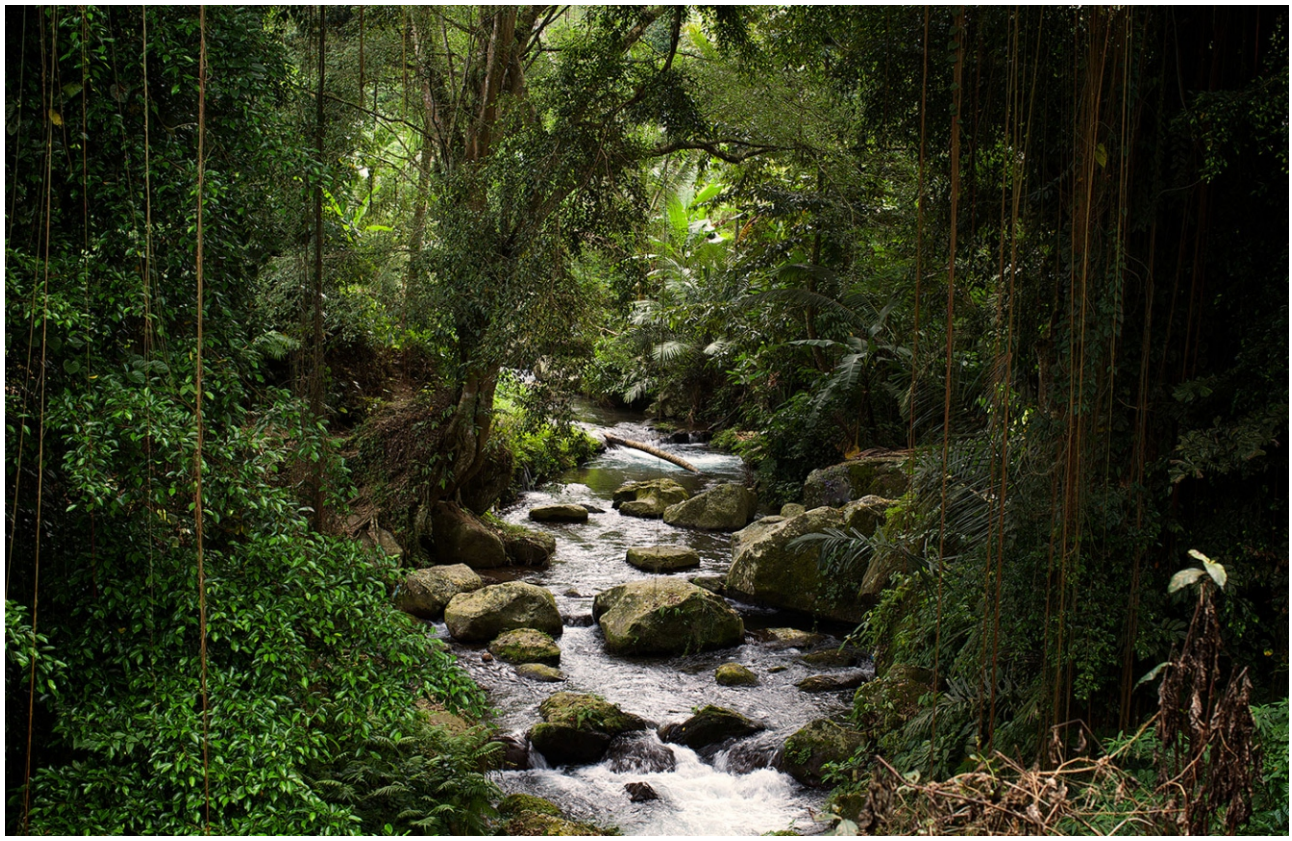

पिछले एक दशक से पर्यावरण में हो रहे बदलाव के प्रति सरकार और आम जनमानस उदासीन है। यह उदासीनता कहीं कोई बड़ा खेल न कर दे। भारत के आम चुनाव में पर्यावरण कभी मुददा नहीं बना। यही नहीं जो लोग इसके संरक्षण की बात करते हैं उन्हें राष्ट्रद्रोही भी मान लिया जाता है। जलवायु परिवर्तन की गंभीरता को समझे बगैर बेहतर स्वस्थ समाज का निर्माण करना संभव नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर जब भी पर्यावरणवादियों ने संरक्षण की बात उठाई उसे अनसुना कर दिया गया। देश में लगातार बढ़ रही जनसंख्या पर्यावरण को क्षति पहुंचाकर की जा रही है। ताल–तलैया, नदियों की जमीन पर जिस तरह का अतिक्रमण हो रहा है वह संकेत दे रहा है कि आने वाले भविष्य में प्राकृतिक संसाधन समाप्ति की कगार पर पहुंच जाएंगे। एक्सप्रेस वे बनाने के लिए जिस तरह से लगातार वनों को काटा जा रहा है वह बढ़ते वैश्विक तापन का संकेत है। इस तरह के संकेत के बावजूद भी पिछले वर्ष की गर्मी तथा मैदानी इलाकों में पड़ी भयंकर ठंड के प्रकोप से लोग चेते नहीं हैं जो भविष्य के लिए आसन्न संकट की तरह मुंह बाए खड़ा है। दरअसल भारत में शासन–प्रशासन की निगरानी में हो रहा पर्यावरण संरक्षण विनाश की गाथा लिख रहा है। यह विनाश सिर्फ पर्यावरण ही नहीं बल्कि जैवविविधता को भी अपनी चपेट में ले चुका है। कई प्रजातियां विलुप्त हो गई तो कई विलुप्त होने की कगार पर हैं। यह जैवविविधता पृथ्वी पर पारितंत्र को बचाए रखने में कारगर है। अभी कुछ दिनों पहले एक खबर में यह देखने को मिला कि खेतो में प्रयोग किए जा रहे कीटनाशकों से मधुमक्खियों पर खतरा उत्पन्न हो गया है जिससे मधुमक्खियां खत्म हो रही हैं। एक तरफ मधुमक्खियां जहां परागण में सहायक होती हैं वहीं दूसरी तरफ शहद उत्पादन में भी बड़ी भूमिका अदा करती हैं। यदि यह मान लिया जाए कि मधुमक्खियां यदि पृथ्वी पर न रहें तो क्या होगा। इनके खत्म होने से सिर्फ शहद का उत्पादन ही कम नहीं होगा बल्कि पृथ्वी की एक प्रजाति विलुप्त हो जाएगी। भारतीय संदर्भों में कहा जाए तो प्रजातियों के विलुप्त होने से भी एक संस्कृति भी खत्म हो जाती है। पिछले 3 दशकों में

देखा जाए तो कई सौ प्रजातियां विलुप्त हुई हैं। इनके विलुप्त होने का प्रमुख कारण है वासस्थान का विनाश होना या यह कहें कि पर्यावरणीय प्रदूषण। पर्यावरणीय प्रदूषण इस कदर फैल चुका है कि जल–थल और नभ में कचड़ों का अंबार ही अंबार दिखाई दे रहा है। जहां एक तरफ करोड़ों पेड़ प्रतिवर्ष काटे जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ हजारों जल संसाधनों का अस्तित्व खतरे में है। इन संसाधनों को तबाह करने की पूरी योजना बनायी जा चुकी है। विगत कई वर्षों से जहां वर्षा अनियमित हो रही है जिसकी वज़ह से सूखा और बाढ़ की घटनाएं आम हो चुकी हैं। यही कारण है कि पृथ्वी पर जीवन असंतुलित हो रहा है। इस असंतुलन के कारण बहुत सारी समस्यायें हो रही हैं। एक तरफ बढ़ती जनसंख्या का दबाव है तो दूसरी तरफ प्राकृतिक संसाधनों के विनाश की गाथा भी लिखी जा रही है। इन सभी पर्यावरण संकटों के बीच जिस राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है वह भी किसी राजनीतिक दल में दिखाई नहीं देती है या यह कहें किसी भी राजनीतिक दल के घोषणा पत्र में पर्यावरण संबंधी चिंताएं दिखाई नहीं देती है। जबकि कई राज्यों में जल के बंटवारे को लेकर वर्षों से तनातनी चल रही है। देश की किसी भी नदी को स्वच्छ नहीं कहा जा सकता है। जल, जंगल और जमीन को लेकर चल रहे आंदोलनों का असर कई जगह दिखाई दे रहा है तो कहीं कहीं इन आंदोलनों के नेतृत्वकर्ताओं को भी समाजविरोधी तत्व करार दे दिया जा रहा है। जबकि जमीनी धरातल पर यह देखने को मिलता है कि इन आन्दोलनकर्त्ताओं ने स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर कार्य किया है।

देश में जो भी विकास कार्य हो रहे हैं वे प्राकृतिक संसाधनों के विनाश की कीमत पर ही किए जा रहे हैं। एक 300 किमी. एक्सप्रेस वे के निर्माण में कितनी नदियों का रास्ता मोड़ दिया गया तो कितने पेड़ों को काट दिया गया इसका कोई हिसाब–किताब नहीं दिया जाता है। एक आरटीआई के जवाब में यह बताया गया कि 300 किमी. के एक्सप्रेस वे में 14571 पेड़ काटे गए जबकि कितने जलसंसाधनों का विनाश किया गया इसका कोई आंकड़ा नज़र नहीं आया। जैवविविधता का जो क्षरण हो रहा है इसका प्रमुख कारण है प्राकृतिक संसाधनों का विनाश। प्राकृतिक संसाधनों के विनाश की गाथा कई दशकों से लिखी जा रही है जिसकी वजह से वैश्विक तापन का असर भी दिखाई दे रहा है। इसी वैश्विक तापन का ही असर है कि भारत के मैदानी इलाकों में तापमान 49 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच गया था। जंगलों के न रहने की वजह से वायुमंडल में ज्यादा कार्बन संचित हो रहा है। कार्बन ज्यादा होने की वजह से वैश्विक तापमान बढ़ रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार कार्बन उत्सर्जन की मात्रा लगातार बढ़ने के कारण कई वर्षों के बाद भारत के मैदानी इलाकों में तापमान 49 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच गया था। यह स्थिति बहुत ही खतरनाक है। बढ़ते तापमान का असर सिर्फ प्राकृतिक संसाधनों पर ही नहीं बल्कि मानवजाति पर भी पड़ रहा है। 1 जुलाई को भारतीय मौसम विज्ञान के महानिदेशक डॉ. मृत्युंजय महापात्र ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि मई–जून महीने में ज्यादा गर्मी पड़ने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 1901 के बाद पहली बार 2024 में जून का महीना सबसे गर्म रहा। उन्होंने कहा कि देश के अलग–अलग हिस्सों पर जारी चक्रवाती प्रसार तथा बंगाल की खाड़ी से आ रही तेज दक्षिण–पश्चिमी हवाएं भी इसके लिए जिम्मेदार थी। महापात्रा के अनुसार जुलाई महीने में सामान्य से 80 प्रतिशत ज्यादा बारिश की संभावना है। देश में हीटवेव की घटनाओं से हजारों की मौत हो गई। कई मजदूर इस तड़पती गर्मी में दम तोड़ दिये। वर्षों बाद इस देश में रात का तापमान बहुत अधिक रहा। इस तापमान के कारण आधुनिक जीवनशैली जी रहे गांव से लेकर शहर तक लोगों ने एसी, कूलर का इस्तेमाल करना शुरु कर दिया। क्लोरो–फ्लोरो कार्बन गैस की मात्रा भी वातावरण में बढ़ गई जिसके कारण भी तापमान जरुरत से ज्यादा महसूस होने लगा। पर्यावरणीय प्रदूषण की वजह से प्राकृतिक स्रोतों में भी ज्यादा से ज्यादा हानिकारक रसायन छोड़े जा रहे हैं। ये हानिकारक रसायन जलीय जीवों के लिए भी खतरा पैदा कर रहे हैं। विगत कई वर्षों से जलीय प्रजातियों पर जो खतरा उत्पन्न हुआ है वह प्राकृतिक विविधता के लिए खतरे का संकेत है।

इन सबसे अलग विचार करने वाली बात यह है कि हमें विकास का कैसा मॉडल अपनाने की जरुरत है। यहां सरकारों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है जब वे पर्यावरण सुरक्षा को ताक पर रखकर फैसला लेती है। इनकी नीतियों में कोई ऐसी बात नहीं होती है जब वे कोई ठोस कदम उठाने को तैयार हों। नदियों की जमीनों पर हो रहा अतिक्रमण, अवैध रेत खनन तथा कई नदियों के किनारे तक लोगों ने अपने घर बना लिए हैं। सिर्फ़ इतना ही नहीं उद्योगों से निकल रहा कचरा नदियों में बहाने के

कारण वृहद स्तर पर प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। नदियों को संरक्षित करने के लिए देश में कोई नदी नीति नहीं बनी है लेकिन दुर्भाग्य है कि बीते आम चुनाव में भी इसे कोई मुद्दा नहीं बनाया गया है। सामान्य तौर पर नदियों को संरक्षित और पुनर्जीवित करने के लिए जिस दृष्टि की आावश्यकता है वह राजनीतिक दलों के पास नहीं है। चुनाव के दौरान राजनेता जब भी चुनाव क्षेत्र में जाते हैं तो यह वादा जरुर करते हैं कि हम पानी की समस्या को हल कराएंगे जबकि जीतने के बाद उनके लिए यह कोई मुद्दा नहीं रह जाता है। भारत के कई प्रदेशों में स्वच्छ जल की समस्या मुद्दा है लेकिन कोई भी सरकार इन मुद्दों के प्रति अपने विजन को स्पष्ट नहीं करती है और न ही कदम आगे बढ़ाती है। हाल ही में अभी ब्रिटेन में संपन्न हुए चुनाव में जो मुद्दे थे उन मुद्दों में 20 प्रतिशत पर्यावरण के मुद्दे रहे। वहीं भारत में 2024 के आम चुनाव में पर्यावरण के मुद्दे किसी भी राजनीतिक दल के घोषणा–पत्र में शामिल नहीं किये गये। उत्तर प्रदेश के पहाड़ी इलाकों, उत्तराखंड के जंगलों में लगी आग तथा उसके कटने की प्रक्रिया पर्यावरण के विनाश की गाथा लिख रहे हैं। इन परिस्थितियों में पर्यावरण संकट का कोई मुद्दा न बनना आश्चर्यजनक है।

नदी, जंगल और पहाड़ का हो रहा विनाश देश के किसी भी राज्य विधानसभा के चुनाव में चुनावी मुद्दा नहीं बन पाया। इसका सबसे बड़ा कारण था सभी दलों की राजनीतिक चेतना पर्यावरण के प्रति शून्य है। इस शून्यता के कारण जनता के लिए पर्यावरण भी मुद्दा नहीं बना। खासकर उत्तर भारत के राज्य राजस्थान, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड इलाके में पानी के लिए संकट बहुत बड़ा है। यहां पानी हमेशा मुद्दा रहा है। इसी के कारण यहां पर कई संस्थाएं पानी के संरक्षण के लिए कार्य कर रही है।

सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की नज़रें कभी भी देश की नदियों की दुर्दशा पर नहीं जाती। अभी हाल ही में केरल के वायनाड में हुए भूस्खलन ने यह दिखा दिया है कि प्रकृति के विनाश को ताक पर रखकर किया जा रहा विकास बहुत खतरनाक है। जहां एक तरफ जंगलो के खत्म होने से वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा दिनोंदिन बढ़ती जा रही है, जिसकी वजह से वैश्विक तापन लगातार बढ़ रहा है। महासागरों के पानी के गर्म होने से जो मौसम में बदलाव देखा जा रहा है वह भविष्य के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं। समुद्र के पानी के बदलते तापमान की वज़ह से मौसम में जो बदलाव हो रहा है उससे भारत में वर्षा के अनियमित होते जाने के परिणाम दिखाई दे रहे हैं। रेगिस्तानी राज्य के नाम से विख्यात राजस्थान में इतनी बारिश हुई कि लोगों के घरों में पानी तक भर गया। वहीं उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में भयंकर बाढ़ आने की वजह से लोग बहुत परेशान हुए हैं।

यह स्थिति अपने आप में बहुत ही खतरनाक है कि नदियां, पहाड़ और जंगल आधुनिक विकास की भेंट चढ़ चुके हैं लेकिन सरकारों के कानों में जूं तक नहीं रेंग रही है। नदियों के किनारे तक पहले मकान बनाने और होटल बनाने की अनुमति दे दी जाती है वहीं दूसरी तरफ बुद्धिहीन मनुष्य भी चमचमाते घर बनवाते समय यह नहीं सोचता कि वह क्या करने जा रहा है। शासन भी आंख मूंदकर इन प्राकृतिक संसाधनों को रौंदने की खुली छूट दे देता है। परिणामस्वरुप प्रकृति की विनाशलीला का तांडव हो रहा है। पारितंत्र नष्ट हो रहा है और जैव प्रजातियां भी खत्म होने की कगार पर आ गई हैं लेकिन आधुनिक मानव के लिए यह कोई मुद्दा नहीं बन पाया है। यह मुद्दा क्यों नहीं बन पाया इसका कारण क्या है यह तो हमारे राजनीतिज्ञ ही ज्यादा बेहतर बता पायेगें। लेकिन गौर करने वाली बात यह है कि वह कौन से मुद्दे हैं जिस पर राजनीतिज्ञों को सोचने की जरुरत है उसमें पर्यावरण मुख्य है। यदि प्राकृतिक विरासतों के संरक्षण के लिए कोई खास कदम नहीं उठाया गया तो धरती पर जीवन जीना मुश्किल हो जाएगा।

◆◆◆

माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियां

–संतोष कुमार मिश्र

माध्यमिक शिक्षा किसी भी छात्र के भविष्य को निर्धारित करने वाली शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए जिस संकल्प की आवश्यकता है। वह संकल्प हमारे संस्थानों में नजर नही आता। वर्ष 2009 में शुरू किये गये राष्ट्रीय शिक्षा अभियान के तहत वर्ष 2017 तक माध्यमिक स्तर के शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच और वर्ष 2020 तक इसका सार्वभौमिक प्रतिधारण प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया था, परन्तु आर्थिक विकास और शिक्षा के क्षेत्र में कई उपलब्धियों को प्राप्त करने के बावजूद यह उद्देश्य पूरा नहीं हो पाया। वर्ष 2020 में जारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा के लिए एक विशेष दृष्टिकोण की परिकल्पना की गयी है। इसका लक्ष्य यह है कि वर्ष 2030 तक माध्यमिक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और सार्वभौमिक बनाने की आवश्यकता को विशेष बल दिया गया है। जबकि देश की वर्तमान माध्यमिक शिक्षा पद्धति को देखते हुए नई शिक्षा नीति के उद्देश्य को साकार करना असंभव सा लगता है।

यू.डी.आई.एस.ई.–प्लस के वर्ष 2020–21 के आंकड़ों के मुताबिक माध्यमिक (9,10) और उच्चतर माध्यमिक (11,12) स्तर पर राष्ट्रीय स्तर के कुल नामांकन दर 80 प्रतिशत और 54 प्रतिशत थी। जबकि प्राथमिक स्तर पर यह 99 प्रतिशत के साथ दर्ज की गयी थी। इन आंकड़ों के आधार पर हम कह सकते है कि आज भी इस देश में माध्यमिक शिक्षा में माध्यमिक स्तर पर 20 प्रतिशत तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 46 प्रतिशत छात्रों का नामांकन नही हो पा रहा था। इन परिस्थतियों में यह कैसे कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षा को 2030 तक सार्वभौमिक बना दिया जायेगा। वर्तमान समय में भारत में 14 से 17 वर्ष की आयु की ज्यादातर बच्चे माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ है। इन आंकड़ों में सबसे उच्च स्थान बिहार का है जहां पर वर्ष 2020–21 में उच्च माध्यमिक स्तर पर नामांकन दर केवल 18 प्रतिशत ही थी। जबकि तमिलनाडु में 47 प्रतिशत और हिमांचल प्रदेश में 57 प्रतिशत था।

यहा आंकड़ा अपने आप में यह बयान करता है कि भारत में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति बद्तर है। सरकारी आंकड़ों में जो दर्ज है वास्तविक स्थिति उससे कहीं और बदतर नजर आती है। भारत में माध्यमिक शिक्षा की निराशाजनक स्थितियों को देखते हुए ऐसा लगता है कि इसके पीछे कई चुनौतियां है। इन चुनौतियों में पहला स्थान माध्यमिक शिक्षा के लिए सरकारी उदासीनता है। उपरोक्त संस्था के आंकड़ों के अनुसार ही देश के 15 लाख स्कूलों में से केवल 291466 या 19 प्रतिशत ने माध्यमिक या उच्च माध्यमिक शिक्षा की पेशकश की है। जबकि देश के सभी विद्यालयों में 95 प्रतिशत स्कूल प्राथमिक शिक्षा प्रदान करते हैं। माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत दूरी का कोई मानदण्ड नहीं है। जब तक कोई राज्य अपने स्तर पर मानदण्ड को सूचित नही करता है। कई बड़े गांवों में माध्यमिक शिक्षा के स्कूल नजर नहीं आते बल्कि उस गांव के बच्चों को माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए 5–10 किलो मीटर दूर तक यात्रा करनी पड़ती है। दूर–दराज के क्षेत्रों में लड़कियों का माध्यमिक विद्यालयों तक पहुंचना सुरक्षा की दृष्टि से भी एक चिन्ता का विषय है। वर्ष 2020–21 में ही संसद में पूछे गये एक प्रश्न के जवाब में यह पता चला कि वर्ष 2020–21 के दौरान देश में स्थित कुल बस्तियों में से 98 प्रतिशत बस्तियों के 1 किलोमीटर के दायरे में प्राथमिक विद्यालय थे। जबकि 93 प्रतिशत बस्तियों के 5 किलोमीटर के दायरे के अन्दर माध्यमिक विद्यालय थे। इन कुल माध्यमिक विद्यालयों में से 43 प्रतिशत निजी विद्यालय थे। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी मशीनरी माध्यमिक शिक्षा के प्रति कितनी उदासीन है। सरकार के द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के लिए इस प्रकार का सीमित प्रावधान आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों को लिए प्रवेश एक बाधा है। वहीं दूसरी तरफ सामान्यजन भी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में माध्यमिक विद्यालयों में अपने बच्चों को प्रवेश कराने में असमर्थ हैं क्योंकि माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के बजाय अधिक महंगी है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के पारिवारिक आंकड़ों के विश्लेषण से यह जानकारी प्राप्त हुई कि वर्ष 2017–18 के दौरान विद्यालयों की एक विशेष श्रेणी के अन्दर माध्यमिक शिक्षा का खर्च प्राथमिक शिक्षा की तुलना में बहुत ज्यादा है। इस वजह से ज्यादातर आर्थिक रूप से

कमजोर परिवार अपने बच्चों को माध्यमिक शिक्षा देने में असमर्थ साबित हो रहे है। माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश लेने से परिवारों के ऊपर आर्थिक बोझ पड़ता है जिसके कारण ज्यादातर बच्चे माध्यमिक शिक्षा से ही वंचित हो जाते है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा के साथ–साथ उच्च शिक्षा दिलाना भी ज्यादातर परिवारों के लिए असंभव प्रतीत होता है। एक सर्वेक्षण के आधार पर 31 प्रतिशत बच्चों ने यह बताया कि पारिवारिक आय की पूरक कामों में संलग्न होने के कारण वे बाल श्रम की तरफ जाने को मजबूर हुए है। वहीं 25 प्रतिशत बच्चों ने यह बताया कि घर के कामों में हाथ बटाने के लिए वह स्कूलों से दूर हो रहे है। जबकि 18 प्रतिशत बच्चों ने माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक नही है इसकी जानकारी दी। यह सर्वेक्षण यह इंगित करता है कि माध्यमिक शिक्षा के प्रति लगभग 50 प्रतिशत के ऊपर परिवारों में कोई जागरूकता नही है। जबकि शासन स्तर पर शिक्षा को केवल साक्षरता से ही जोड़ दिया गया है।

भारतीय परिदृश्य में माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति को प्रभावित करने वाला एक बड़ा कारक यह है कि माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में निवेश स्तर न्यूनतम है। वर्ष 2019–20 के दौरान सकल घरेलू उत्पाद का केवल 4.39 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया गया जो कि 1966 में गठित कोठारी आयोग के द्वारा 6 प्रतिशत निवेश का लक्ष्य 1986 तक प्राप्त किया जाना था। जो 1986 तक नही पूरा हुआ। परन्तु 38 वर्ष बाद भी शिक्षा में निवेश 6 प्रतिशत न होकर 4.39 प्रतिशत तक ही रह गया। वर्तमान यह प्रतिशत 2009 से लगातार घटता रहा और 2.8 प्रतिशत तक आ गया है। सामान्य तौर पर यह दर्शाता है कि सरकार शिक्षा के प्रति कितना उदासीन है। यदि 1986 तक यह निवेश 6 प्रतिशत तक हो गया होता तो वर्तमान में दुनिया में विकसित देशों में इस देश का स्थान होता। राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के स्तरों में बजट को देखा जाय तो सबसे ज्यादा खर्च प्रारम्भिक शिक्षा पर ही हुआ है। यही कारण है कि आज तक माध्यमिक शिक्षा की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है।

नई शिक्षा नीति 2020 के द्वारा माध्यमिक शिक्षा में व्यवसायिक शिक्षा के कौशल विकास को शामिल करने के बात कहीं गयी है। जिसके लिए ज्यादा निवेश की आवश्यकता है। अधिकाधिक निवेश से माध्यमिक शिक्षा में रोजगार की संभावनाओं को देखते हुए बेहतर बदलाव किया जा सकता है। परन्तु माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्ता को मजबूत करने के लिए कई अन्य बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने की जरूरत है। जैसे योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता, विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं में बेहतर बदलाव तथा एक कुशल प्रशासक प्रणाली के साथ ठोस नियामक तंत्र शामिल है। परन्तु यह अफसोस जनक है कि भारत बुनियादी सुविधाओं तथा बेहतर प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति के लिए कोई ठोस कदम नही उठा पाया।

वर्ष 2020–21 के आंकड़ों को ही लिया जाय तो यह पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों में कुल स्वीकृत शिक्षकों के पदों में से 19 प्रतिशत माध्यमिक स्तर पर और 24 प्रतिशत उच्च माध्यमिक स्तर पर पद रिक्त है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक यह जानने की कोशिश की गयी कि लोग अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजने के बजाय निजी स्कूलों में क्यों भेजते हैं। इसका यह उत्तर प्राप्त हुआ कि सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता ठीक नहीं है तथा आस–पास कोई सरकारी माध्यमिक विद्यालय नहीं हैं। कुछ हद तक यह कहा जा सकता है कि प्रबंधकीय विद्यालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार एक प्रमुख वजह है जिसकी वजह से विद्यालयों की बुनियादी व्यवस्थाए बदतर हो गयी हैं। वहीं दूसरी तरफ निजी स्कूल मोटी फीस वसूलने के साथ छात्रों के साथ सामंजस्य बिठाकर शिक्षण कार्य करते है तो माता–पिता को यह लगता है कि उनका बच्चा निजी स्कूलों में ज्यादा सुरक्षित है। देश में माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिकोण को दृष्टिगत रखते हुए और वर्तमान परिस्थितियों से तुलना करते हुए केन्द्र और राज्य सरकार दोनों को एक साथ मिलकर कार्य करने की जरूरत है। माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में निवेश में पर्याप्त वृद्धि की जरूरत है। साथ ही साथ प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति, शिक्षण अधिगम के संसाधन तथा एक जवाबदेह एवं पारदर्शी व्यवस्था बनाने के साथ ही साथ शिक्षा की गुणवत्ता में विशेष सुधार किये जाने की आवश्यकता है। यदि 2030 तक माध्यमिक शिक्षा को सार्वभौमिक शिक्षा बनाना है तो आमूल–चूल परिवर्तन की जरूरत है।

–प्रवक्ता
बिहारी लाल इण्टर कॉलेज, दनकौर, गौतमबुद्धनगर

◆◆◆

सामाजिक शिक्षा के सन्दर्भ में नई शिक्षा नीति

–इन्द्रसेन सिंह

सामाजिक विषय की शिक्षा किसी भी समाज के लिए अतिआवश्यक है। इसका उद्देश्य यह होता है कि विद्यार्थियों को सभी बिन्दुओं से परिचित कराना। बदलते समय के साथ किसी भी देश की आकांक्षाएं एवं आवश्यकताएं बदलती रहती हैं। लोग अपनी जरूरतों के हिसाब से शिक्षा के उद्देश्य को अपने अनुसार निर्धारित करने की कोशिश भी करते हैं। वर्तमान समय में किसी भी विषय का मूल्यांकन सामाजिक विकास के बजाय रोजगारोन्मुख विकास की ओर देखा जा रहा है। यह अपने आप में चिंताजनक है कि किसी भी विद्यार्थी में बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करने की बजाय उसे सिर्फ नौकरी से जोड़कर देखा जा रहा है। यही कारण है कि ज्यादातर विद्यार्थी विज्ञान, तकनीक को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। इन परिस्थितियों में सामाजिक विज्ञान को सबसे ज्यादा उपेक्षित विषयों की श्रेणी में रखा जा रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विद्यार्थियों को बहुआयामी शिक्षा देने की बात करती है कि वहीं दूसरी तरफ विभिन्न स्तरों पर कक्षाओं में सामाजिक विषय की शिक्षा के सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करने के लिए कई प्रकार के सुझाव प्रस्तुत करती है जिससे विद्याार्थियों तथा शिक्षकों में आमूल–चूल परिवर्तन के साथ बदलाव हो सकते हैं।

सामाजिक विषय की पाठ्यचर्या के जमाने में सूचना और जानकारी पर अधिक बल दिया जाता था। इन पाठ्य पुस्तकों में इतिहास, संस्कृति तथा अपनी विरासत से परिचित कराने के अलावा और भी कई सामग्रियां रहती थी। जिसकी वजह से माध्यमिक शिक्षा में विद्यार्थियों के उपर ज्यादा बोझ रहता था। प्रो. यशपाल समिति ने अपनी सिफारिश में यह लिखा है कि शिक्षा बिना ज्ञान बोझ के पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त भार के साथ सूचनाओं और जानकारी से उपजने वाले मानसिक दबाव की तरफ भी इशारा किया था।

यही कारण है कि शिक्षा का उद्देश्य कभी भी सामाजिक बदलाव के रूप में नहीं जुड़ पाता है और वह सिर्फ कक्षा रूम तक ही रह जाता है। सामाजिक विज्ञान का शिक्षण कई मुद्दों पर अपनी समझ कायम रखने में मदद प्रदान करेगा, साथ ही साथ नैतिकता, संवैधानिक मूल्य तथा सामाजिक सरोकार, संवेदनशीलता से जोड़ने का प्रयास करेगा। सामाजिक विषय में सम्मिलित किये गये पाठ्यक्रमों का सम्बन्ध समाज के अन्दर मौजूद मान्यताओं, विभिन्न समुदाय के पारस्परिक सम्बन्धों तथा हितों और विश्वास के साथ जुड़ा रहता है। जिसके कारण अनेक अनुभव प्राप्त करते हुए छात्र विद्यालय जाता है। सामाजिक विशय के शिक्षण में ज्ञान की संरचना का इस प्रकार निर्माण करना चाहिए जो विद्यार्थियों में एक सार्थक बदलाव का अनुभव विकसित करने के लिए मौका प्रदान करे। जिसका उपयोग करके वे एक सामाजिक दृष्टिकोण का विकास कर सके। वही दूसरी तरफ सामाजिक विषय के शिक्षकों को भी अपने ज्ञान को सिर्फ पाठ्य–पुस्तकों तक ही सीमित न रखकर अपने सामाजिक परिवेश से उत्पन्न अनुभव को भी शिक्षण में सम्मिलित करने की कोशिश करनी चाहिए। परन्तु सामाजिक विषय शिक्षण की एक मुख्य चुनौती परम्परागत शिक्षण तरीकों से जुड़ी हुई है जिसमें विद्यार्थियों के पास कुछ नया सीखने का अवसर नही होता वे सिर्फ किताबों में लिखित अध्यायों के आधार पर ही ज्ञान को अन्तिम अवसर प्रदान करते हैं। जबकि सामाजिक विषय का शिक्षण समाज के विभिन्न मुद्दों से जुड़ी हुई परिस्थितियों पर ही निर्भर करता है। किसी भी सामाजिक विषय का सही विश्लेषण आंकड़ों का आंकलन और मूल्यांकन किये बगैर सम्भव नहीं है। जिस प्रकार भाषायी शिक्षण में कविता, कहानी, नाटक के द्वारा विषय वस्तु का ज्ञान प्रदान किया जाता है। उसी स्तर पर सामाजिक विषय के पाठ्यक्रम को भी बनाने की आवश्यकता है। सामाजिक समुदायों के अन्दर व्याप्त संस्कृति तथा समस्याओं से उत्पन्न ज्ञान और अनुभव को यदि विद्यालयों में शिक्षण के तौर पर प्रयोग में लाया जाय तथा उसके महत्व को विद्यार्थियों से साझा किया जाय तो यह बेहतर सामाजिक विषय के शिक्षा का तरीका साबित हो सकता है। सामाजिक विषय को जब तक घटनाओं के विवरण के माध्यम से पढ़ाया जाता रहेगा तब तक वह किसी भी विद्यार्थी के अन्दर सामाजिक विषय के प्रति रूचि पैदा नही कर सकता। सामाजिक विषय के शिक्षण विधि को बहुस्तरीय, लचीली, खोज, और गतिविधि आधारित बनाने की आवश्यकता है। जिसके द्वारा

विद्यार्थियों को सामाजिक कार्य सुलझाने, शिष्टाचार, स्वच्छता, संवेदना अच्छी व्यवहारशैली, सामूहिक कार्य और लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ एक दूसरे पर विश्वास और सम्मान की भावना जागृत करने की आवश्यकता मौजूद हो। इसके साथ ही साथ विद्यार्थियों से सामाजिक बिन्दुओं पर भी प्रश्न करने की आदतों का विकास करना तथा उनकी गलतियों से भी सीखने का प्रयास करना भी एक माध्यम हो सकता है।

किसी भी शिक्षक को एक पेशेवर नीति के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। जिसके द्वारा वह माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में मानविकी विषयों में हो रहे निरन्तर शोध, खोज से अवगत कराकर समाज में विद्यार्थियों के अन्दर एक बेहतर सामाजिक मूल्य विकसित करने की कोशिश करना भी आवश्यक है।

भारत में वर्ष 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सामाजिक प्रभावों के महत्व को दर्शाया गया है और यह बताया गया कि सामाजिक विषय की शिक्षा को समावेशिता, गुणवत्ता और प्रासंगिकता के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। सामाजिक विषय की शिक्षा रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के साथ–साथ सामाजिक समस्याओं के लिए नये–नये समाधान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। विद्यार्थियों को सामाजिक क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभावों के बारे में शिक्षा देने से उनके अन्दर समाज और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना का विकास होता है तथा उनमें निर्णय लेने और उनके परिणामों पर सोचने की क्षमता विकसित होती है साथ ही साथ सामाजिक प्रभाव की शिक्षा छात्र–छात्राओं को अलग–अलग संस्कृतियों और पृष्ठभूमियों को जोड़ने का कार्य भी करती है। जिसके द्वारा समाज के पूर्वाग्रह को तोड़ने में मदद मिलती है। शिक्षा किसी भी समाज में समावेशिता को बढ़ावा देती है और एक बेहतरीन समाज के निर्माण के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक विषय या प्रभाव का अर्थ किसी भी महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक परिवर्तन से है जो समाज की चुनौतियों से निजात पाने में सक्षम साबित होता है। वर्तमान समय में समाज के सभी क्षेत्रों में अपने सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए व्यापक बदलाव देखा जा रहा है। यह बदलाव समाज के सतत् विकास के साथ ही साथ बेहतर पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में भी मदद प्रदान कर सकता है। वर्तमान दौर जब पर्यावरणीय संकट, असमानता, जातिवाद, धार्मिक भेदभाव जैसी सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहा है। ऐसे में इन सभी समस्याओं से निपटने के लिए सामाजिक विषय की शिक्षा को बेहतर बनाकर एक बेहतर समाज बनाने की संकल्पना की जा सकती है और यह संकल्पना तभी पूरी होगी जब समाज के अन्दर व्याप्त समस्याओं के समाधान खोजने में रचनात्मकता और नवीनता का विकास होगा। यह विकास सामाजिक चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए नये प्रकार का दृष्टिकोण, वैज्ञानिक सोच और नई रणनीति के विकास को प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। सामाजिक शिक्षा का तात्पर्य पाठ्यक्रम और शैक्षिक गतिविधियों में सामाजिक बिन्दुओं को शामिल करना है जिसके द्वारा छात्र–छात्राओं में जागरूकता की भावना के साथ–साथ सामाजिक जिम्मेदारी की भावना जागृत हो सके।

इस सामाजिक प्रभाव की शिक्षा में अनुभवों की विशेष भूमिका हो सकती है। जैसे समाज के सामाजिक उद्यमों के साथ समुदाय विशेष के साथ सभी को जोड़कर जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम कराये जायें। वहीं दूसरी तरफ शिक्षण संस्थान भी अपने पाठ्यक्रम में समाज में व्याप्त समस्याओं को प्रमुख रूप से एकीकृत करके अध्ययन कर सकते है जिससे भावी पीढ़ी को ज्यादा से ज्यादा तार्किक बनाया जा सके। इन संस्थानों को सामाजिक उद्यमिता को संस्कृति का बढ़ावा देकर सामाजिक नवाचार और व्यवसाय आधारित पाठ्यक्रमों के माध्यम से बेहतर शिक्षा के प्रभाव को क्रियान्वयन कर सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमता के दौर में सामाजिक विषय की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण होती जा रही है। सामाजिक रचनाशीलता कृत्रिम बुद्धिमता के माध्यम से पूरा नहीं किया जा सकता है। अभी कुछ दिनों पूर्व भारतीय प्रबंधन संस्थान रांची में शिक्षा में सामाजिक प्रभाव को रणनीति की प्राथमिकता के रूप में चिन्हित किया गया है। इसका उद्देश्य यह रहा है कि पेशेवर प्रबंधकों की ऐसी पीढ़ी तैयार की जाय जिनके पास एक सामाजिक चेतना के साथ–साथ वैश्विक दृष्टिकोण का बोध हो और इस माध्यम से वे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में भी सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय कारकों की गहरी समझ विकसित करने के साथ–साथ वैज्ञानिकता का भी विकास कर सकेंगे।

सन्दर्भ : नई शिक्षा नीति 2020

–शिक्षक
नेशनल इण्टर कॉलेज
मुहम्मदाबाद, गोहना, मऊ
ईमेल : indrasensingh51164@gmail.com

◆◆◆

विलुप्त होती नदियां : सतत जीवनशैली से ही बचेंगी

-प्रज्ञा पाण्डेय

आदिम युग में जिन नदियों के किनारे अनगिनत सभ्यताएं पनपी हों और मानव जीवन को भरण पोषण मिला हो वही नदियां अब इंसानों के बेतहाशा दोहन का शिकार हो गई हैं। इस धरा पर जो भी चीजे इंसानों को सुलभ उपलब्ध हुईं उन्हें हमने बेतरतीब ढंग से भोगा बिना इसकी परवाह किये बिना कि एक दिन ये सब खात्मे की कगार पर पहुंच जाएंगे। मनमाने ढंग से जीने वाले इंसानों अभी भी खबर नहीं कि उनकी मनमानी ने धरती के पर्यावरण को कितने गंभीर जलवायु परिवर्तन के खतरनाक मोड़ पर ला खड़ा किया है। और अब हम दमघोंटू गर्म और प्रदूषित हवाओं तथा जल संकट से जूझ रहे हैं। सहस्त्राब्दियों से सभ्यताओं को पोषित करती नदियां आज अपने अस्तित्व को खोने के कगार पर आ खड़ी हैं। हम सबने जलवायु परिवर्तन के भयंकर परिणामों की चेतावनियां सुनीं, थोड़ा बहुत हो–हल्ला मचा और बात आई गई हो गई लेकिन कोई सार्थक कदम नहीं उठाया गया। साल दर साल पूरी धरती पर तापमान बढ़ोत्तरी के नए आयाम दर्ज किए जा रहे हैं। और हम इंसान आंच पर चढ़ी केतली के अंदर फंसे उस मेढ़क के समान व्यवहार कर रहे हैं जो बढ़ते तापमान के साथ अपनी शारीरिक क्षमता को व्यवस्थित करने में लगा रहता है और अंत में अपने प्राण गंवा देता है, क्योंकि उसकी शारीरिक क्षमता उस तापमान के लिए परिपूर्ण नहीं थी। तापमान में वृद्धि और बढ़ते वाष्पीकरण के कारण नदियों का जल स्तर कम हो रहा है और ये सिकुड़ती जा रही हैं और रही–सही कसर नदियों को कूड़ा–करकट से पाटकर पूरी कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रभाव विश्व भर की नदियों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा है। फिलहाल अपने देश की बात करे तो यहां छोटी सहायक नदियों के साथ ही प्रमुख नदियां भी गंभीर स्थिति का सामना कर रही हैं। कुछ स्वयं सेवी संस्थाएं, और लोग इस तरफ ध्यान दे भी रहे हैं तो यह कोशिशें पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए एक व्यापक नीति और सरकारी सहयोग की बहुत आवश्यकता है, जिससे कि हमारी नदियों को पोषित किया जा सके और ये नदियां हमारी आने वाली पीढ़ी को पोषित कर सकें। परंतु सरकार की नीतियां मुख्यतः कागजों पर

ज्यादा फलित होती दिखती हैं। धरातल पर इन नीतियों को लागू करने में अभी भी बहुत सख्ती की जरूरत है। हमारे देश की मुख्य नदियां वर्षा जल पर निर्भर करती हैं, जो सदानीरा हैं, यहां तक कि गर्मियों के मौसम में भी, तो यह केवल वन और पेड़–पौधों से संभव है। पेड़ो की जड़ें मिट्टी में छोटे–छोटे छिद्रों का निर्माण करती हैं जिससे कि बारिश के पानी को धरती सोख लेती है और मिट्टी में मौजूद पानी नदियों में जाकर नदियों को सदानीरा बनाता है। आधुनिकीकरण के नाम पर पेड़–पौधे की अंधाधुंध कटाई और जलवायु परिवर्तन के कारण जंगलों में लगने–वाली आग बाढ़ और सूखे के कारण विनाशकारी चक्र का निर्माण कर रहे हैं। वन के अभाव में मानसून आते ही बाढ़ की समस्या और मानसून के खत्म होते ही नदियों को सूखे की समस्या झेलनी पड़ती है। क्योंकि नदियों में पर्याप्त नमी के लिए उनके किनारों पर वन निर्माण और संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। विलुप्त होती नदियों को बचाने में हम सबके छोटे छोटे योगदान भी महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी साबित हो सकते हैं हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए वरना हम सब विरासत में जो उन्हें सौंपेंगे वह विनाशकारी होगा। व्यक्तिगत तौर पर अगर हम बस इतना कर लें की जो भी फल हम खा रहे हैं या जिन पेड़–पौधों के बीज हमें आसानी से उपलब्ध है उन्हें हल्की गीली मिट्टी के अंदर कवर करके उनकी बॉल बना कर सुखा लें, बीज के आकार के अनुसार और नदियों के तटीय क्षेत्रों में इन बीज के बालों को ले जाकर फैला दिया जाए तो इन बीजों को बहुत ज्यादा देख–रेख की आवश्यकता नहीं पड़ती। बारिश के साथ ये जमीन में धस कर अपने आप पनप जाते हैं। इस तरह नदियों के तटीय इलाकों में पुनः वन निर्माण हो सकते हैं। सुख चुकी या सूखे की मार झेल रही छोटी–छोटी नदियों या जल धाराओं को प्रदूषण मुक्त कर जरूरी देखभाल और संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। इनको बाधित और प्रदूषित करने का एक मुख्य कारण आस पास के रिहायशी इलाकों के लोगों की इन जलधाराओं के प्रति उदासीनता और गैरजिम्मेदाराना रवैया है इन इलाकों से निकलती गंदगी और कचरे का उपयुक्त समाधान न होने के फलस्वरूप नदियों में ही सारी गंदगी विसर्जित की जाती है। और रही सही कसर जलकुंभी के दानव जैसे विस्तृत होते जाल ने पूरी कर दी है। जागरूक नागरिकों और संस्थाओं के द्वारा इन नदियों के उद्धार के लिए कई अभियान चला कर सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। परंतु ये जलकुंभी सभी सफाई अभियान पर पुनः पानी फेर देती है। जलकुंभी भारत ही नहीं वरन पूरे विश्व में एक आक्रामक जलीय पौधे की प्रजाति है। इसका विस्तार बहुत ही तेजी से होता है। जिससे कि छोटी नदियां या जल स्थल इनसे पूरी तरह अच्छादित हो जाता है और सूर्य की रोशनी और ऑक्सीजन को जलीय जीवों तक पहुंचने में बाधा आती है और यह नदियों के जल प्रदूषण का एक मुख्य कारण भी है। हालांकि ये पौधा नदियों और झीलों के लिए हानिकारक है पर हम इसे उपयोग में लाकर इस समस्या को कुछ हद तक ठीक कर सकते हैं। जलकुंभी के तनों को सुखाकर इससे इको फ्रेंडली घरेलू सामानों को बनाने के काम में लाया जा सकता है और इसके तनों से फाइबर निकाल कर सस्टेनेबल फैब्रिक भी बनाया जा सकता है। हर नदी, समाज और धरती के लिए बहुत जरूरी है कि हम इंसान सस्टेनेबल जिंदगी को ही चुनें और सस्टेनेबल जिंदगी इस पक्ष में बिल्कुल नहीं है कि हम सस्टेनेबल चीजों को खरीद कर अपने घर और जीवन में भरमार लगा दें। सतत जीवनशैली प्रकृति से जुड़कर उन विकल्पों की तलाश में है जो प्रकृति ने हमें मुफ्त और अपने अनुकूल हमें प्रदान किया है। सस्टेनेबल लाइफस्टाइल में री साइक्लिंग भी एक महत्वपूर्ण कदम है। हमे यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा आधुनिकीकरण हमारी धरती और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने वाला हो। यह जरूरी समय है कि हम सब मिलकर अपने सार्थक प्रयासों से इन बहुमूल्य जलीय संसाधनों के संरक्षण पर ध्यान दें। अपने क्षेत्र में नदी, वन, और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति प्रतिबद्ध लोगो और संस्थाओं का समर्थन करें। क्योंकि यही जल और वन हमारे आने वाले भविष्य को दिशा देने में सबसे अग्रणी होंगे।

–कोलकाता
पश्चिम बंगाल

◆◆◆

मैं सिलनी नदी हूँ !

-सत्यम प्रजापति

मैं सिलनी नदी हूँ ! मैं कब पैदा हुई यह तो मुझे नहीं पता लेकिन बताया गया कि मेरा उद्गम गौरा ताल से हुआ है। गौरा ताल से निकलकर मैं 40 किमी की यात्रा करती हुई तमसा नदी से जाकर मिलती हूँ। इस यात्रा के दौरान मैं कई गांवों से गुजरती हूँ। तमसा नदी से जिस स्थान पर मिलती हूँ वहीं पर सती अनुसुइया के पुत्र चंद्रमा ऋषि ने तपस्या किया था। जब चंद्रमा ऋषि मेरे संगम पर तपस्या करते थे तब मैं स्वच्छ रूप से बहा करती थी। वर्षा के समय मैं ज्यादा से ज्यादा पानी अपने पास रख लेती थी जिससे 12 महीने तक मैं जलप्लावित रहती थी। जब मेरे आस–पास रहने वाले मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहते थे तब तक कोई दिक्कत नहीं थी लेकिन जैसे ही इन मानवों ने मेरी जमीनों का अतिक्रमण किया, मेरे किनारों की हरियाली को काट दिया तब मुझे कष्ट हुआ। इतना ही नहीं मेरे अंदर आस–पास के गांवों से कूड़ा–कचड़ा बहाना शुरु कर दिया। इन कूड़ों–कचड़ों से मेरे अंदर के पानी की गुणवत्ता दिनोंदिन खराब होती गई। दिनोंदिन गुणवत्ता खराब होने की वजह से मेरे अंदर ऑक्सीजन की कमी हो गई। मेरे घर में रहने वाले जीव–जंतु जो मेरे जिन्दा रहने के उपाय हुआ करते थे, ये जब तक मेरे घर के जलीय वातावरण में रहते थे तब तक मुझे अस्तित्वहीन होने का कोई खतरा नहीं महसूस हो रहा था। लेकिन जैसे ही ये मानवीय गतिविधियों के कारण संकट में आये वैसे ही मेरे अंदर हलचल होने लगी। यह मेरे खत्म होने का पहला चरण था। मेरे किनारों के आस–पास होने वाली खेती में ज्यादा से ज्यादा रासायनिक उर्वरकों का उपयोग होने लगा जो बारिश के समय बहकर मेरे अंदर आने लगा। इन बहकर आने वाले उर्वरकों से मेरे अंदर ज्यादा से ज्यादा जलीय पौधे उगने लगे। इन जलीय पौधों की ज्यादा मात्रा होने से जल की गुणवत्ता प्रभावित होने लगी। यह गुणवत्ता प्रभावित होने से अन्य जीवों पर भी खतरा मंडराने लगा। यह खतरा इतना बढ़ा कि आज मैं विलुप्त होने की कगार पर पहुंच गई हूँ।

आमतौर पर बारिश के दिनों में मेरे अंदर इतना पानी भर जाता है कि मैं वर्ष भर अपने घर को पूरी तरह से जलप्लावित करती रहूँ परंतु जिस तमसा नदी से मैं जाकर मिलती हूँ वह गहरी होने के कारण मेरा सारा पानी खींच लेती है। पहले मैं उथली कम थी तो कुछ पानी बचा रह जाता था लेकिन जैसे–जैसे हमारे अंदर मिट्टियों का जमाव होने लगा तो उथलापन आ गया जिसके कारण पानी का ठहराव बंद होने लगा जिसका परिणाम यह हुआ कि आज मेरे 40 किमी क्षेत्र में पानी न के बराबर हो गया। मेरे आस–पास मनुष्यों की आबादी के साथ–साथ जीव–जंतु भी रहते थे। मेरे पास ही एक जंगल था जो सेहदा के जंगल के नाम से प्रसिद्ध था। लेकिन आततायी

मनुष्यों ने इस जंगल को इस कदर नुकसान पहुँचाया कि वह खत्म होने की कगार पर है। सिर्फ इतना ही नहीं सरकारी आतताइयों ने एक्सप्रेस वे बनाने के लिए मेरा रास्ता ही मोड़ दिया था। इन सरकारी आतताइयों को कौन बताये कि मैं अपना रास्ता पहचानती हूँ, जब मैं अपने उग्र रूप में आउंगी तो सभी को सबक सिखा दूंगी। इन्हें यह भी नहीं पता कि सुप्रीम कोर्ट ने मुझे जीवित का दर्जा दे रखा है। फिर भी ये सब मुझे मारने पर उतारू हैं। ये सब सिर्फ मेरे आभूषण (जंगल) को ही तहस–नहस नहीं कर रहे बल्कि वे उस प्राणवायु को भी खत्म कर रहे हैं जिसके सहारे वह जिंदा हैं। नदियों और जंगलों के न रहने से जैवविविधता को सबसे ज्यादा खतरा होने वाला है। मैं जहाँ तक समझती हूँ कि नदी, जंगल ये सभी प्राकृतिक संसाधन हैं। इन संसाधनों के खत्म होने पर सबसे ज्यादा खामियाजा आधुनिक मनुष्य को ही उठाना पड़ेगा।

मैं आज उन सभी सरकारी मशीनरियों, सामाजिक संस्थाओं, पर्यावरण कार्यकर्ताओं, शोधार्थियों, शिक्षकों, राजनीतिज्ञों एवं मेरे आस–पास रहने वाले सामाजिक मनुष्यों से यह निवेदन करती हूँ कि मेरी वर्तमान स्थिति बहुत ही दयनीय है। मेरी जमीन उथली हो गयी है, मेरे किनारों पर कब्जा हो चुका है, किनारे की हरियाली को भी काटकर अलग कर दिया गया है। जिस गौरा ताल से मैं निकली हूँ वहां पर भी मेरा अस्तित्त्व न के बराबर है। कूड़े–कचड़े के ढेर से मैं पट चुकी हूँ। मेरे 40 किमी के क्षेत्र में कहीं भी पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं है। कहीं मैं पूरी तरह खत्म हूँ तो कहीं खत्म होने की कगार पर हूँ। 2010 तक एक–दो वर्ष के अन्तराल पर सरकारी स्तर पर मेरी उथली जमीन को समतल किया जाता था लेकिन 14 वर्ष हो गए लेकिन किसी ने मेरे बारे में संज्ञान नहीं लिया। जिन मछुआरों के लिए मैं आजीविका का साधन थी उन सबने भी अपने स्तर से कोई आवाज नहीं उठाई कि मैं पुनर्जीवित हो जाऊं। ये सभी मेरे अंदर जो थोडा बहुत पानी कहीं पर बचा हुआ है उसका उपयोग करके मछली पालन करते हैं। मेरे अंदर का जल खत्म होने से आस–पास के क्षेत्रों में पानी का स्तर बहुत नीचे चला गया है जिसके कारण कई जगह पर हैंडपंप पानी छोड़ चुका है। यह चेतावनी उनके लिए दे रही हूँ जो मेरे बारे में नहीं सोच रहे हैं। कुछ दिनों पहले कुछ जागरूक पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने मुझे पुनर्जीवित करने के लिए "प्रकृति बचाओ अभियान" के तहत 5 जून 2024 को 8 किमी पदयात्रा निकाली। इस पदयात्रा में मेरे किनारे रहने वाले मनुष्यों से संवाद स्थापित किया गया और यह बताने की कोशिश की गई कि मुझे पुनर्जीवित करने के क्या–क्या फायदे हैं। मेरे लिए निकाली गयी पदयात्रा को राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ निकाली गई 51 नदियों में मुझे शामिल किया गया। राष्ट्रीय स्तर पर मेरे पुनर्जीवन को विषय बनाना एक अच्छा कदम है।

इन पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने सरकार को संबोधित एक पत्र भी लिखा था जिसके जवाब में अधिकारियों की तरफ से यह जवाब दिया गया कि अभी सरकार के पास बजट नहीं है। दुःख तो और ज्यादा तब हुआ जब यह कहा गया कि मुझे बचाने के लिए सरकार के पास बजट नहीं है। कैसे होगा बजट, सारा बजट तो नाचने–गाने में खर्च हो जाता है तो वहीं कुछ पर्यावरणकर्ता मेरे नाम पर बंद कमरों में तो कहीं मीडिया चैनलों पर अपनी लफ्फाजी करते रहते हैं जबकि हकीकत यह है कि ये कभी भी परवाह नहीं करते। ये कभी भी हमारे पास आकर मुझसे संवाद नहीं करते, मेरी प्रकृति को समझने की कोशिश नहीं करते। आजमगढ़ में हमारी कुल 13 बहनें हैं (14 सहायक नदी)। ये सभी बहनें आज मानवीय गतिविधियों की वजह से त्राहि–त्राहि कर रही हैं। कोई भी सरकार मुझे और मेरी बहनों को बचाने के लिए कभी भी बजट नहीं देती है। जो बजट गंगा जैसी बड़ी बहनों को बचाने के लिए जारी होता है। वह केवल खर्च होता है लेकिन कहाँ और कैसे खर्च होता है इसका पता नहीं चलता है।

मैं सिलनी नदी आपसे यह अपील करती हूँ कि आप सभी समय रहते सचेत हो जाओ। वे सभी जागरूक मनुष्य जो यह चाहते हैं कि आपका गाँव पानीदार बना रहे, मेरे अंदर रहने वाले जीव–जंतु खुशहाल रहें तो मुझे पुनर्जीवित करने के लिए एक ईमानदार प्रयास करो। मैं भी आपका साथ दूंगी और सबको खुश रखने का प्रयास करुँगीं।

–सदस्य
प्रकृति बचाओ अभियान

◆◆◆

समीक्षा

नैतिक जिम्मेदारियों का बोध कराती मार्मिक बाल कविताएं

–राजाराम सिंह

बच्चों के लिए लिखना कठिन कविकर्म है। इसके लिए बच्चों के मनोविज्ञान को समझना होता है और यह आसान नहीं है। बच्चों की सोच, उनकी आदतें, उनका स्वभाव, प्रवृत्ति तथा मानसिकता को समझे बिना बाल कविता नहीं लिखी जा सकती। प्रौढ़ कवि को बच्चों के स्तर पर उतरकर उसी बुद्धि, विवेक और तर्क के अनुसार कविताएं लिखनी होती हैं। कुल मिलाकर कहें तो कवि को बच्चों के लिए लिखते समय बच्चा बनना पड़ता है। यह कार्य वही बखूबी कर सकता है जिसने अपना बचपन अपने भीतर सहेजकर रखा हुआ है।

सरोज यादव ऐसी ही कवयित्री हैं जिन्होंने बच्चों के स्तर पर बड़ी सहजता से उतर कर बाल कविताओं की रचना की है। उन्होंने बाल मनोविज्ञान को आधुनिक सन्दर्भों में समझा है। सरोज यादव ने आज के बच्चों के सिमटते दायरे तथा उनकी विसंगतियों को गहराई तक देखा है। रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में ''उन्हें भूगोल पढ़ाने के चक्कर में उनसे जमीन ही छीन ली जाती है। इसलिए खेलने–खाने की कच्ची उम्र में बच्चे सयाने होने के लिए विवश हो जाते हैं।'' सरोज यादव भली भांति समझती हैं कि बचपन में उनको पूरा विस्तार चाहिए और खेलने–कूदने धमाचौकड़ी करने की सुविधा और माता–पिता का समय चाहिए। कवयित्री जानती हैं कि कहां–कहां और कैसे यह आजादी और अवसर बच्चों को मिल सकता है। ऐसे स्थलों, अवसरों को लेकर उन्होंने अत्यन्त मार्मिक बाल कविताएं लिखी हैं।

सरोज यादव द्वारा रचित बाल कविताओं की विशेषता यह है कि ये कविताएं बाल मनोरंजन के साथ–साथ नैतिक जिम्मेदारियों का बोध भी कराती हैं। कवयित्री इस बात से सावधान है कि ये बाल कविताएं हैं अतः बच्चों की सोच और समझ के अनुकूल ही इन्हें ढलना है। बच्चों को गांव में खेलने–कूदने के अवसर और आजादी जितनी मिल जाती है उतनी शहरों में मयस्सर नहीं होती। गांवों में ताल–पोखरा, बगीचा, मैदान और खेत–खलिआन सब बच्चों के लिए बाहें पसारे उपस्थित हैं। समय का बन्धन भी नहीं है और मनमाफिक उड़ान भरने की मनाही भी नहीं है। शहरों में खेलने के लिए जगह उपलब्ध नहीं है। अगर कहीं पार्क है तो वहां प्रशासन डण्डा लिए खड़ा है। सुरक्षा का सवाल होने के कारण बच्चों के साथ–साथ अभिभावक भी लगे रहते हैं। अभिभावकों की उपस्थिति का एहसास बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्ति के खुलेपन में बाधक होता है। विडम्बना यह है कि आजकल लोग गांव छोड़कर शहर की ओर पलायन कर रहें हैं। इसे रोकना अत्यावश्यक है। सरोज यादव ने 'मेरा गांव' कविता लिखकर बच्चों के मनोरंजन के साथ ही गांव की विशेषताओं के प्रति प्रेम भाव जागृत करने की सराहनीय कोशिश की है। यदि बच्चों में अभी से गांव के प्रति लगाव पैदा हो जाय तो बड़े होने पर वे गांव छोड़ने के बारे में शायद ही सोचें।

''गोरा है न काला है
मेरा गांव निराला है।''

इन पंक्तियों में गांव की बात करते करते कवयित्री ने रंग भेद जो ऊंच–नीच तथा जाति भेद की भावना उभाड़ता है उससे भी बच्चों को अगाह कर दिया है। बच्चों को बारिश बहुत पसन्द है। बारिश में भीगना, भागना, खेलना–कूदना, गिरना–उठना फिर भागना उनके मनपसन्द खेल हैं। ''बरखा रानी'' कविता में

बालमन की मनुहार भरी शिकायत–

''बरखा रानी बरखा रानी, करती रहती हो मनमानी
बिना बुलाए आ जाती हो, काले मेघ संग लाती हो''

इसके साथ–साथ माता–पिता के प्रति औलाद की जिम्मेदारी से भरी भावना से भी ओत–प्रोत करती है।

''मां पापा बाजार गए हैं
कपड़े उनके नये–नये हैं
उनको बिल्कुल नहीं भिगाना
घर पहुंचे फिर जल बरसाना''

बच्चे छ से छतरी और ज से जहाज सीखते–सीखते

''न से नल न खुला रखें
जल सुरक्षित हम करें''

यह सब भी सीख जाते हैं जब आज यह कहा जा रहा है कि अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जायेगा। ऐसे में नल खुला न छोड़ना, जल का संरक्षण करना नैतिक एवं राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। सरोज चाहती हैं कि, बच्चे खेल–खेल में यह जिम्मेदारी भी समझ लें। अगर बचपन इतना सतर्क हो जाय तो वयस्क के लिए कुछ भी नया और परिहार्य नहीं रहेगा।

बच्चे हुड़दंग मचाएं यह तो उनका स्वभाव भी है और हक भी। किन्तु ''खुश रहें और खुशियां बांटे, कोई भी हमें न डांटे''

इस बाल कविता से उभरता संदेश, जियो और जीने दो की तर्ज पर आपसी मेल–भाव, और दूसरों के सुख की कामना का कल्याणकारी भाव लिए हुए है। जिसकी अभिव्यक्ति ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया'' में भी देखी जा सकती है।

आजकल मोबाइल फोन और टी.वी देखने के चक्कर में बच्चे देर रात तक जगाने लगे है। यह उन बच्चों का व्यक्तिगत नुकसान होने के साथ–साथ समाज एवं राष्ट्र का नुकसान है। बच्चों को इस प्रवृत्ति से दूर रखने की जरूरत है। सरोज जी बाल कविता में कहती हैं–

''करो न आलस आँखे खोलो, तुम भी सुन्दर जग पाओ
सुबह हो गई गुड़िया रानी और न सोओ जग जाओ''

ये पंक्तियां ''अर्ली टु बेड ऐन्ड अर्ली टु राइज ''से आगे का संदेश देती हैं देर तक सोने वाले संसार में कुछ नहीं कर सकते। बच्चों में हर काम को समयानुसार करने की आदत पड़नी ही चाहिए।

सरोज जी ने पर्यावरण का भी ध्यान अपनी बाल कविताओं में रखा है। पर्यावरण के लिए पक्षी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं फिर गौरैया तो आकर्षण का केन्द्र भी है। इस पक्षी का फुदकना बच्चों को बहुत भाता है। धूल खेलती उसमें लोटती गौरैया बच्चों का धरती के साथ जोड़ने का काम करती है। गौरैया पहले हमारे घरों की मालकिन हुआ करती थी। भोर में उसका चहचहाना बच्चों को जगाकर उन्हें उस दिन का संसार सौंप देता था।

अफसोस अब गौरया मुश्किल से कहीं दिख जाती हैं। ऐसे में सरोज की बाल कविता कहती है–

मैने पाला है गौरैया देखो बड़ी निराली है
नन्हें–नन्हें पंख हैं इसके सुन्दर आखों वाली है।

बच्चे गौरैया को देखकर खुश भी हो रहें हैं उसके साथ खेल भी रहे हैं और उसे पाल भी रहे हैं। यह उच्च मानवीय गुण बचपन में आत्मसात् कर लिया जाय तो बेहतर भविष्य हो सकता है। कवयित्री की यह कोशिश सुनहरे भविष्य की ओर तो ले ही जाती है साथ ही साथ आज की पर्यावरणीय त्रासदी से बचाती भी है। बच्चे ऐसे खेल खेलें जो रचनात्मक होने के साथ–साथ भविष्य की नींव भी रखें।

शिक्षा का निजीकरण जब से हुआ और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों को चलाने का ढोंग सामने आया तब से अभिभावकों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाने की धुन सवार है। इस चक्कर में लोग गुणवत्ता और सुविधा का ख्याल किए बिना बच्चों को निजी तथा कथित अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजते चले जा रहें हैं।

न्यू एजुकेशन पालिसी के तहत सरकारी विद्यालयों में कापी–किताब, जूता–मोजा, बैग सब मुफ्त मिलता है फीस माफ है। सप्ताह में दो दिन फल और एक दिन दूध भी मिलता है। यहां सभी शिक्षक योग्य हैं। स्वच्छ पीने का पानी मिलता है। पुस्तकालय की भी व्यवस्था है। इतना सब छोड़कर लोग बच्चों को निजी संस्थानों में महंगी शिक्षा के लिए भेजकर परेशान हो रहें हैं। सरोज जी चाहती हैं कि बाल कविता द्वारा बच्चों को सरकारी सुविधाओं एवं स्तरीय शिक्षा का एहसास हो जाय तो बच्चों, अभिभावकों समाज तथा देश का एक साथ भला हो।

''मुफ्त किताबें यहां हैं मिलती मुफ्त में मिलता भोजन है

मुफ्त में जूता, मुफ्त में मोजा, मिलता बैग बिना धन है''
आकर प्रतिदिन तुम विद्यालय अपना भाग्य जगाओ रे
छोड़–छाड़कर काम सभी तुम अपना नाम लिखाओ रे।

हमारे जीवन में वृक्षों का बहुत अधिक महत्व है। इन्हीं से हमें प्राणवायु मिलती है। इन्हीं से पर्यावरण का संरक्षण होता है। जलवायु का संतुलन वृक्ष ही बनाते हैं। फल और छाया तो देते ही रहते हैं। आधुनिकता की चपेट में आकर ढेर सारे वृक्ष और जंगल कट गए हैं। विकास की चकाचौंध में वृक्षों का विनाश बड़े पैमाने पर हो रहा है। यदि यही क्रम चलता रहा तो जलवायु परिवर्तन के संकट के साथ–साथ अनेक बीमारियों का संकट उपस्थित हो जायेगा। इन बातों से भली–भांति अवगत कवयित्री ने बच्चों में पेड़ लगाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हुए बाल कविता लिखा–

''आओ बच्चों पेड़ लगाएं
हरा–भरा संसार बनाएं''

हरा–भरा संसार वही होगा जिसमें सांस लेना आसान और सुखद हो। गर्मी, सर्दी, संतुलित और यथोचित हो। पर्यावरण सधा हुआ हो। ये सारे उद्देश्य पेड़ लगाने से पूरे हो सकते हैं। पेड़ हमारे मित्र और शुभचिन्तक हैं। बच्चे बाल कविता द्वारा यह सब सीखते हुए बड़े हों तो हमारा भविष्य सुन्दर एवं सुनहरा बन सकता है। बच्चों में यह आदत डालने में बाल कविता ''हरा भरा संसार बनाएं'' एक महत्वपूर्ण कड़ी हो सकती है।

संकलन में एक कविता सुभाष चन्द्र बोस पर भी है। हम बड़ी शीघ्रता से अपने स्वतंत्रता सेनानियों को भूलते जा रहें है यही क्रम जारी रहा तो आने वाली पीढ़ियां अपनी आजादी के इतिहास से अनभिज्ञ रह जायंगी।

सरोज यादव ने सुभाष चन्द्र बोस पर बाल कविता लिखकर इस कमी को दूर करने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता–संग्राम के महानायक सुभाष चन्द्र बोस के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व को कवयित्री ने बड़ी सहजता एवं रोचकता से बाल कविता में पिरोया है। जब वे कहती हैं–''मना रहे हम सभी जयन्ती आज हर्ष से बोस की। हर एक कण्ठ में गूंज उठी वाणी जय–जय घोष की ''तो सभी स्वतंत्रता सेनानियों के बारे जिज्ञासा का भाव हिलोरें लेने लगता है। निश्चित रूप से यह बाल कविता बच्चों में राष्ट्रीय चेतना जगा कर उन्हें राष्ट्र के प्रति समर्पण के लिए प्रेरित करेगी।

'बाल गूंज' संकलन में छोटी–बड़ी कुल 30 बाल कविताएं संकलित हैं। ये सभी कविताएं नैतिक जिम्मेदारियों का बोध कराती हुई बालमन के अनुकूल तथा उनकी प्रवृत्तियों को समझती हुई उनके विकास में सहायक हैं। बाल गूंज ऐसी बाल कविताओं का संकलन है जो बच्चों को भविष्य में कुशल नागरिक बनने की यात्रा के लिए सहज सम्बल प्रदान करता है।

इन बाल कविताओं में बोलचाल के आसान और प्रचलित शब्दों का प्रयोग अत्यन्त ग्राह्य है। चलती हुई भाषा अपने पूरे रौ में है। विषय वस्तु बच्चों की दुनिया से ही ली गई है। ये बाल कविताएं इतनी गतिशील हैं कि बच्चों में प्रथम पंक्ति से ही पूरी कविता पढ़ने के लिए उत्सुकता जगाती है।

संकलन की बाल कविताएं रोचक, प्रशंसनीय, पठनीय, संग्रहणीय एवं स्मरणीय हैं। यह संकलन मार्मिकता के लिए जाना जायेगा।

समीक्षित पुस्तक : **बाल गूंज**
रचनाकार : श्रीमती सरोज यादव
प्रकाशक : स्पीच पब्लिकेशन
मूल्य : 100 रूपये

अतरौलिया–आजमगढ़
मो. 9450363994

◆◆◆

लेखकों से :

– रचनायें टाइप की हुई या सुवाच्य अक्षरों में लिखी होनी चाहिए।

– रचना की मूल प्रति ही भेजें। फोटो कापी स्वीकार नहीं की जायेगी।

– रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रख लें क्योंकि रचना को वापस करने की कोई गारंटी नहीं है।

– रचनाएं मौलिक और अप्रकाशित होनी चाहिए। इस आशय का प्रमाण पत्र लगाना आवश्यक है।

– ईमेल से भेजने के लिए रचनाएं कृति–देव 10 या यूनिकोड में टाइप करके वर्ड फाइल भेजें।

इमेल– editor.jalvayu@gmail.com

धर्मेन्द्र विश्व की कविताएं

लोहरा क दुकनियां

मैं पैदा हुआ
एक लुहार जाति में,
किसी दूसरी जाति में भी पैदा हो सकता था
लेकिन पैदा हुआ लुहार जाति में।
इसमें मेरा कोई योगदान नही है।
जहां मैं जन्म लिया
वहां गरीबी बहुत थी
घर में सबसे बड़ा मैं था
मां का पहला बच्चा मैं था
बहुत कमजोर शरीर लेकर पैदा हुआ मैं
घर आते समय रास्ते में बाबा ने मां से कहा
चला लेके घरवां
दुईये चार दिन कै मेहमान हवे इ
खाली बड़का लईका बनिके
जनम लहले हवे ई।
इतना सुनकर मां की ऑखों से ऑसू टपक पड़े
थोड़ा होशियार होने पर
बाबा के मुंह से यही सुना हमने।
प्राईमरी विद्यालय के गदईहा गोल में
कान पकड़वाकर प्रवेश हुआ मेरा
गरीबी, बदहवास जिन्दगी थी
लंचबाक्स की बात तो बहुत दूर की है
पिता किसी नेता के साथ निकल जाते थे
नेतागिरी करने
घर वापस खाली जेब लौटते थे
जब विद्यालय की फीस जमा नही हो पाती थी
तो दंड के रूप में दोनों हाथों पर
प्रधानाचार्य जी का डंडा पड़ता था
क्योंकि गैर जिम्मेदार बाप से क्या ही उम्मीद करता मैं
जो बाप खाली जेब लौटता हो
उससे मैं क्या उम्मीद कर सकता था
मेरे लिए खुशी की बात यह थी कि
मैं मुसहर जाति के एक सहपाठी के साथ
प्लास्टिक की बोरी पर बैठता था
यह खुशी की बात इसलिए मैं कह रहा हूं
क्योंकि
उसका स्वभाव सरल था
भले ही वह नीची जाति का रहा हो
हमारी कक्षा में बाऊ साहब आते थे
वह जब भी आते थे पढ़ाने
मेरे उस मुसहर जाति के सहपाठी को बुलाकर
सिर्फ अपना पैर दबवाते थे
कुछ पढ़ाते नहीं थे
मृत आश्रित नौकरी जो मिली थी उनको
बाबा बड़े ठाकुर के यहां
काम करते थे
जिसके बदले में पेट भरने के लिए
कुछ दाना पानी मिल जाता था
स्नातक करने के लिए
मैं आ गया अपने ननिहाल
नाना के सिवाय यहां पर
कोई समझदार इंसान नहीं मिला।
जब भी मैं उनको देखा
एक गजब की ऊर्जा से भरा पाया
सभी के बारे में समान भाव रखने वाला इंसान पाया
स्नातक में प्रवेश के लिए
प्रवेश फार्म के लिए
आर्थिक कमी महसूस हुई
ननिहाल में खाट पर बैठकर
मैं सोच रहा था
तभी नाना की नजर मुझ पर पड़ी
वह पूछ पड़े
का सोचत हउवा हो
पइसा ना बा फारम भरे के बा
ऐसा कई बार पूछने के बाद
सिर्फ एक बार बोला
इतना सुनने के बाद
नाना फौरन बोले
केतना पइसा चाही
बेहने आ जहिया दुकाने
हम दे देब
नाना की बातों में दम दिखता था मुझे
जो ननिहाल में मौजूद अन्य सदस्यों में शून्य था

मेरे नाना आग की भट्टी पर काम करते थे
जो शहर के दलाल घाट क्षेत्र में थी
जिसको कुछ लोग लोहरा क दुकनियां
के नाम से भी बुलाते थे
इस सम्बोधन से प्यार भी हो गया था
इससे मैं और नाना इंकार नहीं कर सकते थे
क्योंकि
लुहार जाति में
हम दोनों पैदा हुए थे
स्नातक की प्रवेश परीक्षा समाप्त हुई
जैसे ही कालेज के गेट पर पहुंचा
एक लड़के ने मुझे
किसी कोचिंग का पर्चा थमा दिया
उस लड़के का सम्बोधन था
भईया आइएगा पढ़ने हमारी कोचिंग में
जैसे ही पर्चा हमने देखा
उस पर लिखा हुआ था एडमिनिस्ट्रेटिव एकेडमी।
एक दिन अचानक एक सहपाठी के साथ
कोचिंग में जाना हुआ
डर भी लगता था
कहीं कोचिंग के अध्यापक भगा न दें
क्योंकि मैं आर्थिक संकट से जूझ रहा था
ऐसा घटित होना लाजमी था
सहपाठी ने ही
मेरे लिए कोचिंग के अध्यापक से बात की
दाखिले के लिए
अध्यापक मान गये
मेरा कोचिंग में दाखिला हो गया
और उधर कालेज की लिस्ट जारी हुई
जिसमें मेरा नाम पहली की लिस्ट में आ गया
कालेज में प्रवेश मिल गया
हुई एक हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
कोचिंग में
हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर
द्वितीय स्थान आया मेरा
अखबार में भी नाम आया मेरा
अखबार में आये हुए नाम को
नाना को दिखाया
उस पल खुशी उनके चेहरे पर
देखने लायक थी
मेरे गांव में भी कुछ लोगों को खबर लगी
उन लोगों में कुछ ने पिता जी से कहां
जैसा आमतौर पर होता है
तोहार लईका बहुत आगे जाई
किसी ने कहा
पहिलवे हम कहले रहनी
तोहार लईका आगे जाई
किसी ने कहा
लोहारे क लईका जरूर हउवे
लेकिन दिमाग हवे ओकरे
अगली सुबह क्लास में मुझे
मेडल देकर पुरस्कृत किया गया
गबन किताब पुरस्कार स्वरूप देते समय
वनस्पति विज्ञान के अध्यापक जी ने कहा
''कीचड़ में कमल खिलता है''
यह शब्द आज भी स्मृति चिन्ह सा समाया है।

भर गई घाव

अकस्मात्! हुई एक दुर्घटना,
तड़पता हुआ आदमी
तमाशा देख रहा है
सारा जग
मानवता दिखी एक पथिक में
पिलाया एक बूंद जल
शांत हुई प्यास
सहला रही है
बयार बदन को
भर गई घाव
प्रकृति उपचार से
अंत में समझ पाया मनुष्य
मूल्यवान है जल
और तरू
इस धरा पर
अब उनकों बचाना
ही है मेरा कर्त्तव्य।

Email- dharmendravishwakarmapoet@gmail.com
Mob. No. 9369251280

◆◆◆

प्रतिरोध की धरती बनाम विकास का लॉलीपाप

–विशाल तिवारी

⟶ उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में जनसंख्या के लिहाज से सबसे बड़ा जिला है आजमगढ़, जो प्रतिरोध की धरती के नाम से जाना जाता है। यह प्रतिरोध का जिला इसलिए जाना जाता है क्योंकि इस जिले ने एकाध अपवादों को छोड़कर हमेशा सत्ता के खिलाफ अपना मत दिया है। यह साहित्यकारों, शिक्षाविदों, राजनेताओं और ऋषियों–मुनियों की धरती है। इसकी पहचान है कि यहाँ के लोगों ने किसी के सामने झुकना नहीं सीखा। यहाँ का साहित्य दुनिया में अपनी अलग पहचान रखता है। इसी पहचान की बार–बार दुहाई दी जाती रही है। परंतु समय बदलने के साथ बहुत कुछ बदल गया है। यह बदलाव इस प्रकार का हुआ है कि लोग जहां समय–समय पर विसंगतियों के खिलाफ सड़क पर उतर जाते थे, अब उस धरती पर कोई सामाजिक आन्दोलन नहीं खड़ा होता है।

विचारहीन राजनीति का जो सिलसिला पूरे देश में चल रहा है उससे आजमगढ़ भी अछूता नहीं है। एक योग्य व्यक्ति यदि धन से मजबूत नहीं है तो सभी राजनीतिक दलों में हाशिये पर दिखाई देगा। कोई भी दल ऐसा नहीं है जो गुटों में बंटा हुआ नहीं है। एक–दूसरे का विरोध करके अपने–अपने व्यक्तियों को पद दिलाने की होड़ मची हुई है। जिले में कोई ऐसा नेता नहीं है जो जनता के मुद्दों को लेकर सड़कों पर उतरे। पढ़ा–लिखा वर्ग जो राजनीति में जाकर कुछ अच्छा कार्य करना चाहता है उसे आगे नहीं बढ़ने दिया जाता है। कहीं पारिवारिक राजनीति का बोलबाला है तो कहीं जाति–धर्म के आधार पर राजनीति है तो दूसरी जगह जाति में ही कई गुट हैं। इन नेताओं को पद पर बने रहने की इतनी भूख है कि इसके लिए ये किसी भी हद तक जा सकते हैं। इन नेताओं में इतना दम नहीं है कि अपना बूथ तक जिता सकें लेकिन पद से हटने को तैयार नहीं हैं। इस प्रतिरोध की धरती की स्थिति ऐसी है कि पिछले दस वर्षों से कोई ऐसा नेता नहीं मिला जो लोकसभा का चुनाव लड़ सके। 10 वर्षों से यहाँ दूसरे जिलों के नेता चुनाव लड़ रहे हैं जो जिलों में बहुत कम ही रहते हैं लेकिन प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उन्हें तो इस जिले के गाँव का नाम तक नहीं पता। यहाँ की सामाजिक–भौगोलिक परिस्थितियों का नहीं पता, यहाँ के नेताओं के द्वारा उन्हें जो बताया जाता है वे वही जानते हैं।

इन सबके बीच जो इस जिले के लिए सबसे बड़ा मुद्दा है वह है विकास। 1989 के बाद इस जिले में सपा, बसपा , भाजपा के जनप्रतिनिधियों ने प्रतिनिधित्व किया। जिसमें सबसे ज्यादा समय तक सपा के जनप्रतिनिधि चुने गए। दो–चार कार्यों के आधार पर विकास के बड़े–बड़े दावे करने वाला यह दल आज भी उसी विकास की रॉयल्टी ले रहा है। वर्तमान सत्ताधारी दल भी विश्वविद्यालय और संगीत महाविद्यालय की स्थापना के नाम पर विकास का नारा दिया लेकिन ये यह भूल गए कि जब विकास का कोई स्पष्ट नजरिया आपके दिमाग में नहीं है तो आप झुनझुना बजाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। इन्हें कौन समझाए कि जिस जिले का तीन मुख्यमंत्री, एक केन्द्रीय मंत्री प्रतिनिधित्व कर चुके हों वहां विकास की गंगा बहने की बजाय सिर्फ जाति–धर्म में ही बंटा रह गया।

शिक्षा, स्वास्थ्य के बद्तर हालात हैं। एक भी शैक्षिक संस्थान नहीं हैं जहाँ शिक्षा की उच्च गुणवत्ता हो। एक भी अस्पताल ऐसा नहीं है जहाँ बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ हों। यहाँ के मरीजों को इलाज के लिए दूसरे जिलों में जाना पड़ता है। यहाँ किसी भी महाविद्यालय में अच्छी प्रयोगशाला नहीं है और न ही अच्छी गुणवत्ता के पुस्तकालय हैं। शोध संस्थानों को स्थापित किये जाने की बात वर्षों से चल रही है लेकिन यह कब होगा इसकी कोई निश्चित तारीख नहीं है। यह इस धरती का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि विकास के बड़े–बड़े दावों के बीच भी सभी राजनीतिक दलों ने केवल लालीपाप ही दिया है। 60 लाख के आस–पास जनसँख्या वाले इस जिले में रोजगार की कोई भी संभावना नहीं है। सठियांव चीनी मिल जो कि 1974 में बनी थी उसको भी बंद करा दिया गया था। जो बाद में जनता के विरोध के बाद शुरू किया गया। उद्योग की अच्छी संभावना के बावजूद किसी सरकार में निवेश का कोई माहौल ही नहीं बना। हवाई अड्डा बना लेकिन उड़ान सिर्फ लखनऊ तक की ही और महंगा इतना कि कोई जाने के बारे में भी न सोचे। यह लॉलीपाप नहीं तो और क्या है कि जिले से हवाई जहाज उड़ रहा है लेकिन कोई उड़ना नहीं चाहता है। विश्वविद्यालय बना तो लोगों

को लगा कि बेहतर कार्य होगा लेकिन इसने तो महाविद्यालयों में पठन–पाठन का माहौल ही खत्म कर दिया। अब तो स्नातक, परास्नातक के छात्र पढना बंद कर चुके हैं। वे केवल परीक्षा दे रहे हैं, लूट–खसोट मची है और पठन–पाठन का माहौल खत्म हो चुका है।

वहीं दूसरी तरफ साहित्यिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में दिनोंदिन आ रही गिरावट इस धरती के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं। एक समय ऐसा था जब प्रति सप्ताह लोग साहित्य, संस्कृति, राजनीति पर संवाद किया करते थे परंतु अब वहां संवाद नहीं बल्कि अपनी सुनाने की होड़ लगी है। साहित्य के नाम पर रचनाकारों की ऐसी बाढ़ आ गई है कि जिसे कहिये वही रचनाकार हो गया है। साहित्यिक संस्थाओं की बेतहाशा वृद्धि हुई है। यहाँ तक तो ठीक है। कहा जाता है कि साहित्य बेहतर समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है लेकिन जब साहित्य ही दोयम दर्जे का लिखा जा रहा हो वहां यह उम्मीद करना बेमानी है। प्राचीन काल में दरबारी संस्कृति थी जब राजाओं की चरण वंदना साहित्यिक रचनाओं में की जाती थी। बीच के वर्षों में साहित्य समाज के अंतिम छोर पर बैठे आमजन की बेहतरी के लिए लिखा जाने लगा। वर्तमान साहित्यिक जगत में चरण वंदना करके वे लोग भी लिखने लगे हैं जो कभी क्रन्तिकारी साहित्य लिखा करते थे। आजमगढ़ का साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। अब यहाँ भी आत्ममुग्ध और चरण वंदना का साहित्य लिखा जाने लगा है . साहित्य के गुटों की इतनी भरमार हो गई है कि इनमें जाति के नाम पर भी रचनाकार बंट गए हैं। यह स्थिति सिर्फ साहित्य का नुकसान कर रही हैं। इन सबके बीच कुछ अच्छे रचनाकार भी हैं जो गुटों की गोलबंदी से दूर रहकर भी अच्छा लिख रहे हैं। युवा पीढ़ी में कुछ संभावना है लेकिन वे भी बहुत जल्दी ही प्रसिद्धि पाना चाहते हैं। पत्रकारिता का कोई अर्थ नहीं रह गया है इस धरती पर। पहले समाचार निकलता था। पढ़े–लिखे लोग पत्रकारिता करते थे तो अखबार पढने लायक हुआ करता था। अब वह भी चरण वंदना में लगा हुआ है। उसके लिए भी सामाजिक मुद्दों से जुड़ी खबरें मायने नहीं रखती हैं बल्कि आर्थिक हित मायने रखता है।

फिर भी तलाश है उन लोगों की जो बेहतर, तर्कयुक्त वैज्ञानिक सोच के साथ–साथ राजनीतिक चेतना से संपन्न हैं और बेहतर करने की चाहत रखते हैं ताकि बची रहे इस प्रतिरोध की धरती की पहचान.....

◆◆◆

जलवायु के स्थायी स्तम्भ

→ **प्रकृति**
→ **विज्ञान**
→ **प्रौद्योगिकी**
→ **सृजन**
→ **आधी दुनिया**
→ **भाषा**
→ **मुद्दा**
→ **युवा स्वर**
→ **शिक्षा**
→ **स्वास्थ्य**
→ **विरासत**
→ **सम्भावना**
→ **आखिरी पन्ना**
→ **आलेख**

यदि आप इनमें से किसी भी स्तम्भ से सम्बन्धित लेख, टिप्पणी, निबन्ध अथवा शोध पत्र भेजना चाहते हैं तो आपका स्वागत है। बस इतना ध्यान रखना होगा कि सामाजिक अलगाव और विघटन से सम्बन्धित विचारों का किसी भी स्तर पर उसमें समावेश न हो। 'जलवायु' मनुष्य और प्रकृति के साहचर्य को क्रियात्मक स्वर देने का एक प्रयत्न है। इसमें आपकी भागीदारी आवश्यक है।

–सम्पादक

सामाजिक परिवर्तन तथा मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित संस्था

'अस्तित्व' द्वारा शुरू किया गया

"प्रकृति बचाओ अभियान"

शुरूआत: 12 जनवरी 2010, आजमगढ़

सामाजिक संस्था **'अस्तित्व'** द्वारा शुरू किये गये

"प्रकृति बचाओ अभियान" के तहत हम सभी संकल्प लेते हैं कि–

- हम वृक्ष लगाएँगे।
- हम पानी बचाएँगे और इसे प्रदूषित नहीं होने देंगे।
- हम नदियों को प्रदूषण मुक्त कराएंगे तथा छोटी नदियों को पुर्नजीवित करेंगे।
- हम प्रदूषण फैलाने वाली वस्तुओं का प्रयोग नहीं करेंगे।
- हम पशु पक्षियों की रक्षा करेंगे और उनके प्रति दयाभाव रखेंगे।
- हम ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग करेंगे।
- हम ज्यादा से ज्यादा प्रदूषण मुक्त वाहनों का प्रयोग करेंगे।
- हम वृक्षों की देखभाल करेंगे।
- हम भोज्य पदार्थो को सार्वजनिक स्थलों पर नहीं फेकेंगे।
- हम प्राकृतिक धरोहरों को बचाने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।
- हम जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए लोगों को जागरूक करेंगे।
- हम पृथ्वी के जल स्तर को बनाये रखने के लिए तालाब, पोखरे, कुओं के निर्माण के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।
- हम कागज का सदुपयोग करेंगे तथा इसको नष्ट नहीं करेंगे।
- हम जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, पादप संरक्षण के लिए लोगों में जागरुकता पैदा करेंगें ।
- हम लोगों को पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों के प्रति सचेत करेंगे।
- हम ऊसर भूमि पर लोगों को पौधारोपण के लिए प्रेरित करेंगे।

परामर्श समिति

मो0 खालिद
अरुणकान्त पाठक
पवन गौतम
वरुण पाण्डेय
विशाल तिवारी
विश्वजीत पाठक
उमेश विश्वकर्मा
संतोष सिंह
अरुण मौर्य

संचालन समिति

चाँदगी यादव
सत्यम प्रजापति
आशीष दूबे
चन्द्रेश
गोविंद
धर्मेंद्र
संदीप
कर्मवीर यादव
जुन्नूरैन अंसारी

संयोजक

डॉ. अजय गौतम
Mob. : 9415063341

RNI No. UPHIN/2010/37866

"हम देते हैं आपकी अभिव्यक्ति को एक मंच"

SPEECH PUBLICATIONS PVT. LTD.

Our Services

- ✓ Thesis typing
- ✓ Book Publication
- ✓ Research Guidance
- ✓ Journal Publication
- ✓ All services related to Publication
- ✓ Online & Offline Distributor
- ✓ Educational books
- ✓ Edited books
- ✓ Thesis as a book
- ✓ Proceeding as a book
- ✓ Lab manuals
- ✓ Novels Poetry
- ✓ Story & Biographies.

speechpublications@gmail.com
7985214744, 9415063341

स्वामी,मुद्रक, प्रकाशक अजय गौतम द्वारा प्रयाग प्रेस, गुरूटोला, आजमगढ़ से मुद्रित एवं मु० सीताराम, आजमगढ़ से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ अजय गौतम